शुभ हो नव वर्ष

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन पाक्षिक

बालहंस

जनवरी [प्रथम] '92 मूल्य: चार रुपए

चुलबुली

चित्रांकन: राजदीप

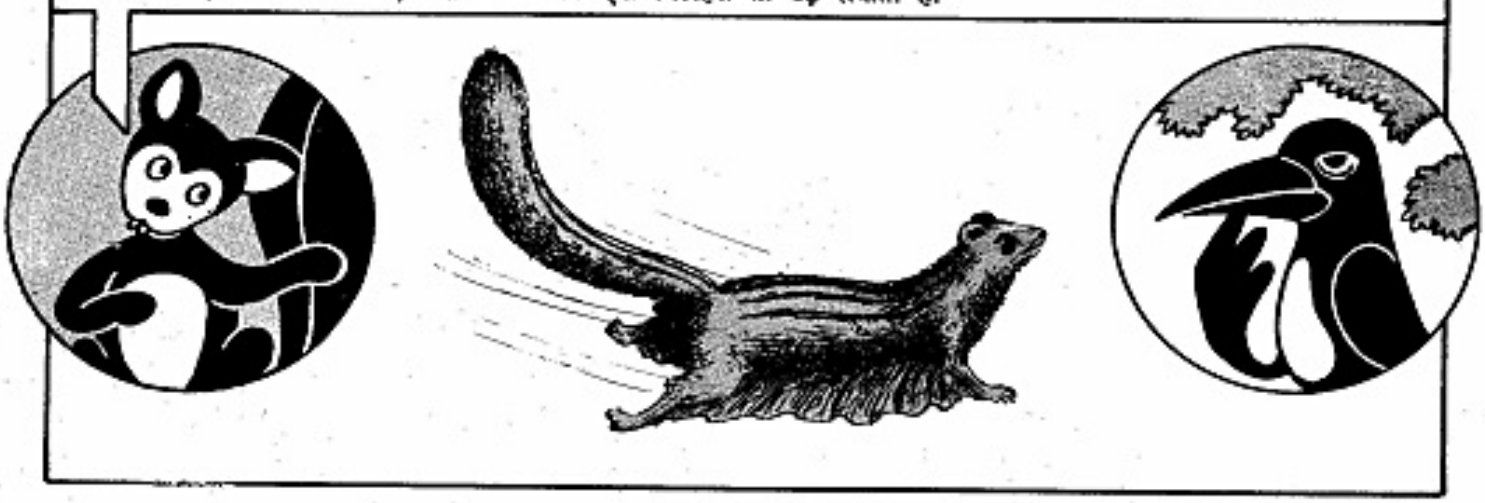

सम्पादकीय

जनवरी [प्रथम]' 92

नया वर्ष कुछ करने का वर्ष है, संकल्पों का वर्ष है।

प्रिय बच्चो,
जीवन में आगे बढ़ने के लिए
दो में से एक काम करना जरूरी है
या तो आगे बढ़ने के लिए
खुद रास्ता बनाओ
जैसे बहता हुआ पानी बनाता है
या फिर सही रास्ता खोजो और
आगे बढ़ते जाओ।
स्पष्ट है कि आगे बढ़ने के लिए
कुछ करना जरूरी है।
कुछ क्या?
प्रायः तुम बच्चे यही पूछते हो कि
हम क्या करें?
ऐसा प्रश्न मन में तभी उठता है बच्चो
जब हमें खुद पता नहीं होता कि
हम करना क्या चाहते हैं?
हम जीवन में बनना क्या चाहते हैं।
हमारी मंजिल क्या है?
हमें पहुंचना कहां है?
हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है?
तो- सबसे आवश्यक यह है कि हम
अपनी मंजिल तय करें।
अपना लक्ष्य निर्धारित करें।

इस वर्ष परीक्षा में प्रथम आना है
या योग्यता सूची में स्थान पाना है
यह लक्ष्य निर्धारित करने के बाद सोचो कि
मंजिल तक पहुंचने के लिए
रास्ता नया बनाना होगा
या किसी बने बनाए सही रास्ते को
खोजना होगा।
नदिया के बहते जल जैसे बन जाओ
ऊबड़-खाबड़ जगह आए या
पथरीली और कंटीली
चट्टानें आएं या खाई,
मंजिल तक पहुंचना ही लक्ष्य है।
थकान, निराशा, हार, इन हानिकारक
कांटों को पैरों तले कुचलते चलो,
संकल्प, इच्छाशक्ति, दृढ़ता और
साहस इनको अपनाए चलो, बस
न मंजिल दूर रहेगी न
लक्ष्य असंभव।
नए वर्ष के प्रथम सूर्य की
प्रथम किरण को साक्षी बनाकर
अपनी मंजिल, अपना लक्ष्य, अपना सपना
साकार करने के लिए
चल पड़ो।

तुम्हारा बालहंस

Sagar Rana & Shiv's Scan

बालहंस

जनवरी [प्रथम]' 92

वर्षः 6 अंकः 12

संपादकः अनंत कुशवाहा
सहयोगी संपादकः मनोहर वर्मा

वार्षिक मूल्यः 90 रुपए
अर्द्धवार्षिकः 45 रुपए
एक प्रति का मूल्यः 4 रुपए

सम्पादकीय कार्यालय
बालहंस [पाक्षिक]
11, अस्पताल मार्ग
जयपुर- 302001

विविध

1. अनोखा उपहार [कहानी] ☐ अल्पना गौड़ 8
2. बांध के चूहे [कहानी] ☐ गंगाप्रसाद 10
3. कविताएं ☐ सावित्री परमार/ डा. रामनिवास मानव/ उमाशंकर यादव/ राजा चौरसिया/ रामानुज त्रिपाठी/ किरन/ राजनारायण चौधरी 14
4. मन पर छाई काई [कहानी] ☐ निधि संदल 16
5. हार की जीत [कहानी] ☐ शकुन्तला वर्मा 18
6. रेडियो का आविष्कार [विज्ञान] ☐ कृष्ण सुथार 21
7. भारत में रेडियो प्रसारण ☐ उमेश चन्द्र चतुर्वेदी 22
8. बौरा बहन [कहानी] ☐ कौशल्या 26
9. क्या है फफूंद [विज्ञान] ☐ देवेन्द्र कुमार पाठक 31
10. बसेरा [कहानी] ☐ राजीव कश्यप 32
11. छगन चाचा [गप्प कथा] ☐ रेशमी मुखर्जी/ दीपाली फान्से 34
12. हारू मामा [बंगला कथा] ☐ विश्वनाथ मुखर्जी 36
13. पानी तेरे रूप अनेक [विज्ञान कथा] ☐ मनमोहिनी 38
14. भूकम्प से तबाही [संस्मरण] ☐ रमेश चन्द्र पंत 41
15. कलैंडर-1992 [नव वर्ष का उपहार] ☐ 42
16. भूकम्प से तबाही [संस्मरण] ☐ कु. मंगला 44
17. पश्चिमी राजस्थान में भूकम्प ☐ 'सुधि' 45
18. खीर का लेप [पुराण कथा] ☐ क्षिप्रा शंकर 48
19. भूकम्प से तबाही ☐ सुधीर सक्सेना 'सुधि' 52
20. फुटबाल का चस्का [हास्य कथा] ☐ उत्तम माथुर 53
21. भूकम्प से तबाही [संस्मरण] ☐ दिनेश जोशी/ संजय शर्मा 54
22. चीनू गिलहरी [पुरस्कृत कहानी] ☐ कुहू बैनर्जी 58
23. भूकम्प से तबाही ☐ आशा काण्डपाल/ देवेन्द्र कुमार 60
24. चतुर राजकुमार [कहानी] ☐ जी.पी. नागर 62
25. डरपोक भूत [कहानी] ☐ मृणालिनी श्रीवास्तव 64
26. चीनू गिलहरी [पुरस्कृत कहानियां] ☐ क्षमा केडिया/ प्रियंका खमेसरा 66
27. दूरदर्शन विज्ञापनः मेरे अनुभव ☐ रचना शर्मा/ मोहित वर्मा 68
28. टमक टूं [कहानी] ☐ मनोहर 74
29. शिशु गीत ☐ डा. श्रीप्रसाद 78
30. मोटू हाथी और कछुआ ☐ पिंटू भंडारी 81

■ चित्रकथाएं

1. चुलबुली 2
2. दूसरा चन्द्रमा 6
3. महाभारत 28
4. मूर्ख चोर 40
5. ठोलाराम 46
6. कूंकूं 83

■ स्थाई

1. सम्पादकीय 3
2. शब्द परिचय 50
3. खबर 61
4. प्रतियोगिता परिणाम 69
5. नई प्रतियोगिताएं 76
6. आतो पाती 80
7. नन्हीं कूंची 84

रंगीन चित्र
मुख पृष्ठः शुभतोष बागची
मध्य पृष्ठः राजिन्दर कुमार वधवा

विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता

कौन होगा विजेता/ उपविजेता

जैसा कि तुम्हें पता है, इस वर्ष फरवरी' 92 में पांचवीं विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड संयुक्त रूप से कर रहे हैं। इसमें सात पूर्व परिचित टीमों- भारत, पाकिस्तान, वेस्ट इण्डीज, इंगलैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और श्रीलंका के अलावा इस बार दक्षिण अफ्रीका की टीम भी हिस्सा ले रही है।

'बालहंस' इस बार तुम्हें इसी पांचवें विश्व कप के संभावित विजेता और उपविजेता को चुनने की प्रतियोगिता दे रहा है। तुम्हें पोस्टकार्ड पर केवल इतना ही स्पष्ट करना है कि उपरोक्त इन आठ टीमों में से कौन सी दो टीमों के बीच फाइनल खेला जाएगा और तुम्हारी दृष्टि में किस देश की टीम यह विश्व कप जीतने की संभावित दावेदार हो सकती है।

तुम एक से अधिक प्रविष्टि भी भेज सकते हो लेकिन हर प्रविष्टि के पोस्टकार्ड पर कूपन होना अनिवार्य है अन्यथा हम उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं करेंगे। और हां तुम्हारी प्रविष्टियां 25 जनवरी 92 तक बालहंस कार्यलय में पहुंच जानी चाहिए।

विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता
बालहंस कार्यालय
11, अस्पताल मार्ग
जयपुर- 302001

दूरदर्शन बच्चों के कार्यक्रम: बच्चों की नजर में

दूरदर्शन पर तुम बच्चों के लिए काफी कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। कई सीरियल भी दिखाए जाते हैं। हम चाहते हैं कि तुम बच्चे तुम्हारे अपने लिए दिखाए जाने वाले सीरियल्स पर अपनी प्रतिक्रिया भेजो। कापी साइज के दो पृष्ठों में [कागज के एक ओर ही लिखें] अपने मन की बात लिखो। कौन सा सीरियल तुम्हें कैसा लगता है।

अपनी प्रतिक्रिया के ऊपर पहले सीरियल का नाम, प्रसारण दिवस-तिथि, जिस दिन देखा तिथि अवश्य लिखें।

प्रकाशित विचारों पर नियमानुसार पारिश्रमिक दिया जाएगा।

बच्चे अपना पूरा नाम, पता अवश्य लिखें। अंत में दो पंक्तियों में यह भी अवश्य लिखें कि तुम्हें किस तरह के सीरियल [बच्चों के] अच्छे लगते हैं? ध्यान रहे केवल तुम बच्चों के लिए ही प्रसारित होने वाले कार्यक्रम व सीरियल के बारे में अपने विचार लिखना है।- सं.

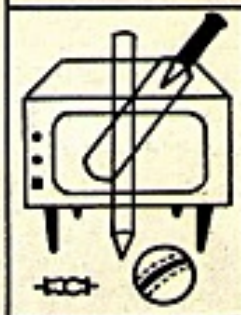

तुम्हारी नजर में....

एक दिवसीय क्रिकेट का श्रेष्ठतम खिलाड़ी कौन है? इस खिलाड़ी को तुम क्यों श्रेष्ठ मानते हो- अपनी बात दस पंक्तियों में लिख कर तुरंत भेजो। तुम्हारा उत्तर केवल पोस्टकार्ड पर आए और उस पोस्टकार्ड पर नीचे दिया हुआ कूपन अवश्य चिपकाना। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 15 जनवरी 1992

तुम्हारी नजर में
संपादक: बालहंस [पाक्षिक]
11-अस्पताल मार्ग, जयपुर 302001

विश्व कप टीम का चयन

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की चयन समिति ने विश्व कप में खेलने के लिए भारतीय टीम का चयन किया। कई श्रेष्ठ खिलाड़ियों का चयन इस टीम में नहीं हो सका।

अगर तुम्हे इस टीम का चुनाव करने का अधिकार दे दिया जाता तो तुम किन बारह खिलाड़ियों का चयन करते। कप्तान, उपकप्तान व विकेट कीपर का उल्लेख भी करें। सोच समझ कर एक ऐसी टीम का चयन करो। देखें तुम्हें भारतीय खिलाड़ियों के बारे में कितनी जानकारी है।

सूची पोस्टकार्ड पर ही लिख कर भेजनी है। बस केवल बारह खिलाड़ियों के नाम। तुम्हारा अपना पूरा पता भी लिखना। पोस्टकार्ड पर नीचे दिया कूपन लगाना नहीं भूलना। अंतिम तिथि: 15 जनवरी 1992

विश्व कप टीम का चयन प्रति.
बालहंस [पाक्षिक]
11 अस्पताल मार्ग, जयपुर

6 बालहंस, जनवरी 1, 92

Sagar Rana & Shiv's Scan

क्रमश:

अनोखा उपहार

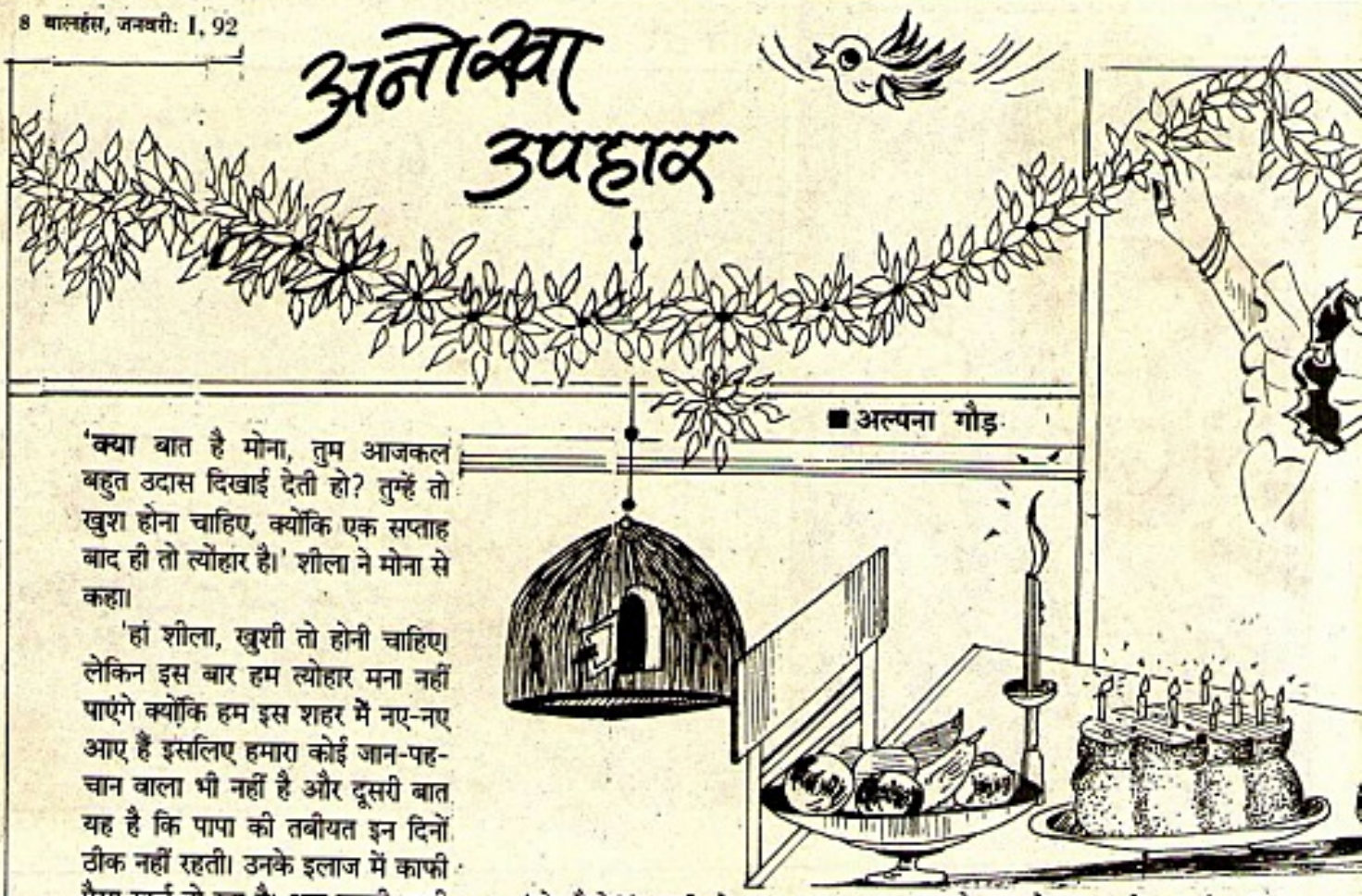

■ अल्पना गौड़

'क्या बात है मोना, तुम आजकल बहुत उदास दिखाई देती हो? तुम्हें तो खुश होना चाहिए, क्योंकि एक सप्ताह बाद ही तो त्योहार है।' शीला ने मोना से कहा।

'हां शीला, खुशी तो होनी चाहिए लेकिन इस बार हम त्योहार मना नहीं पाएंगे क्योंकि हम इस शहर में नए-नए आए हैं इसलिए हमारा कोई जान-पहचान वाला भी नहीं है और दूसरी बात यह है कि पापा की तबीयत इन दिनों ठीक नहीं रहती। उनके इलाज में काफी पैसा खर्च हो रहा है। अब हमारी इतनी सामर्थ्य नहीं है कि हम त्योहार मनाने के लिए पैसे खर्च कर सकें। फिर बिना धूम धड़ाके के तो मजा ही नहीं आता है। अब तुम ही बताओ, मैं दुःखी न होऊं तो क्या करूं?' मोना ने दुःखी मन से कहा।

'अच्छा, अब चलती हूं।' शीला ने हाथ हिलाकर मोना से विदा लेते हुए कहा।

अगले दिन स्कूल में मोना के आने से पहले शीला ने अपने ग्रुप की सभी लड़कियों को पिछले दिन मोना से हुई बातचीत के विषय में बताया। विभा बोली, 'यह तो बहुत बुरा हुआ शीला। अब क्या होगा, उसका प्रिय त्योहार सूना ही बीतेगा।'

शीला ने कुछ सोचते हुए कहा, 'सुनो, मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है। यदि तुम सब साथ दो तो मोना, त्योहार हमारे साथ खूब धूमधाम से मना सकती है।

'वो कैसे?' तन्वी ने पूछा।

यह सब यहां नहीं बता सकती क्योंकि मोना आने ही वाली है। तुम सब कल सुबह दस बजे मेरे घर आ जाओ। सारी योजना पर विचार करके हम एक साथ स्कूल आ जाएंगे।' शीला ने कहा।

अगले दिन सुबह दस बजे सभी सहेलियां शीला के घर एकत्र हुईं। शीला ने कहा, 'हमारे ग्रुप में मोना को मिलाकर बारह लड़कियां हैं। मैंने सोचा है कि हम मोना को कुछ नहीं बताएं और हम सभी मिलकर क्रिसमस मनाने का इंतजाम करें। कैसे, क्या करना है, हमें इस पर विचार करना है।'

'हां, हां, बिलकुल ठीक है।' सभी ने कहा, 'हम तुम्हारी बात से सहमत हैं।

'अच्छा, तो पहले यह बताओ कि दीपावली के कुछ पटाखे तुम लोगों के पास बचे हैं या खत्म हो गए?' शीला ने पूछा।

'मेरे पास हैं।' मीनू बोली, 'मेरे पास बहुत सारे पटाखे रखे हैं। दीपावली पर पटाखे चलाते समय मेरा भाई सुमित अपना हाथ जला बैठा था, तो पापा ने सारे पटाखे रखवा दिए और कहा कि अब ये पटाखे अगली दीपावली पर छुड़ाना।'

'कुछ पटाखे मेरे पास भी हैं और विभा के पास भी।' पायल ने कहा।

'तब ठीक है। पटाखों का इन्तजाम तो हो गया। अब बारी है जेब खर्च की। 75 रुपए मेरी गुल्लक में हैं। अब यदि कुछ रुपए और हो जाएं तो काम आसान हो जाएगा।' शीला ने कहा।

सभी लड़कियों ने थोड़े-थोड़े रुपए मिलाए और सभी का जेब खर्च मिलाकर तीन सौ रुपयों की व्यवस्था हो गई।

शीला ने कहा, 'तीन सौ रुपए हमारी योजना को सफल बनाने के लिए पर्याप्त हैं। लेकिन क्रिसमस का मुख्य आकर्षण तो केक होता है न। अब इसकी समस्या है, क्योंकि यदि हम बाजार से खरीदते हैं तो पैसे कम पड़

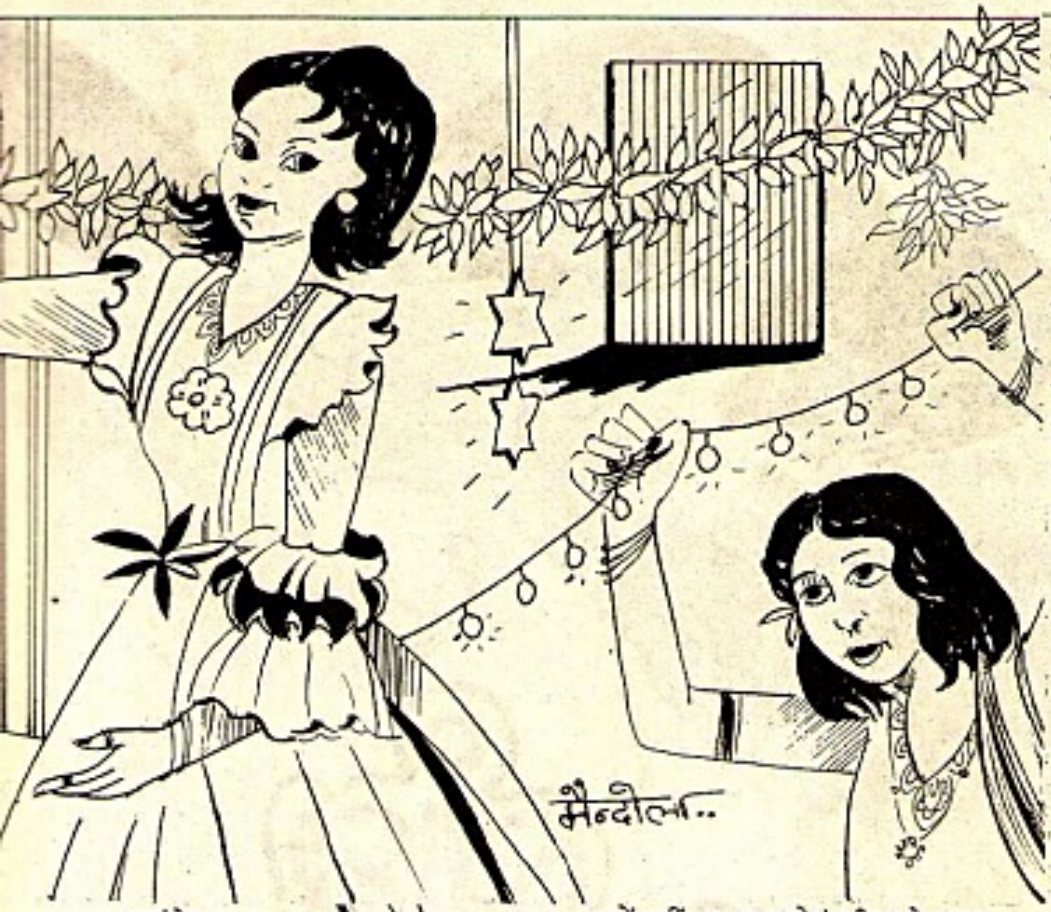

जाएंगे।

'अरे, तू चिंता मत कर शीला। मैं मम्मी से कह दूंगी। वे घर में ही केक बना देंगी। चलो, यह समस्या भी हल हो गई।' नीरू ने चहकते हुए कहा।

'ठीक है। अब मेरी बात सुनो। क्रिसमस पर मोना यदि नए कपड़े नहीं पहनेगी तो अच्छा नहीं लगेगा।

इन रुपयों में से एक अच्छी पोशाक तैयार की जा सकती है। मुझे सिलाई आती है। इसलिए मैं उसके लिए सलवार-कमीज सिल दूंगी इससे दर्जी को देने वाले पैसे बच जाएंगे। कुछ सामान सजावट के लिए भी खरीदना है। मोना के घर को सजाना भी तो है। और मिठाइयां भी खरीदनी पड़ेंगी। एक बात और कहना चाहूंगी कि सब लड़कियां अपने घर में बड़ों की इजाजत अवश्य ले लें। शीला ने कहा। सबने स्वीकृति की मुद्रा में सिर हिला दिया।

'एक बात मैं कहूं शीला?' बसंती जो अब तक चुप थी, बोली। 'हां, हां, क्यों नहीं, जरूर कहो।' शीला ने कहा।

'क्यों न हम कुछ खेल भी रखें जिससे क्रिसमस मनाने का मजा दोगुना हो जाए। बसंती ने सुझाव दिया।

'अरे क्यों नहीं, यह तो बहुत अच्छा विचार है।' मनजीत ने कहा।

'तो ठीक है, हम आज से ही तैयारियां शुरू कर देते हैं। लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि मोना को कुछ पता नहीं चलना चाहिए।' किट्टी ने जोर से कहा।

'अब चलो भी, स्कूल का समय हो गया है। देर हो गई तो प्रार्थना सभा में सजा मिल जाएगी।' शीला ने कहा और सभी सहेलियां चल दी।

इस प्रकार दिन बीतते गए। आखिर वो दिन आ गया जिसका सभी को बेसब्री से इन्तजार था। स्कूल में बड़े दिन की छुट्टी थी। मोना अपने मम्मी-पापा के साथ प्रार्थना करने के लिए गिरजाघर गई और जैसे-जैसे संध्या का समय आता जा रहा था, उसका मन उदास होता जा रहा था। शाम के लगभग पांच बजे थे कि किट्टी, मोना के घर गई और उससे बोली, 'मोना, क्या तुम थोड़ी देर के लिए मेरे घर चल सकती हो?'

'क्यों, क्या बात है किट्टी?' मोना ने पूछा।

'कोई खास बात नहीं है। मम्मी-पापा तो जॉन अंकल के यहां गए हैं और मैं घर पर अकेली हूं। घर अकेला भी तो नहीं छोड़ सकती। इसलिए तुम मेरे साथ चलो।' किट्टी ने अनुरोध के स्वर में कहा।

'मोना बेटे, चली जाओ। किट्टी इतना कह रही है तो तुम्हें जाना ही चाहिए।' मोना की मम्मी ने कहा।

'अच्छा मम्मी, जैसा आप कहें।' कहकर मोना किट्टी के साथ चली गई।

उनके जाने के थोड़ी देर बाद ही सभी सहेलियां मोना के घर आ गई। मोना की मम्मी सभी को जानती थीं। सबने मोना के मम्मी-पापा को क्रिसमस की शुभकामनाएं दीं और घर को सजाने में लग गई। मोना की मम्मी के पूछने पर कि तुम ये सब क्या कर रही हो तो शीला बोली, 'आण्टी, प्लीज आप हमें कर लेने दीजिए। बाद में हम आपको सब कुछ बता देंगी।'

उन्होंने घर को रंगीन गुब्बारे, क्रिसमस ट्री आदि से बहुत ही अच्छे तरीके से सजाया। दीपक जलाकर घर के बाहर रोशनी की। एक टेबिल को कमरे के बीच में रखकर उसे सजाया और केक, मिठाइयां आदि उस पर सजाकर रख दीं।

मोना के मम्मी-पापा सब कुछ समझ गए। उनकी आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े। थोड़ी देर बाद ही किट्टी मोना को लेकर वापस आ गई।

मोना ने जब सारी सहेलियों को अपने घर देखा तो उसने आश्चर्य मिश्रित स्वर में चिल्लाते हुए कहा, 'अरे, तुम

शेष पृष्ठ 13 पर

Sagar Rana & Shiv's Scan
www.sscomicsheaven.blogspot.in

बांधू के चूहे

कहानी

दूर-दूर तक का क्षेत्र हरा-भरा था। फलदार पेड़ों की अधिकता थी। कई पेड़ नीम, पीपल, बरगद के भी थे। पीपल और बरगद के पेड़ों के नीचे कभी कभी धूप, लोबान, चंदन के बुरादे की सुगंध फैलती थी। सजी-धजी ग्रामीण महिलाएं पेड़ के तने के साथ रंगीन धागा लपेटती थीं और मनौतियां मानती थीं। छोटे बच्चे उछल-कूद करते थे। इस पूरे क्षेत्र को सिंचित व हरा-भरा बनाने में उस सर्पिल नाले का पूरा हाथ था जो निकट के पहाड़ों की भूल-भुलैया से बहकर आता था। नाले में लगभग वर्षभर पानी भरा रहता था। बरसात के दिनों में वह मुटिया जाता था पर ऐसा नहीं कि तबाही लाए। नाले के दोनों ओर थोड़ी ऊंचाई पर मिट्टी की दीवारों वाले घर व फूस की झोपड़ियां बनी थीं। पहाड़ी की तलहटी तक, नाले के दोनों ओर, जहां तक दृष्टि जाती थी, खेत लहराते थे। जब फसलें खेत में होती तो लगता कई रंग की चादरें बिछा दी गई हैं। फसल कटने पर या खेत खाली रहने पर उन पर किसान कितनी ही लकीरें खींच देते और घटाएं घुमड़ने की प्रतीक्षा करते।

तलहटी के इस गांव, जो नाले के दोनों ओर बसा था, का नाम कन्था था। अपने में मगन खुशहाल गांव था। बाहर से सम्पर्क जोड़ने के लिए एक कच्चा रास्ता था जिस पर बैलगाड़ियां चलती थीं। ढोरों के गले की घंटियां

• गंगा प्रसाद

टुनटुनाती थीं। लोकगीतों के स्वर तैरते थे। बच्चों की किलकारियां गूंजती थीं।

जहां आदमी रहते हैं वहां चूहे भी अपना डेरा अवश्य जमा लेते हैं। गांव में रहने वाले चूहे छोटी जाति के थे। उनके दांत छोटे लेकिन पैने होते थे। वे दीवाल में छेद कर बिल बना लेते थे। अनाज के कोठार में सुरंग खोदने का प्रयास करते थे। गिरा-पड़ा, बचा-खुचा भोजन चट करने की ताक में रहते या कपड़ों को कुतर कर अपने दांतों को धार लगाते थे। उनकी दुश्मन बिल्ली थी जो उन पर झपट पड़ने को तैयार रहती थी। उससे बचकर, अपनी संख्या बढ़ाकर व मृत्यु के जबड़े में घटकर वे रह रहे थे।

इनसे अलग खेत के चूहे थे आकार में बड़े, खुरदुरे, अभिमानी। उन्हें गांव में जाने का शौक नहीं था। खेत में होने वाली फसलों से वे अपना हिस्सा ले लेते थे। वे खेत में ही बिल बनाकर रहते थे। कुनबा बड़ा होने पर बिलों की संख्या बढ़ जाती थी। उनका शत्रु था सांप। वही उन्हें निगलने को घात लगाए रहता था या उनके बनाए बिलों में कब्जा जमा लेता था। मर-खप कर जीते हुए, अपनी अगली पीढ़ी को किसी तरह बचाते हुए खेत के चूहे रह रहे थे। इनमें ही एक परिवार था बंगड़ चूहे का। पत्नी थी, भगवान की दया से बारह बच्चे थे। बच्चे बाप से बढ़कर अकड़ू खां थे। बंगड़ की पत्नी अपने को किसी महारानी से कम नहीं समझती थी। शुरू-शुरू में यही सब था।

परिवर्तन सब जगह होता है। कन्था गांव में भी होना ही था। पहले तो गांव में थोड़ी हलचल हुई फिर धूल उड़ाती, डगमग होती एक पुरानी जीप गांव में दाखिल हुई। बंगड़ और उसके परिवार ने कच्चे रास्ते पर बैलगाड़ी चलते हुए देखा था। जीप को वे उचक उचक कर आश्चर्य से देखते रहे। कैसी तेज चलती है वह पीं पीं। गांव में कोई ऊंची आवाज में भाषण देता रहा। बंगड़ के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। आदमी और आदमी की बातें दोनों अबूझ हैं। धूल भरे रास्ते पर कई बार जीपें आई गईं।

एक दिन बंगड़, उसकी पत्नी और बेटों ने देखा कि गांव तक जाने वाले रास्ते पर रोड़ी पत्थर डालकर उसे पक्का बनाया जा रहा है। बंगड़ ने खुशी से उछलते हुए, अपनी पतली पूंछ हवा में फटकारते हुए बताया कि उसके गांव में पक्की सड़क बन रही है। तरक्की का पहला कदम। वह रहता तो खेत में था पर कन्था गांव को अपना मानता था।

कन्था गांव में मिट्टी की दीवारों वाले कई घर ईंट- पत्थरों के पक्के मकान बन गए। उनकी ऊंचाई बढ़ गई। अब एकरसता नहीं रही। अमीरी-गरीबी साफ झलकने लगी। बंगड़ की समझ में नहीं आता था कि तारीफ करे या चिन्ताग्रस्त हो। कई अपरिचित टोपधारी, खेतों से होकर नाले के पास घूम-फिर गए। वे नाप-जोख करने वाले सामान भी लिए थे। बंगड़ का एक बेटा

नाले के पास दुबक गया था। उसी ने आकर बताया कि नाले पर बांध बनाने का विचार हो रहा है- "बांध क्या होता है बापू?"

बंगड़ ने बांध देखा तो नहीं था पर सुना जरूर था।

"नाले का पानी रोकेंगे। मिट्टी डालकर ऊंची दीवार बना देंगे बस।"

"इससे तो पानी रुक जाएगा। नाले में पानी नहीं रहेगा तो फसलों को पानी कैसे मिलेगा?"

बंगड़ ने कहा- "मुझे पूरी जानकारी नहीं है। तुममें से हर कोई ध्यान रखे और मुझे बताता रहे कि क्या-क्या हो रहा है।"

नाले और खेतों की नाप हो गई। गांव के कई लोग पहले खाली हाथों चक्कर लगा गए फिर उनके हाथों में फावड़े, टोकरियां नजर आने लगी। कुछ नए मजदूर भी दिखाई पड़े। इस समय खेत खाली थे। करोंदे, नीबू के झाड़, अमरूद, पपीते के पेड़ सपाट धरती में जगह-जगह बिखरे थे। उनकी आड़ में उचक- उचक कर बंगड़ व उसका परिवार कौतूहल से देख रहा था। मिट्टी की दीवार ऊंची होती जा रही थी। फावड़े, टोकरियां संभाले स्त्री-पुरुष नाले के पास की मिट्टी खोदकर बांध बनाने में लगे थे। आदमी की ऊंचाई की तीन गुनी ऊंचाई तक मिट्टी का बांध बन गया। नाले का पानी रोक दिया गया।

कई दिन की प्रतीक्षा के बाद बंगड़ अपने परिवार के साथ डरता- डरता बांध के पास पहुंचा। उसके आगे एक पहाड़ सा खड़ा हो गया था- मानव निर्मित पहाड़।

"हम ऊपर चलकर देखें तो सही, इस बांध से कैसा दिखाई दे रहा है।" छोटे चूहे ने उतावली से कहा।

बंगड़ का ध्यान सूखे नाले की ओर था। उसकी उम्र जैसे ठहर गई थी। अब तक तो उसे क्रूर काल का ग्रास बन जाना चाहिए था पर न जाने कौन सी

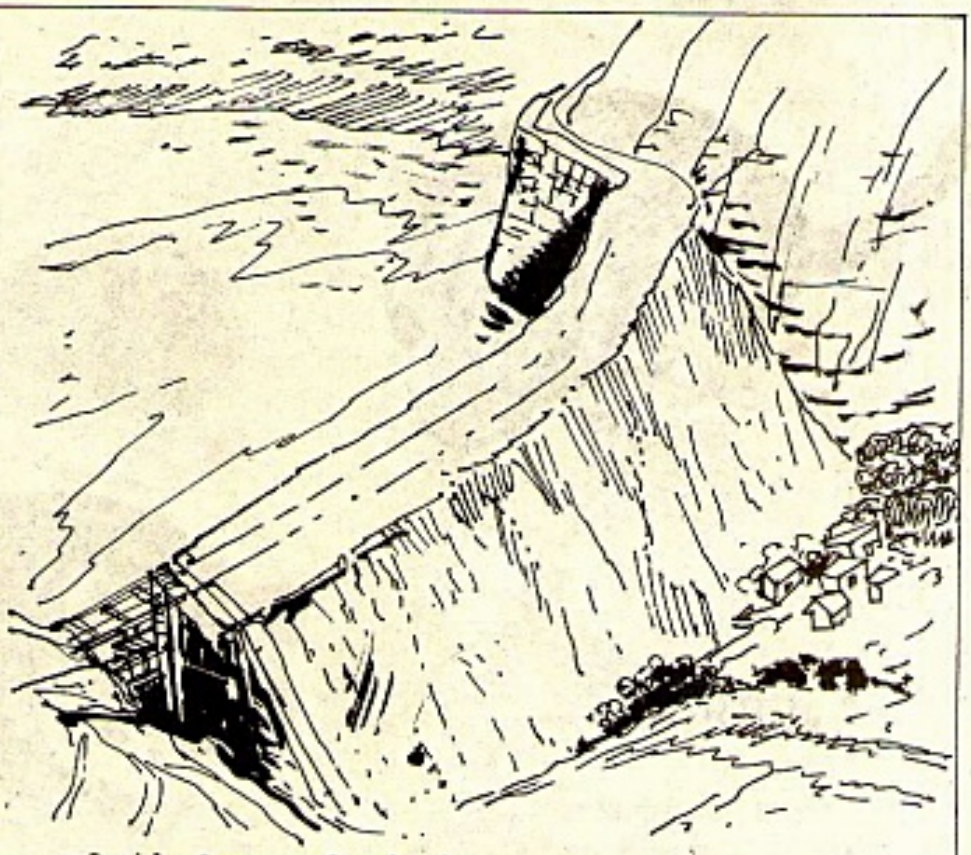

शक्ति उसे सक्रिय बनाए थी। सूखे नाले की तरह उसका मन सूखा जा रहा था। पहले तो एक ओर वह पहाड़ियों के लुभावने दृश्य देख लेता था, दूसरी ओर खेतों के फैले विस्तार को। खेत और पहाड़ों के बीच में अब बांध की ऊंची दीवार आ गई थी।

अपने परिवार के साथ बंगड़ बांध पर चढ़ा। कहीं-कहीं मिट्टी भुरभुरी थी। वह कलामुंडी खाता नीचे आ गया। फिर पांव और पूंछ जमा कर वह ऊपर चढ़ने लगा। किसी तरह उसके बच्चे व पत्नी भी बांध के ऊपर पहुंच गए।

"अरे! नाले के पानी को देखो। यह अब तालाब बनने लगा है।"

"हां, नाले के दोनो ओर के खेत पानी में डूब गए हैं। उनमें अब खेती कैसे हो पाएगी?"

"बाबा, मैंने सुना है, बांध के एक ओर से वहां दूसरा नाला निकलेगा। उसे नहर कहते हैं। उससे सिंचाई होगी।"

"एक नाला बन्द कर दूसरा नाला बनाने से क्या लाभ?"

"बांध के एक ओर बहुत बड़ा तालाब बन जाएगा। इससे नहर में पूरे वर्ष तक पानी आता रहेगा। यह नहीं कि गर्मी में सूख जाए।"

बंगड़ की स्त्री ने कहा- "मैं कभी कभी उस तालाब को देखना चाहूंगी।"

बंगड़ को खेतों की चिन्ता थी। "मुझे पकी फसलों, झूमती बालियों को देखते रहने की इच्छा है। हम बांध में थोड़ी ऊंचाई पर बिल बना लेंगे। वहां से दूर तक खेतों पर नजर डाल सकेंगे। हमारा दुश्मन सांप भी हमारे बिल की ओर आएगा तो हमें पहले ही नजर आ जाएगा।"

छुटके चूहे ने उछलते हुए कहा- "क्यों न हम अभी से बिल बनाना शुरू कर दें।"

अन्य बेटों ने कहा- "हम अलग अलग बिल बनाएंगे। एक ही बिल में रहते काफी समय हो गया है। जब सुविधा है तो अलग- अलग निवास स्थान क्यों न चुनें।"

बांध में चूहों ने कई बिल बना लिए। बंगड़ बिल के अन्दर से ही दूर-दूर तक के खेतों पर नजर रखने लगा। बंगड़ की स्त्री थोड़ी उधेड़बुन में पड़ी थी। सोच रही थी कि कहूं या न नहूं। हिम्मत बटोर कर बोली- "सुनो जी, यह नहीं हो सकता कि तुम्हारी तरह मैं भी बिल के अन्दर से ही बांध के तालाब को देखती रहूं। अगर बिल का एक छेद तालाब की तरफ भी हो तो कैसा रहे?"

"हो सकता है। ऐसा बिल बनाने में क्या मुश्किल है।"

अपनी मां के अनुसार चूहों ने बांध के आरपार बिल बना दिया। उन्हें यह तरीका पसंद आया तो उन्होंने अपने लिए भी आरपार बिल खोद लिए।

चूहों के परिवार बढ़ते रहे। बंगड़ के बेटों ने अपने घर बसा लिए। उन्होंने बांध के आरपार कई और छेद कर लिए। बंगड़ की बहुएं भी तो फसल और तालाब का दृश्य बिल में से ही देखना चाहती थीं।

तालाब एक बड़ी झील में बदल गया था। बांध से एक नहर निकाली गई थी इससे इस ओर की फसलों को सींचने की सुविधा हो गई थी। बंगड़ के विशाल परिवार को अनाज का टोटा नहीं रहा। बांध में बिलों की संख्या बढ़ती रही और झील का जलस्तर बढ़ता रहा। कन्था गांव बांध के नीचे तक फैल गया था। जैसे वह बांध की छाया में खिसक आया हो। गांव के छोटे चूहे बांध के चूहों से मिलते तो दोनों दल खुशी से अपनी आप बीती सुनाते। खेत के चूहे अब बांध के चूहे कहलाने लगे थे। बंगड़ ज्यादा बूढ़ा हो गया था। पता नहीं किस तरह अब भी जिए जा रहा था। उसकी कोई सुनता नहीं था। झील की बढ़ती ऊंचाई और उस पर लहराता पानी कभी कभी उसे एक दानव सा लगता था। रात के अंधेरे में घिसटता, रेंगता वह बांध के दूसरी ओर पहुंचता तो झील का पानी और स्याह लगता। उसमें प्रतिबिम्बित तारे उसे झील की कुटिल आंखें लगती थीं जो उसे निगलने को लालायित लगतीं। बंगड़ ने एक- दो बार अपने बेटों से कहा भी कि अब यह स्थान छोड़कर कहीं और बसने चला जाए पर बेटों ने हंसी में उड़ा दिया। 'बुड्ढा सठिया गया है। भला इतनी अच्छी जगह छोड़कर कहीं और जाना ठीक रहेगा।'

वर्षा का मौसम शुरू हो गया था। उस रात शाम से ही काले काले बादल घिरने लगे थे। सूरज डूबने के कुछ देर बाद ही मोटी-मोटी बूंदें गिरने लगी थीं। लगता था आकाश छलनी हो और उसके ऊपर कोई सागर हो जिसका पानी छनकर तेजी से नीचे आ रहा हो। बांध से फसल की ओर का भाग जैसे धुंध के आवरण में घिर गया था। या बंगड़ की बूढ़ी आंखों में जाले पड़ गए थे। वह बरसते पानी का हर-हर सुन पा रहा था। उसे फसलें नहीं दिखाई दे रही थीं। झील की ओर के बिल में जाने का रास्ता ठसाठस भरा था। बहू, बेटे, पोते सब झील के निकट आते जलस्तर और उस पर पड़ती बूंदों का नर्तन देख रहे थे। जब निचले स्तर पर किसी बिल में पानी भरने लगता था तो वे खुशी से चीं-चीं करते ऊपर वाले बिलों में भाग जाते थे। चूहों को पता नहीं था उनके बनाए बिलों से बांध का पानी तेजी से रिस रहा था।

उनके बनाए छेद बड़े होते जा रहे थे और तब वह अनहोनी हुई जिसकी आशंका बंगड़ को होने लगी थी। मिट्टी का वह बांध भरभराकर ढहने लगा। झील का दानव जैसे अट्टहास कर उठा अजगर जैसी उसकी अंगुलियों ने बांध को छितरा दिया। बंगड़, उसका परिवार कंथा गांव, फसलें सब देखते- देखते बह गए। पहले एक नाला था, फसलें थीं गांव था, खुशहाली थी। अब कुछ नहीं है। □

पृष्ठ 9 का शेष

सब यहां और घर की कायापलट किसने की? इतनी सारी मिठाई और केक कहां से आए? ये दीपक, ये घर की सजावट, ये पटाखे... मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है मम्मी, बताओ न, यह सब क्या है?'

'हम अभी बताते हैं। पहले तुम ये कपड़े पहनकर दिखाओ।' शीला ने कहा।

'अरे, इतनी सुन्दर पोशाक... अभी पहनकर आती हूं।' मोना ने चहकते हुए कहा।

जब मोना तैयार होकर आई तो सभी उसे देखते रह गए। वह सचमुच बहुत सुन्दर लग रही थी। शीला ने मोना से कहा, 'हमने सोचा कि इस बार हम तुम्हें क्रिसमस का उपहार देकर आश्चर्य में डाल देंगे। यह सब इंतजाम हम सबने मिलकर किया है। क्यों, तुम्हें पसंद आया न हमारी तरफ से दिया हुआ तोहफा?'

'बहुत पसंद आया शीला, बहुत! सचमुच तुम सबने मुझे जो उपहार दिया है, मैं उसे जिंदगी भर नहीं भूल सकती। इतना अच्छा क्रिसमस डे तो हमने कभी नहीं मनाया।' कहते-कहते मोना का गल भर आया।

'अच्छा... अच्छा, चलो, अब कुछ खाएं-पीएं, पटाखे चलाएं।' तन्वी उछलते हुए बोली।

इसके बाद सबने खूब पटाखे चलाए, मिठाई केक इत्यादि खाए और खेल खेले।

दीपकों की रोशनी से झिलमिलाता हुआ मोना का घर एकता का संदेश दे रहा था। सभी सहेलियों ने प्रार्थना में हिस्सा लिया। उन सबकी सद्भावना और प्यार का संगम था- वह घर।

सभी सहेलियों ने प्रार्थना के अंत में कहा, 'हे ईश्वर, इस घर और छोटे से परिवार के सब दुख दूर कर इसे खुशियों से भर दो।' □

आया है नववर्ष

मलयानिल सा
सौरभ लेकर
आया है नववर्ष।
सज्जित दीवारों पर जैसे
छा जाए मकड़ी का जाल।
खट्टी-मीठी यादें देकर
चला गया यों बीता साल।
हरी-भरी सी
छाया लेकर
आया है नववर्ष।
भूतकाल की अब क्या चर्चा
वर्तमान से प्यार करें।
तेरा-मेरा स्वार्थ भूलकर
नेहभरा व्यवहार करें।
शुभ-संदेश,
ऊर्जा लेकर
आया है नववर्ष।
परिवर्तन का नाम जागरण
प्रकृति यहां पर हंसती है।
आशा के दीपक लेकर
सपनों की दुनिया बसती है।
आगत का
मंगल सुख लेकर
आया है नववर्ष।□

■ सावित्री परमार

धूप

सर्दी का जब मौसम आता
मन की कली खिलाती धूप।
मम्मी जैसी प्यारी लगती
टाफी जैसी भाती धूप।
बैठ सूर्य किरणों के रथ पर
स्वर्ण परी सी आती धूप।
घूंघट जब करती कोहरे का
दुल्हन की शरमाती धूप।
सुबह-सुबह शबनम की बूंदें
मोती सा चमकाती धूप।
छत से आंगन में चिड़िया सी
फुदक-फुदक कर आती धूप।
कभी कटखनी थी, हम पर
अब अपनी जान लुटाती धूप।□

■ उमाशंकर यादव

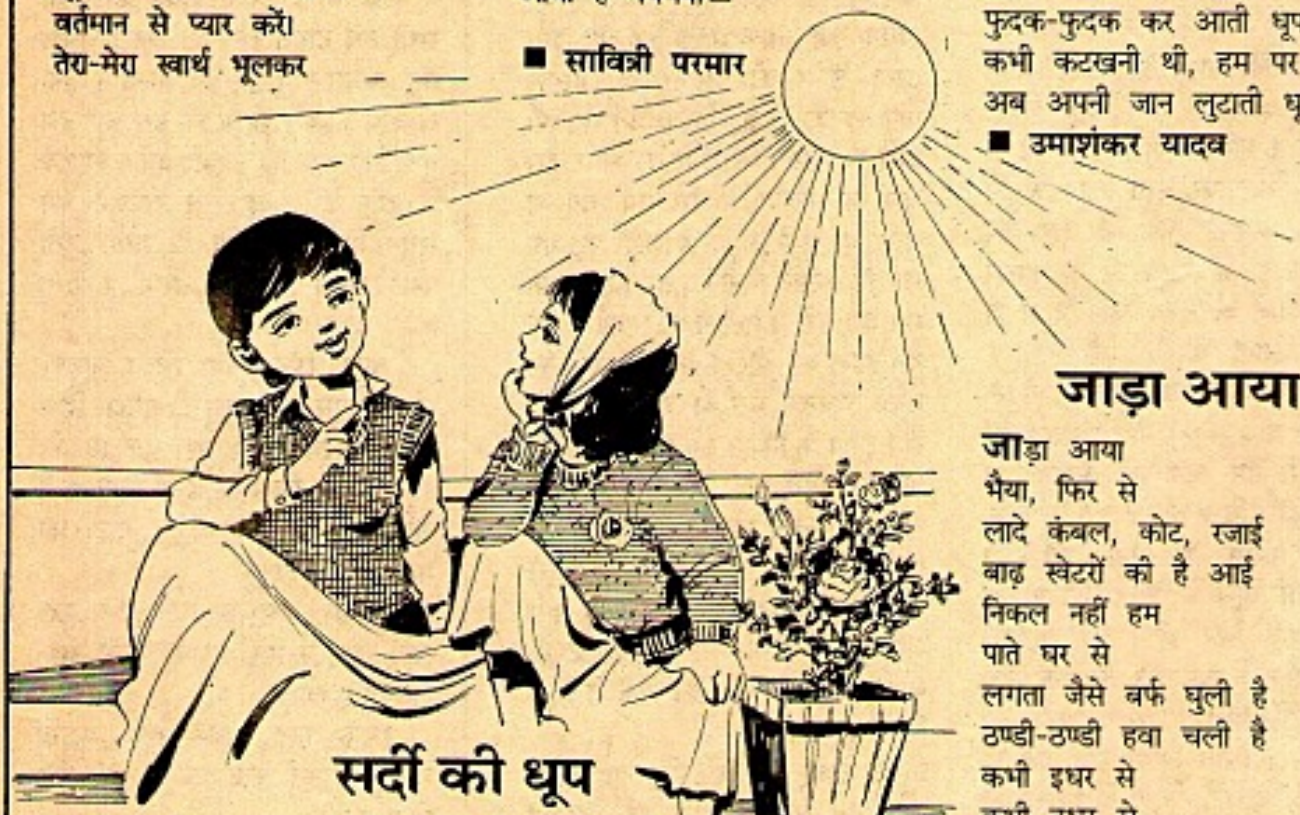

सर्दी की धूप

सर्दी की उजली
गुनगुनी धानी धूप।
मां के आंचल-सी
लगती सुहानी धूप।
कुरमुरी- कुरमुरी
खाता मूंगफली-सी।
लगती है नमकीन
पूड़ी- पानी धूप।
मीठी- मनभाती
निंदिरा-सी, लोरी-सी।
नानी के मुख से
सुनी कहानी धूप।
जीवन हो सबका
उजला जैसे दरपन।
खुश हो कहती है
सबको सयानी धूप।□

■ डॉ. रामनिवास 'मानव'

जाड़ा आया

जाड़ा आया
भैया, फिर से
लादे कंबल, कोट, रजाई
बाढ़ स्वेटरों की है आई
निकल नहीं हम
पाते घर से
लगता जैसे बर्फ घुली है
ठण्डी-ठण्डी हवा चली है
कभी इधर से
कभी उधर से
रात और दिन जले अंगीठी
धूप बहुत लगती है मीठी
कभी-कभी तो
कुहरा बरसे
नानी करती दैया-दैया
ठिठुर रही रामू की गैया
चला गांव को
ऊन शहर से।□

■ राजा चौरसिया

प्यारी धूप

भरती है किलकारी धूप।
खिलती न्यारी-न्यारी धूप।
जाड़े का मौसम आया है
पास हमारे आ री धूप।
किरणों के रथ पर चढ़कर के
करती रोज सवारी धूप।
मैदानों पर रोब जमाती
पर पेड़ों से हारी धूप।
छा जाती जब घनी बदरिया
छुप जाती बेचारी धूप।
सारे जग को सुख देती है
लगती सबको प्यारी धूप।□

■ किरन

जाड़े की धूप

बड़े भोर
जब मेरे आंगन
आती है जाड़े की धूप।
बनकर जैसे
सखी-सहेली,
करने लगती
है अठखेली।
थर-थर
कांप रहे बच्चों को
भाती है जाड़े की धूप।
थोड़ा सा दिन
बढ़ जाता है,
सूरज ऊपर
चढ़ जाता है
मीठी- मीठी-सी
गरमाहट
लगती है जाड़े की धूप।
जब संध्या
ढलने लगती है,
तेज हवा चलने लगती है
सबको
रह रह कर कितना
ललचाती है जाड़े की धूप।□

■रामानुज त्रिपाठी

सरदी के दिन

आए फिर
सरदी के दिन!
जल्दी छेड़
धूप का सुर
दिन पंछी-सा
जाता उड़।
रात काटना
लगे कठिन!
कैसा ये
कर डाला है-
ओस कुहासा
पाला है।
आसमान
लग रहा मलिन!
बर्फ हुआ
भैया पानी
छूते मरती
है नानी।

कैसे रहें
नहाए बिन?
ढाती है
हर तरफ कहर
गुस्साई-सी
शीत लहर।
तन में हवा
गड़ाए पिन!

पड़े- पड़े
काका-काकी
मांगे हाय!
गरम कॉफी।
जले अंगीठी
लो, पल-छिन!□

■ राजनारायण चौधरी

कहानी

मन पर छाई काई

जूही ने स्कूल से आते ही अपने बैग को पलंग पर पटका। जूते खोलकर लापरवाही से अलमारी के नीचे धकेले। "मम्मी भूख लगी है। जल्दी खाना दो।" चीख कर बोली। मम्मी रसोई में थी।

मम्मी ने आते ही कहा- 'मुझे पता है बेटे तुम्हारे आने का वक्त। खाना तैयार है, लेकिन खाना मांगने का यह ढंग आज से पहले तो नहीं था। जूही, मैं कुछ दिन से तुम्हारे व्यवहार में परिवर्तन देख रही हूं। पहले तुम स्कूल से आती थीं तो बैग को सुव्यवस्थित ढंग से रखती थीं। यूनिफार्म खोलकर हैंगर पर लटकाती थीं।

"मम्मी जब-जब आपका मूड खराब होता है, आपको मुझमें कमियां नजर आने लगती हैं।" जूही ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"तुम खुद देख लो।" मम्मी ने कहा तो जूही मम्मी की बात काटते हुए बोली- "मम्मी आप भी छोटी- छोटी बातों को लेकर व्यर्थ ही परेशान होती रहती हैं।

"जूही ये छोटी-छोटी बातें ही आदमी का चरित्र और व्यक्तित्व बनाती- बिगाड़ती हैं।

"मम्मी स्कूल में टीचर का लैक्चर सुनो और घर पर आपका...।"

'जूही'- मम्मी चीख पड़ीं। उनकी आवाज में तेजी और चेहरे पर रोष उभर आया।

"मम्मी आज आपका मूड खराब हो रहा है, चलिए पिक्चर देखने चलते हैं।" जूही ने एकदम अपना स्वर बदला। मम्मी की चापलूसी करते हुए बोली- "पापा को आने दीजिए, प्रभात में बहुत अच्छी फिल्म लगी है..."

मम्मी ने चौंककर जूही की तरफ देखते हुए कहा- "जूही, अभी परसों ही हम पिक्चर देखकर आए हैं। आज फिर पिक्चर...? रोज-रोज पिक्चर देखना अच्छा नहीं है।"

जूही ने बुरा सा मुंह बनाकर कहा- "ओफ्फओ मम्मी, मैं जिस पिक्चर की बात कर रही हूं आप देखेंगी तो...।"

मम्मी ने कहा- "देखो जूही तुम्हारे पापा आफिस से थके हारे आएंगे। आफिस से आते ही उनके सामने ऐसी कोई बकवास नहीं करना समझीं।"

जूही ने मम्मी की बात पर तनिक रोष प्रकट करते हुए कहा- "मम्मी आपको हमेशा पापा की इच्छा, पापा की पसंद का ही ध्यान रहता है, मेरा कभी नहीं...। मैं आज ही पिक्चर जाना चाहती हूं।"

"लेकिन मैं तुम्हारी यह जिद पूरी नहीं होने दूंगी।" मम्मी कहते हुए रसोईघर में चली गई।

जूही को मन ही मन बहुत गुस्सा आया। वह पैर पटकती हुई अपने कमरे में चली गई।

शाम को पापा आफिस से आए। उन्होंने जूही को पुकारते हुए कहा- "देखो जूही मैं तुम्हारे लिए कितनी अच्छी किताब लाया हूं।"

जूही तो अपने कमरे में बंद थी। पापा की आवाज सुनकर उसकी रुलाई फूट पड़ी। पापा के बहुत खटखटाने पर भी उसने अपना दरवाजा नहीं खोला। पापा मम्मी के पास गए।

'ये आज जूही को क्या हो गया है?' मम्मी ने सारी बात बताई। पापा ने कहा- "बस, इतनी सी बात में रानी बिटिया ने मुंह फुला लिया। चलो, हम तीनों पिक्चर चलते हैं।"

जूही की मम्मी जो अभी तक जूही के व्यवहार से क्षुब्ध थी, बोली- "देखो, मैं इसकी ऐसी जिद्द को पूरी करने के पक्ष में नहीं हूं। वह हमारी इकलौती लड़की है। मैं यह तो चाहती हूं कि जूही को सब प्यार करें किन्तु मैं यह कभी नहीं चाहूंगी कि जूही हमारे उस प्यार का गलत फायदा उठाए। इतनी पिक्चरें देखना, घूमना- फिरना यह सब न तो इस उम्र की लड़की के लिए ठीक है और न ही विद्यार्थी जीवन में....।

"बच्ची है, जिद्द तो बच्चों का स्वभाव होता है।"

"हां, यह स्वभाव आदत न बन जाए यह भी ध्यान रखना होगा ना।" जूही की मम्मी ने आवाज को धीमे करते हुए कहा- "आजकल जूही के व्यवहार व आचरण में कुछ परिवर्तन नजर आ रहा है मुझे। संभव है स्कूल में इसकी संगत किसी गलत लड़की से हो गई हो..।"

जूही के पापा ने कहा- "हां सुमि, तुम सही कह रही हो। मैं भी जितनी देर घर में रहता हूं, उतनी देर में ऐसा अनुभव मैंने भी किया- पर तुम्हारी तरह ध्यान नहीं दिया। तुम मां हो सुमि, तुम ही उसे समझ सकती हो। तुम ही उसे समझा सकती हो।

"मैं इसीलिए तो कहती हूं- बच्चों को उतना ही प्यार देना चाहिए जितना वे पचा सकें। प्यार की अधिकता बच्चों को बिगाड़ने लगे तो वह प्यार जहर बन जाता है।"

दूसरे दिन जूही की मम्मी जूही के स्कूल गई। स्कूल में जूही की क्लास टीचर से मिलने पर पता चला कि जूही स्कूल में भी बहुत बदली- बदली नजर आ रही है। न तो इसका होमवर्क पूरा रहता है और न ही आजकल इसका पढ़ने में मन लगता है।

जूही की मम्मी ने पूछा- "आजकल यह किस लड़की के साथ ज्यादा रहती है?"

टीचर ने बताया कि इसकी क्लास में एक नई लड़की आई है निशिता। आजकल जूही उसी के साथ रहती है। यह लड़की बहुत अमीर घर से है।

जूही की मम्मी ने क्लास टीचर की मदद से निशिता को एक बार देखा और घर लौट आई।

शाम को भी मम्मी ने जूही को मुंह फुलाए देखा तो मुसकरा कर बोलीं- "कल की बात पर अभी तक नाराज हो बेटे? चलो, तुम कुछ खा-पी लो, अभी तुम्हारे पापा के आते ही हम घूमने चलेंगे।"

जूही के होठों पर मुसकान आ गई। जूही ने कहा- 'सच मम्मी? पर कल तो आपने मुझे घूमने- फिरने के लिए डांटा था।'

"मैं घूमने- फिरने को बुरा नहीं समझती बेटी, किन्तु इसका भी समय व सीमा होनी चाहिए ना।"

जूही बहुत प्रसन्नता से तैयार हुई।

मम्मी, पापा व जूही झील के किनारे घूमने गए। सभी ने बहुत मनोरंजन किया। अचानक जूही ने झील को देखकर पूछा- "मम्मी यह झील में इतनी काई कैसे हो गई? पिछली बार जब हम आए थे तब तो काई थोड़े से पानी में थी।"

जूही की मम्मी ने कहा- "बस उस थोड़ी सी काई से बहुत सारी काई उत्पन्न हो गई।"

कैसे? मैं समझी नहीं मम्मी।"

"बेटी, जिस प्रकार एक बुराई से बहुत सी बुराइयां उत्पन्न हो जाती हैं। थोड़ी सी गंदगी से गंदगी का ढेर बनता जाता है, शरीर में एक रोग से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।"

जूही बहुत ध्यान से मम्मी की बात सुन रही थी। तभी उसके पापा बोले- "ठीक इसी तरह बेटे एक गलत आदमी की संगत से कई लोग बिगड़ जाते हैं।"

"हां पापा, कहते हैं न एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।" जूही ने उत्साह से कहा।

'हां जूही बेटे, तुमने बहुत अनमोल बात कही है। मम्मी बोली- "बहुत समझदारी की बात...! जूही बेटे यह मनुष्य का स्वभाव होता है कि वह बुराई को बहुत जल्दी अपना लेता है क्योंकि किसी की अच्छाइयों को ग्रहण करना बहुत मुश्किल होता है।"

जूही अपनी मम्मी की बातों को समझ रही थी। उसे मम्मी की कही बातें सही लगीं। अपने आप से उसे ग्लानि हुई।

उसे लगा कि मां की बातों में कहीं पीड़ा है। उसे तुरंत मम्मी की कल की बात याद आई, मम्मी ने कहा था- "आजकल तुम्हारे व्यवहार में परिवर्तन आता जा रहा है जूही, तुम पहले तो ऐसी न थीं।"

"क्या सोचने लगी जूही बेटे? शांत झील पर फैली काई से तुम इतनी चिंतित हो गई।" मम्मी ने जूही के भीतर हो रही उथल-पुथल को भांप लिया था।

"मैं चिंतित नहीं मम्मी खुश हूं, बहुत खुश। आप ने भी आज मेरे मन-बुद्धि पर जमने वाली काई को हटा दिया। मम्मी... और जूही मम्मी से लिपट गई।

मम्मी ने जूही को प्यार से बाहों में भर लिया। □

■ निधि संदल

हार की जीत

सोमा और शीला बचपन से अच्छी मित्र हैं। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ती हैं। पड़ोसी होने के नाते दोनों का अधिकतर समय साथ ही बीतता है। जिस दिन वे आपस में मिल नहीं पातीं उस दिन उन्हें ऐसा महसूस होता है मानो कोई बड़ा काम करने से छूट गया हो।

उस दिन सोमा जैसे ही घर पहुंची। देखा तो कलकत्ते से मौसी और उनकी बेटी मधु आयी थीं। सोमा उन्हें देखते ही खिल गई। मौसी उसके लिए ढेर सारे खिलौने, चूड़ियां, माला और फ्राक लाई थीं। सोमा ने मधु का सामान अपने कमरे में रख लिया। उन लोगों के आने से दशहरे की छुट्टियां अच्छी बीतेंगी, सोचकर सोमा बड़ी प्रसन्न थी।

तीन चार साल बाद सोमा और मधु मिली थीं। इसलिए उन लोगों की बातें थीं कि खत्म होने ही नहीं आ रही थीं। दो- तीन दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। एक दिन शाम को मधु बोली- "भई सोमा, मेरा तो घर बैठे-बैठे मन ऊब गया। मुझे आए तीन दिन हो गए और हम लोग कहीं गए नहीं। हमारे कलकत्ते में दुर्गा पूजा के दिनों में इतनी चहल-पहल रहती है कि हम लोग एक दिन भी घर नहीं बैठते।"

"मगर मधु कहीं घूमने जाने के लिए तो पापा को मनाना पड़ेगा। चलो आज तुम्हें अपनी सहेली के घर ले चलती हूं। दो दिन से गए भी नहीं हैं उसके पास। मिलोगी तो मन खुश हो जायेगा। बड़े अच्छे स्वभाव की है शीला। पेंटिंग इतना बढ़िया करती है कि तुम देखोगी तो ताज्जुब करोगी।"

"अच्छा तो फिर उसी के घर चलते हैं"- मधु ने झटपट अपने कपड़े बदले। बाल बनाकर जूते पहन, चलने को तैयार हो गई।

सोमा ने घंटी बजाई तो शीला की मम्मी ने दरवाजा खोला। देखते ही बोलीं- "अरे सोमा तुम! बड़ी लम्बी उम्र है तुम्हारी। अभी हम और शीला तुम्हारी याद कर रहे थे।"

सोमा ने मधु का परिचय करवाते हुए कहा- "आंटी, यह है मधु। मेरी मौसी की लड़की। कलकत्ते से छुट्टियां बिताने आई हैं।"

"अच्छा-अच्छा! मन्दाकिनी की लड़की है। बहुत छोटी सी थी, तब देखा था। आओ तुम लोग भीतर आओ। शीला अपने कमरे में ही है" ...कहकर आंटी फिर चौके में चली गई।

आहट पाकर शीला ने सिर उठाया तो सोमा के साथ किसी नई लड़की को देख वह अचकचा गई। उसने झट

पेंटिंग ब्रश रखकर कहा- "आइए सोमा।" फिर मधु से बोली- "आइए बैठिए।"

सोमा ने हंसते हुए कहा- "पहचाना नहीं शीला। यह मधु है। मेरी कलकत्ते वाली बहन। इसे आप नहीं तुम कहो।"

"लेकिन तुम लोग खड़ी क्यों हो, बैठो न।" शीला ने सहज होते हुए कहा।

सोमा कुर्सी खींच कर बैठ गई। लेकिन मधु वैसी की वैसी खड़ी रही। वह शीला को आश्चर्य से देखे जा रही थी। तभी शीला बोली- "मेरे हाथ नहीं हैं। देखकर आपको यह अजीब सा लग रहा होगा।"

"नहीं तो।" कहकर मधु भी बैठ गई। ऊपर से तो उसने नहीं कह दिया था। लेकिन उसके असहज व्यवहार को सोमा और शीला दोनों ने भांप लिया था। थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करके ही मधु उठ गई। हार कर सोमा को भी उठना पड़ा।

रात को जब दोनों वापिस बातें करने बैठीं तो मधु बोली- "सोमा, तुम्हारी शीला से कैसे दोस्ती हैं? तुम्हारी जगह मैं होती तो कभी मित्रता न करती। न खेलना, न कूदना। बस सारे वक्त बातें। इस तरह तो तुम्हारी जिन्दगी भी चौपट हो जायेगी।"

■ शकुन्तला वर्मा

"नहीं मधु, तुम शीला को नहीं जानतीं। अब से चार साल पहले वह हम लोगों की तरह स्वस्थ और सुन्दर लड़की थी। एक दिन तार मिला कि नानी की हालत खराब है। आंटी और शीला तुरन्त रवाना हो गईं। जिस बस से वह लोग गईं, वह रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त हो गई। आंटी के सिर में चोट आई। मगर शीला के दोनों हाथ की हड्डियां-चूर-चूर हो गईं। मजबूरन डाक्टर को उसके दोनों हाथ काटने पड़े। शीला को जब होश आया तो अपने हाथ न देख वह फूट-फूट कर रोने लगी। आंटी, अंकल, डाक्टर सब समझा-समझा कर हार गए। मगर वह हर समय रोती रहती।

अपनी अकेली संतान को यों बिलखते देख आंटी का बुरा हाल था। उन्हें यों रोता देख एक दिन डाक्टर ने समझाया कि अगर आप यों हर समय उदास रहेंगी तो शीला को कैसे धैर्य आयेगा। आप उसे खुश रखने की कोशिश करिए। तभी वह धीरे-धीरे नार्मल हो सकेगी।

उस दिन से आंटी ने अपने सीने पर पत्थर रख लिया। तीन- चार महीने इलाज के लिए अस्पताल में रहना था। शीला का घाव धीरे-धीरे भरने लगा। लेकिन अब वह लेटे-लेटे ऊबने लगी। अचानक एक दिन आंटी को खयाल आया कि वह तो पढ़ने की बहुत शौकीन थी। बस फिर क्या था। आंटी उसके लिए अच्छी-अच्छी किताबें लाने लगीं।

शीला का वक्त ठीक से गुजरने लगा। तभी एक दिन शीला ने कहा- "मम्मी, आप मेरी कोर्स की किताबें ला दीजिए। मैं पढ़ती रहूंगी। नहीं तो मेरा साल बेकार हो जायेगा।"

आंटी ने सुना तो प्रसन्नता से उनकी आंखें भर आईं। उस दिन से शीला अस्पताल में कोर्स की किताबें पढ़ने लगी। समय बीतता गया और वह ठीक होकर घर आ गई। जब स्कूल पहुंची तो प्रिंसिपल ने यह कहकर उसे वापस भेज दिया कि वह अब नार्मल बच्ची तो है नहीं। इसलिए उसकी पढ़ाई यहां न हो सकेगी। उस दिन वह बहुत रोई। उसे लगा उसका जीना व्यर्थ हो गया।

मगर आंटी ने हिम्मत नहीं छोड़ी। उन्होंने शीला को समझाते हुए कहा- "तुम घबड़ाओ नहीं बेटी। अगर तुम्हारे मन में पढ़ने की लगन है तो तुम जरूर पढ़ सकोगी।"

"कैसे मम्मी? मेरे तो हाथ ही नहीं है? कैसे लिखूंगी? कैसे पेंटिंग बनाऊंगी। कैसे अपना काम करूंगी? जब परीक्षा नहीं दे सकूंगी तो मेरा पढ़ना न पढ़ना सब बराबर हो जायेगा।" शीला ने बुझे स्वर में कहा।

"नहीं बेटी, मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। तुम भी सब करोगी। वैसे ही जैसे और सब करते हैं।"

मगर कैसे मम्मी? मैं कैसे कर पाऊंगी? मेरे तो दोनों हाथ... इससे तो मैं मर ही जाती। भगवान ने मुझे अपाहिज बनाकर क्यों छोड़ दिया" कहकर वह रो पड़ी।

आंटी ने उसके आंसू पोंछे। फिर प्यार से समझाते हुए कहा- "देखो शीला, भगवान जब किसी से कुछ छीनता है तो उसे कुछ देता भी है। नहीं तो इनसान का जीना दूभर हो जाये। तुम भी धैर्य रक्खो। मैं तुम्हारा नाम विकलांग बच्चों के स्कूल में लिखवा देती हूं। वहां तुम अपनी पढ़ाई पूरी कर सकोगी। हिम्मत हारने से तो कुछ भी हाथ नहीं लगेगा बेटे।"

उसके बाद से शीला विकलांगों के स्कूल में जाने लगी। मगर फिर भी वह हरदम उदास रहती। एक दिन स्कूल से लौटी तो बेहद खुश थी। आंटी ने पूछा- "आज मेरी बेटी खुश है। कोई खास बात है? मुझे नहीं बताएगी?"

शीला ने कहा- "मम्मी मेरे साथ एक लड़का पढ़ता है अनिल। वह देख नहीं सकता। वह आंखों का काम अपने हाथों से लेता है। वह छू-छू कर ब्रेल लिपि से पढ़ता है। उसके पास एक घड़ी है। उसके उठे हुए अंकों को छूकर वह एकदम सही समय बता देता है। उसे देखकर मुझे लगा कि जब हाथों से आंख का काम ले सकता है, तो फिर मैं अपने पैरों से हाथों का काम क्यों नहीं ले सकती।"

सुनकर आंटी के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। उन्होंने शीला को सीने से लगाकर कहा- "बेटी तूने अपनी मंजिल पा ली है। अब तू कभी पीछे मुड़कर नहीं देखेगी।"

बस, उसी दिन से वह पैर में कलम पकड़ कर लिखने का अभ्यास करने लगी। लिखने के अलावा पेंटिंग बनाना, खाना खाना, कई काम वह एक-एक कर पैरों से करने लगी। शुरू में उसे अटपटा लगता था। दिक्कत भी आती थी। मगर आंटी ने सदा उसका मनोबल बढ़ाया। और वह कामयाब होती गई। इस साल वह सातवीं की परीक्षा दे रही है। पेंटिंग तो वह इतनी अच्छी बनाती है कि उसे इस वर्ष पेंटिंग कम्पीटीशन में फर्स्ट प्राइज मिला है। उसने भी अन्य बच्चों की तरह भाग लिया। आयोजकों के कहने पर भी उसने अधिक समय नहीं लिया। बोली, 'यह बेईमानी होगी' और सबके देखते ही देखते पैर में ब्रश पकड़ कर ऐसी सुन्दर सीनरी बनाई कि देखने वाले चकित रह गए।

अब वह पढ़ने के बाद खाली समय में नए वर्ष, होली, दीवाली, ईद, क्रिसमस, जन्मदिन आदि के कार्ड्स पर सुन्दर-सुन्दर पेंटिंग बनाती है। और उन्हें दुकान पर बिकने दे आती है। हर महीने वह इससे इतना धन कमा लेती है कि उससे उसकी अपनी जरूरतें पूरी हो जाती हैं। पढ़ने के लिए उसे स्कालरशिप मिल रहा है। हम सबसे अच्छी तो वही है। अपने मम्मी- पापा के आगे हाथ नहीं पसारती। सच कहूं तो विकलांगता ने उसे अभी से आत्मनिर्भर बना दिया है। उसकी हार भी जीत में बदल गई

मधु ठगी सी बैठी सुनती रह गई। उसे लगा अबसे कुछ देर पहले जिस लड़की को देखकर उसके मन में उपेक्षा का भाव आया था। वह उससे, सभी से, कहीं अधिक महान है। जिन्दगी जीना तो उसी ने जाना है। मधु की नजरों में शीला ऊंची, बहुत ऊंची उठ गई थी। □

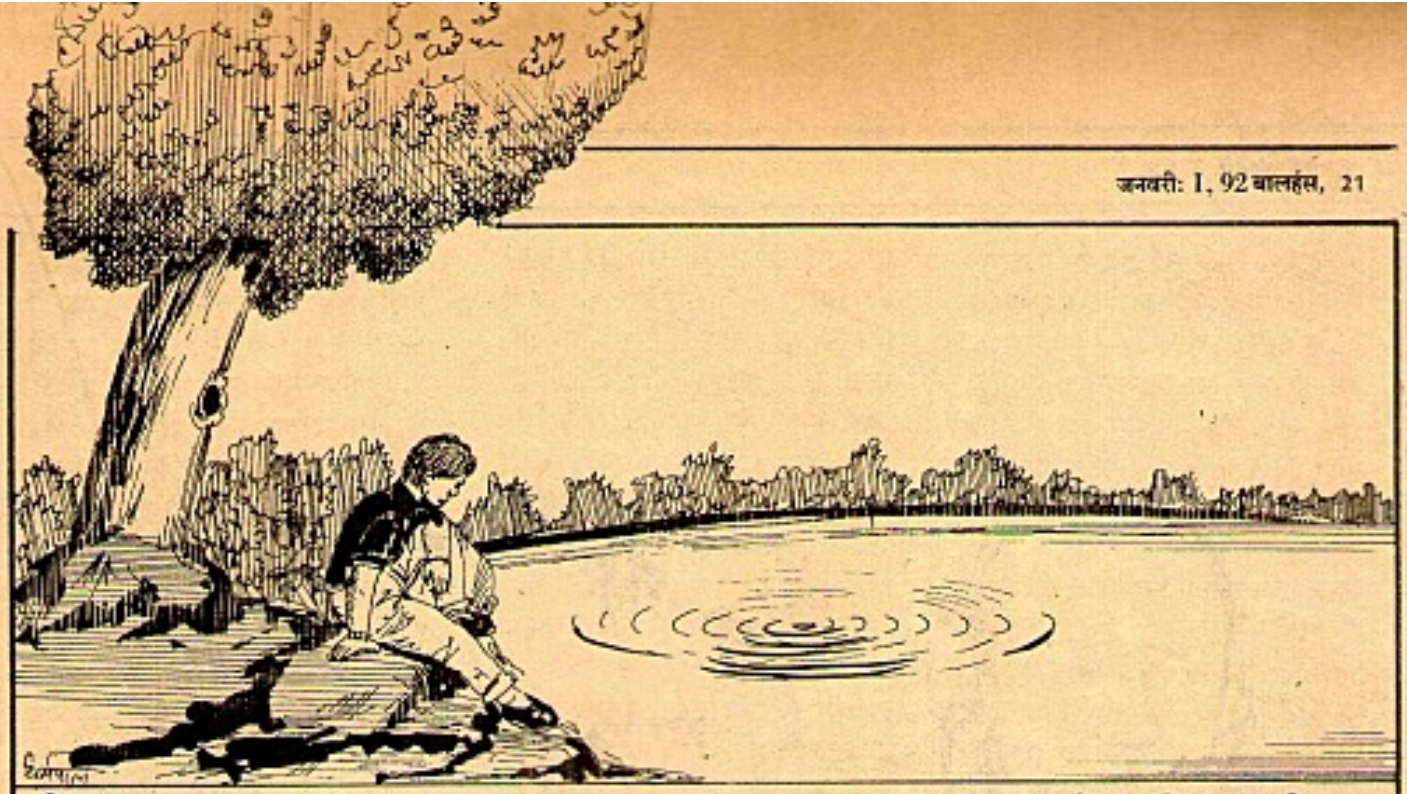

रेडियो का आविष्कार कब और कैसे हुआ

रेडियो का अविष्कार किसी एक जगह या किसी एक ही देश में नहीं हुआ था। ना ही किसी एक व्यक्ति द्वारा इसका पूर्ण निर्माण किया गया।

आयरलैंड के प्रसिद्ध गणितज्ञ क्लार्क मैक्सवेल ने अपने प्रयोगों के आधार पर एक दिन घोषणा की– ''जैसे शान्त पानी में पत्थर फेंकने से लहरें उठती हैं, ठीक उसी प्रकार प्रकृति के शान्त वातावरण में यदि किसी विद्युत और यांत्रिकी माध्यम से ध्वनि को फेंका जाए तो वातावरण में लहरें या तरंगे उत्पन्न होती हैं, जो दूर दराज तक पहुंचने में सफल होती हैं।'' यह उसी प्रकार होता है जब हम किसी तालाब या झील में पत्थर फेंकते है तो वलय [गोल घेरे] चारों तरफ फैलती हैं।

क्लार्क मैक्सवेल ने अपने इस सिद्धान्त को 1873 में प्रकाशित करवाया था। इसी सिद्धान्त को प्रायोगिक रूप देने के लिए बाद में जर्मन वैज्ञानिक हाइनरिक हर्टज ने कुछ विद्युत उपकरणों की सहायता से एक प्रयोग किया जो अपने आप में सफल हुआ। इन्हीं वैज्ञानिक हाइनरिक हर्टज के नाम पर माप इकाई हर्ट्ज का नामकरण हुआ।

वैज्ञानिक हर्ट्ज ने अपने प्रयोग में एक निश्चित स्थान से दस मीटर दूर एक धातु का टुकड़ा रखा। अब इस स्थान पर विद्युत करेंट दिया तो वहां चिनगारी निकली। ठीक उसी वक्त दस मीटर दूर रखी धातु पर चिनगारी दिखाई दी। इस प्रयोग से यह सिद्ध हो गया कि विद्युत से वातावरण में तरंगें उत्पन्न होती है तभी तो दस मीटर दूर रखी धातु पर चिनगारी दिखाई दी। क्योंकि विद्युत तरंगित होकर दस मीटर दूर चली गई थी। इस प्रयोग से यह निष्कर्ष निकला कि यदि विद्युत शक्ति को बढ़ा दिया जाए तो उसकी तरंगों को हजार कि.मी. दूर भेजा जा सकता है।

बस फिर क्या चाहिए था हाइनरिक साहब को, जुट गए नये-नये प्रयोग करने में। आखिरकार अपने अथक प्रयत्नो के फलस्वरुप हाइनरिक हर्टज ने सन् 1880 में तरंगो द्वारा संदेश भेजने की विधि खोज निकाली और उसे अखबार में प्रकाशित करा दिया।

जब इटली के वैज्ञानिक मारकोनी ने हाइनरिक के प्रयोग को पढ़ा तो वे भी कुछ नया कर दिखाने की सोचने लगे। एक बार मारकोनी महोदय ने ठान लिया तो फिर पीछे मुड़ के न देखा और रेडियो निर्माण का सूत्र खोज निकाला। यह सूत्र हाइनरिक की संदेश भेजने की विधि के आधार पर ही था। मारकोनी ने हाइनरिक हर्टज की तरंगो द्वारा संदेश भेजने की क्रिया विधि में भी काफी सुधार किया।

अभी मारकोनी का काम समाप्त नहीं हुआ था। उन्होंने रेडियो प्रसारण में अत्यंत आवश्यक इलैक्ट्रान की खोज की। इसका हल खोजा अमरीकी वैज्ञानिक ली.डी. फारेस्ट ने। इस प्रकार रेडियो निर्माण का कार्य सम्पूर्ण हुआ।

आयरलैंड में इस सिद्धान्त का जन्म हुआ, जर्मन में इस का प्रयोग, इटली में रेडियो ने जन्म लिया तो उसी के कुछ सहायक पुर्जों ने अमरीका को अपनी जन्मस्थली बनाया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आधुनिक रेडियो प्रसारण व रेडियो का स्वरूप आज है उसे यहां तक लाने में हाइनरिक हर्ट्ज, मारकोनी और फारेस्ट का प्रमुख योगदान रहा है।□

■ कृष्ण सुथार

भारत में रेडियो प्रसारण

■ उमेश चन्द्र चतुर्वेदी

सितम्बर सन् 1901 की एक सर्द सुबह .... अमरीका के न्यूफाउलैण्ड स्थित सेन्टजान्स हार्बर का किनारा ... 27 वर्षीय युवा वैज्ञानिक जी. मारकोनी तथा उसका सहायक कैम्प। रेशम की डोरी में बंधी पतंगें उड़ा रहे थे। पतंग से कुछ ही दूरी पर स्थित एक छोटी-सी मशीन पर वे कुछ प्रयोग कर रहे थे। इस मशीन से पतंगें एक महीन तार से जुड़ी थीं। इस पूरी व्यवस्था को उन्होंने नाम दिया था- 'बर्टिकल एरियस।' इंग्लैण्ड के कोर्नबाल नगर से कोई व्यक्ति सांकेतिक भाषा में कुछ कह रहा था। वे दोनों उसी भाषा को इस मशीन से सुनने का प्रयास कर रहे थे। अचानक मशीन से लगे एक चौगे पर मारकोनी ने वह आवाज सुन ली। ऐसा होने के बाद वह खुशी से पागल हुआ जा रहा था। पहली बार किसी व्यक्ति ने समुद्र के पास स्थित किसी व्यक्ति की आवाज सुनी थी।

विश्व का यही पहला रेडियो प्रसारण था। यह समूची परिकल्पना जी. मारकोनी की थी। अतः रेडियो का आविष्कारक उसे ही माना जाता है। रेडियो के आविष्कार के इसी आधार पर कालान्तर में वायरलेस एवं टी.वी. की खोज हुई।

प्रारम्भ में प्रसारण मात्र कौतूहल के ही लिए था, तब प्रसारण केवल सांकेतिक भाषा में ही होते थे। सीधी बातचीत जैसा प्रसारण तो बहुत बाद में होने लगा। वैसे प्रारम्भ में समुद्री जहाजों ने इसकी उपयोगिता को समझकर इसे आजमाया। जहाज से जहाज, जहाज से किनारा तथा किनारा से जहाज तक संपर्क के लिए इसका उपयोग होने लगा।

उस समय कोई भी देश अपनी खोज को छुपाकर रखने में ही अपनी प्रशंसा समझता था। फिर उस समय सर्वप्रथम सन् 1912 में 'लंदन टाइम्स' अखबार ने रूस, जापान युद्ध के ताजे समाचार इकट्ठा करने के लिए रेडियो का उपयोग किया। इसके संयोजक प्रसिद्ध अमरीकी रेडियो विशेषज्ञ 'ली-डे-फोरस्ट' थे। इसके बाद जर्मनी तथा रूस ने इस समय विश्व बिरादरी से अलग होने के कारण बाहरी समाचारों की जानकारी के लिए रेडियो का ही उपयोग किया। उस समय अमरीका तथा इंग्लैण्ड के नागरिकों ने अपने मनोरंजन हेतु इसके शौकिया उपयोग को बढ़ाने में मदद की। सही मायने में

शाब्दिक प्रसारण सर्वप्रथम सन् 1933 में जर्मनी से अफवाहें फैलने के लिए किया। कालान्तर में वहां से विश्व की विभिन्न भाषाओं में प्रसारण होने लगा। इसी तरह कई साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने अपने उपनिवेशों के लिए प्रसारण शुरू किया। इंग्लैण्ड ने अपना प्रसारण सन् 1932 में शुरू किया। हालैण्ड ने सन् 1927 से। उस समय तक केवल शार्टवेव पर ही प्रसारण होते थे, किन्तु 1930 के बाद इसके मीटरवेव पर भी प्रसारण होने लगे।

द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण दुनिया के तमाम देशों ने अपने को संगठित करने, आन्तरिक तथा बाह्य प्रशिक्षण देने के लिए जनता के लिए प्रसारण शुरू कर दिया। इसका जनता की रुचियों पर जबर्दस्त प्रभाव हुआ। इसकी इस महत्ता को जानने के बाद लगभग सभी राष्ट्रों की सरकारों ने इस माध्यम को विकसित तथा सुव्यवस्थित करने के लिए प्रयास किए। इस तरह रेडियो एक नए रूप में सामने आया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद तो लगभग सम्पूर्ण विश्व में शासन, जनरुचि पर ही आधारित हो गया। इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि पूरे विश्व में जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था पनप गई। इस कारण सभी सरकारों ने अपने लिए मत पाने के लालच से अपनी नीतियों एवं लाभों की सूचना को जनता के सामने रखने का महत्त्वपूर्ण साधन, रेडियो को ही माना।

सन् 1920 से इंग्लैण्ड में शौकिया प्रसारण शुरू हो गए थे, किन्तु कुछ ही दिनों बाद इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि रेडियो सेटों की दुकानों में लम्बी लाइनें लगी रहने लगीं। इसका प्रभाव इंग्लैण्ड की सरकार पर भी पड़ा। तब सन् 1922 में वहां के डाक विभाग ने रेडियो सेटों के इच्छुक निर्माताओं की मीटिंग बुलाकर ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन की स्थापना की। तब बी.बी.सी. की आय का स्रोत 10 शिलिंग प्रति सेट की दर से लगे टैक्स ही थे। यह स्थिति सन् 1951 तक बनी रही। सन् 1952 में इसको पूर्ण रूप से पब्लिक कारपोरेशन का दर्जा देकर सरकार इसका खर्च भी वहन करने लगी। फिर भी सरकार का इसके प्रसारणों पर कोई नियंत्रण नहीं है। आज बी.बी.सी. विश्व की अग्रणी प्रसारण सेवा है। यह विश्व की लगभग हर प्रमुख भाषाओं में अपना प्रसारण करती है। अकेले हिन्दी, उर्दू तथा बांग्ला में इसका प्रसारण तीन सत्रों में प्रतिदिन होता है। इसके अकेले हिन्दी प्रसारणों की श्रोता संख्या लगभग तीन करोड़ है। जो किसी भी अकेले रेडियो स्टेशन के श्रोताओं की संख्या से बहुत अधिक है। आजकल इस पर प्रतिवर्ष 3 अरब पौंड का खर्च आता है।

विश्व की सबसे बड़ी प्रसारण संस्था 'वॉयस ऑफ अमरीका' है, इसकी स्थापना प्रारम्भ में द्वितीय विश्व युद्ध में अफवाह फैलाने वाली संस्था के रूप में हुई थी। किन्तु युद्ध की समाप्ति के बाद सन् 1946 के जनवरी माह में इसे नया रूप दिया गया। तब से यह आज तक समाचार, रूपक तथा अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों आदि का प्रसारण विश्व की लगभग 23 आवाजों में करता है। हिन्दी, उर्दू तथा बांग्ला में प्रतिदिन इसके दो-दो घंटे के कार्यक्रम होते हैं।

यह हुई विश्व-प्रसारण की एक झलक। अब तुम्हें यह उत्सुकता लगी होगी कि भारत में इसका प्रसारण कब से शुरू हुआ?

प्रारम्भ में भारत में प्रसारण शौकिया अंग्रेजों द्वारा किया गया। भारत की अशिक्षित तथा गरीब जनता का इससे परिचय बहुत बाद में हुआ। शौकिया तौर पर 16 मई सन् 1924 से मद्रास से, मद्रास प्रेसीडेंसी रेडियो क्लब के द्वारा प्रसारण शुरू हुआ। किन्तु यह शौकिया प्रसारण कालान्तर में बंद हो गया। इसके बंद होने का कारण धन का अभाव होना था। इस कारण मद्रास के कारपोरेशन अधिकारियों के सहयोग से यह प्रसारण 1 अप्रैल सन् 1930 से 16 जून 1938 तक चलता रहा है। इस प्रकारण की समय सारणी यह थी-

संगीत- सायं 5.30 से 7.30 तक।

संगीत के माध्यम से स्कूली शिक्षा- सायं 4 से 4.30 तक।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक रविवार को सुबह 10 से 11 बजे तक यह ग्रामोफोन रिकार्ड का प्रसारण करता था तो प्रत्येक सोमवार को इसी समय पश्चिमी गीत-संगीत का। बाद में जब आल इंडिया रेडियो के नाम से अंग्रेज सरकार ने सरकारी प्रसारण सेवा शुरू की तब यह उसी में समाहित हो गया।

इसी तरह का प्रसारण शौकिया तौर पर लाहौर में भी शुरू हुआ। यह प्रसारण पंजाब टेक्स्ट बुक कमेटी द्वारा 1500 रुपए वार्षिक तथा पंजाब सरकार द्वारा दिए गए रुपयों से 15 दिस. 1937 तक चलता रहा। 16 दिसम्बर 1937 से इसने आल इंडिया रेडियो के एक केन्द्र के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया।

इलाहाबाद में एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट इलाहाबाद द्वारा 1935 से 31 जनवरी 1949 तक प्रतिदिन 1 घंटे का प्रसारण होता रहा।

देहरादून में नगर अधीक्षक तथा जनता के चंदे के सहयोग से 6 अप्रैल 1936 से प्रसारण प्रारम्भ हुआ। बाद में एक वर्ष के अन्दर ही यह केन्द्र अर्थाभाव के कारण बन्द हो गया। पेशावर में सन् 1935 से मारकोनी कम्पनी द्वारा अपनी शर्तों पर प्रसारण शुरू हुआ। यह प्रसारण भी सन् 1937 तक चला।

10 सितम्बर 1935 से मैसूर राज्य ने अपना प्रसारण शुरू किया। यह प्रसारण आकाशवाणी के नाम से शुरू हुआ था। यही आकाशवाणी शब्द कालान्तर में पूरे स्वतंत्र भारतीय रेडियो के नाम के तौर पर स्वीकृत हो गया।

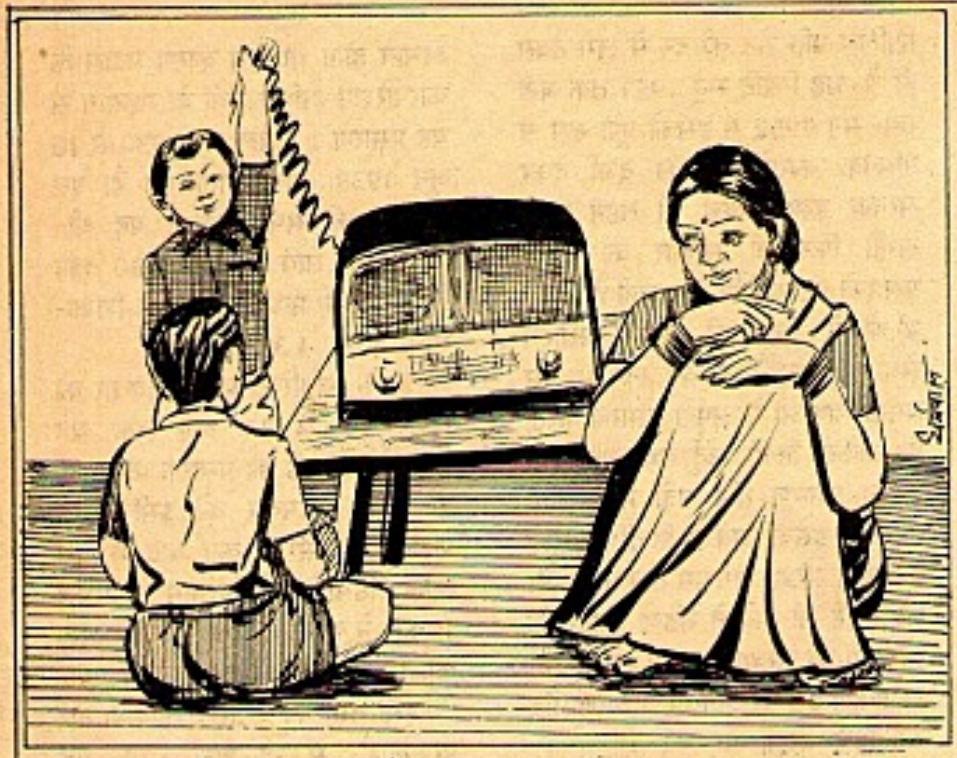

इसी तरह बड़ौदा, हैदराबाद, औरंगाबाद, त्रावणकोर रियासतों द्वारा प्रसारण शुरू हुआ, जो स्वतंत्र भारत के उदय के साथ आकाशवाणी के केन्द्रों के रूप में कार्य करने लगे।

अंग्रेज सरकार ने पहला प्रसारण 23 जुलाई 1927 को प्रारम्भ किया था। उस समय जो सरकारी प्रसारण कम्पनी थी, उसका नाम इंडिया ब्राडकास्टिंग कम्पनी थी। उसने इसी दिन से बम्बई से भी प्रसारण शुरू किया। फिर इसने इसी वर्ष 26 अगस्त से कलकत्ता से भी प्रसारण करना प्रारम्भ किया। इन केन्द्रों की प्रसारण क्षमता मात्र डेढ़ किलोवाट थी, जिसे केवल 30 मील के क्षेत्र में ही सुना जा सकता था।

इंडिया ब्राडकास्टिंग कम्पनी की स्थापना सन् 1926 में अंग्रेज सरकार द्वारा हुई थी। इस कम्पनी की आय का स्रोत 10 रुपए प्रति सेट लाइसेंस की थी। इसकी स्थापना 6 लाख रुपए से की गई थी। इसमें साढ़े चार लाख रुपए ट्रांसमीटर आदि में खर्च हो गए। उसका मासिक खर्च तैंतीस हजार रुपए थे। आमदनी का जरिया केवल लाइसेंस फीस थी। सन् 1930 तक केवल आठ हजार रेडियो सैट लोगों के पास थे। जिनसे लायसेंस फीस वसूल करने में कई व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। अंग्रेज सरकार को इसके प्रसारणों में कोई रुचि नहीं थी। इस कारण उसने इस कम्पनी को कोई आर्थिक सहयोग नहीं दिया। फलतः यह कम्पनी मार्च 1930 में बंद हो गई। यह कम्पनी, मूलतः एक व्यावसायिक कम्पनी थी। इसका उद्देश्य केवल लाभ कमाने तक ही सीमित था।

इस कम्पनी के बन्द होने के फलस्वरूप तत्कालीन भारतीय नागरिकों तथा अंग्रेज व्यक्तियों में खलबली मच गई। लोग एक जरूरी ज्ञानवर्द्धक मनोरंजक माध्यम से वंचित हो रहे थे। फलतः चारों ओर से सरकार पर दबाव पड़ने लगा। तब भारतीय उद्योग एवं श्रम मंत्रालय ने प्रसारण शुरू किया। इस प्रसारण व्यवस्था का नाम 'इंडियन स्टेट ब्राडकास्टिंग सर्विस' रखा गया था। किन्तु यह प्रसारण सेवा भी, जो 1 अप्रैल 1930 को शुरू हुई थी। अक्टूबर 1931 में बन्द हो गई।

सरकार ने प्रसारण खर्च को कम करने के लिए प्रयास किया। रेडियो सेटों पर से टैक्स हटा दिया गया। इसके साथ ही प्रसारण पुनः चालू हो गया। इन्हीं दिनों बी.बी.सी. ने ब्रिटिश साम्राज्य के लिए प्रसारण शुरू किया। सन् 1932 में शुरू हुए इस प्रसारण में भारत के लिए भी प्रसारण होने लगा। बी.बी.सी. के कार्यक्रमों को अपना कार्यक्रम मानकर अंग्रेजों ने उसे चाव से सुनना प्रारम्भ किया। इस कारण भारतीय क्षेत्र में विस्तृत प्रसारण के लिए अनायास ही एक संभावना जाग पड़ी। सरकार ने बी.बी.सी. के ढांचे पर ही प्रसारण करने की योजना बनाई। फिर भी यह योजना तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलिंडन के दफ़्तर में इस नौकरशाह से उस नौकरशाह की मेजों पर अटकी पड़ी रही।

अगस्त सन् 1935 में सरकारी प्रस्ताव पर बी.बी.सी. से एक व्यक्ति, सरकारी पदभार धारण करके आया। उसका नाम था- 'फिल्डन' और उसका पद था- 'कंट्रोलर ऑफ ब्राडकास्टिंग' यहां आने पर उसने दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास पर केन्द्र खोलने की योजना बनाई। इस योजना पर कार्य करने के लिए सन् 1936 से बी.बी.सी. के इंजीनियर किरके को बुलाया गया। किरके यहां पर कुछ ही दिनों तक रहा। इसके बाद बी.बी.सी. से ही दूसरा इंजीनियर गोयडर आया। उसी ने योजना रखी कि यहां पर एक जगह से शार्टवेव का प्रसारण, पूरे देश के लिए हो। इसके अतिरिक्त पूरे देश में मीडियम वेव के छोटे-छोटे केन्द्र स्थापित किए जाएं। उसी की योजनानुसार दिल्ली में शार्टवेव का ट्रांसमीटर लगाया गया। इसके अतिरिक्त बम्बई, कलकत्ता में भी शार्टवेव के ट्रांसमीटर स्थापित किए गए। इन केन्द्रों से मीडियम वेव के भी प्रसारण किए जाते थे। सन् 1939 तक लखनऊ, मद्रास, त्रिचिनापल्ली, लाहौर

सहित नौ केन्द्र स्थापित किए गए।

बी.बी.सी. की व्यवस्था बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स के आधार पर भारतीय प्रसारण सेवा को 'आल इंडिया रेडियो' नाम दिया गया। 1 जनवरी 1936 से दिल्ली केन्द्र द्वारा आल इंडिया रेडियो का प्रसारण प्रारम्भ हुआ।

इसी समय द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया। तब ब्रिटिश सरकार ने उसकी क्षमता बढ़ाने के लिए कई उपाय किए। क्योंकि युद्ध की अफवाहें फैलाने के लिए यही सबसे अच्छा माध्यम था। इसी समय भारत में अंग्रेजी सत्ता का तीव्र विरोध प्रारम्भ हो गया। इस विरोध से तत्कालीन अंग्रेजी सरकार को लगने लगा कि अब उसके पांव उखड़ जाएंगे। फलतः सरकार इसके विकास के प्रति लगभग पूर्णतया उदासीन हो गई।

इन्हीं दिनों डा. राममनोहर लोहिया के संयोजकतत्व में कांग्रेस रेडियो नाम से प्रसारण शुरू किया गया था। यह प्रसारण कहीं से कहीं ले जाया जा सकता था। सन् 1944 में जब डा. लोहिया गिरफ्तार कर लिए गए, तब यह प्रसारण समाप्त हो गया।

भारत की स्वतंत्रता के बाद इसके तीव्रतम विस्तार के लिए सरकार ने कई उपाय किए। योजनाबद्ध ढंग से नए-नए केन्द्र स्थापित किए जाने लगे। सन् 1948 में पटना, कटक, अमृतसर, शिलांग, गौहाटी, नागपुर, बिजयवाड़ा तथा बड़ौदा में केन्द्र खोले गए। सन् 1949 में अहमदाबाद, धारवाड़, कोजीकोड़ में नए केन्द्र स्थापित हुए। सन् 1950 में हैदराबाद, औरंगाबाद, मैसूर तथा त्रिवेन्द्रम में भी केन्द्र स्थापित किए गए। सन् 1950 में जब लौह पुरुष सरदार पटेल ने 562 देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय किया तो सभी रियासतों के रेडियो स्टेशन भी भारतीय सूचना एवं प्रसारण विभाग में सम्मिलित कर लिए गए। प्रथम पंचवर्षीय योजना के तहत केन्द्रों से प्रसारण के लिए दो प्रारूप बनाए गए, वे आज भी हैं। राष्ट्रीय प्रसारण दिल्ली केन्द्र से प्रसारित किए जाने लगे। जिनका प्रसारण अन्य केन्द्र भी करते हैं। दूसरे स्तर पर क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा अपने-अपने कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जो राष्ट्रीय प्रसारणों में कोई बाधा नहीं डालते। इसी योजनाकाल में कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद, जालन्धर तथा लखनऊ केन्द्रों की क्षमता 50 किलोवाट तक बढ़ा दी गई। इसी योजनाकाल में भारतीय रेडियो प्रसारण को सरकारी व्यवस्था के अन्तर्गत आकाशवाणी नाम भी दिया गया। साथ ही इसको एकसूत्रीय व्यवस्था में डाल दिया गया। इसी काल में ये महत्त्वपूर्ण केन्द्र भी स्थापित किए गए। पूना- 2 अक्टूबर 1952, श्रीनगर 13 दिसम्बर 1954, जम्मू- 16 दिसम्बर 1954, राजकोट- 4 जनवरी 1955, जयपुर- 9 अप्रैल 1955, इन्दौर- 22 मई 1955, शिमला- 16 जून 1955

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भोपाल, चण्डीगढ़, गौहाटी तथा रांची में नए केन्द्र खोले गए। पुराने केन्द्र दिल्ली-1, पटना, विजयवाड़ा तथा त्रिचूर की क्षमता में वृद्धि की गई। मद्रास में 100 किलोवाट की क्षमता का शार्टवेव ट्रांसमीटर स्थापित किया गया।

इसी समय में प्रसारण तथा व्यवस्था-संचालन की सुविधा के लिए आकाशवाणी को चार क्षेत्रों में इस प्रकार बांटा गया-

पूर्वी क्षेत्र- गौहाटी, शिलांग, कटक, कलकत्ता।

पश्चिमी क्षेत्र- राजकोट, बड़ौदा, बम्बई, पूना, अहमदाबाद, नागपुर।

उत्तरी क्षेत्र- दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद, पटना, रांची, भोपाल, इन्दौर, चण्डीगढ़, अमृतसर, जालन्धर, जयपुर, श्रीनगर, जम्मू, शिमला।

दक्षिणी क्षेत्र- विजयवाड़ा, हैदराबाद, मद्रास, त्रिचूर, त्रिवेन्द्रम, त्रिचिनापल्ली, कोजीकोड़, धारवाड़, बैंगलूर।

इसी योजनाकाल में सन् 1959 ई. में अंडमान- निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में केन्द्र स्थापित हुआ तथा पुर्तगाली साम्राज्य से आजाद हुए गोवा में 1962 में पणजी स्टेशन आकाशवाणी में मिल गया।

तीसरे योजनाकाल में इम्फाल, कोहिमा, गोरखपुर, करसियांग, कानपुर, वाराणसी में नए केन्द्र स्थापित किए गए। कई क्षेत्रों में नए ट्रांसमीटर लगाए गए, जिससे प्रसारण क्षेत्र बढ़ सके। इसी काल में 14 केन्द्रों से विविध भारती कार्यक्रमों की शुरुआत 3 अक्टूबर 1957 से शुरू हुई। ये केन्द्र हैं- बंगलोर, इन्दौर, कटक, जयपुर, लखनऊ, कानपुर, पटना, पूना, नागपुर, त्रिचिरापल्ली, कलकत्ता, विजयवाड़ा, राजकोट तथा हैदराबाद।

चौथे योजनाकाल में भी कुछ नए केन्द्र स्थापित किए गए। इस काल के पूरा होने तक लगभग 75 प्रतिशत भारतीय जनता प्रसारणों के प्रभाव क्षेत्र में है। सन् 1982 में प्रारम्भ हुए रंगीन टी.वी. प्रसारण के कारण आकाशवाणी के विकास में कुछ बाधा जरूर पड़ी है। आज टी.वी. केन्द्रों के विकास पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। फिर भी आकाशवाणी अपने पूरे दमखम के साथ सामयिक, राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक तथा मनोरंजक प्रसारण कर रहा है। आज भारत में रेडियो स्टेशनों की संख्या 99 है। सबसे अन्तिम रेडियो स्टेशन आगरा का है, जो जून 1991 में स्थापित हुआ। पहले रेडियो प्रसारण घाटे का सौदा था, किन्तु विज्ञापनों के इस युग में अब रेडियो से भी उपभोक्ता वस्तुओं के विज्ञापन प्रसारित हो रहे हैं। इस कारण आकाशवाणी भी अब सरकारी आमदनी का एक स्रोत है। विगत 1989-90 में आकाशवाणी के राष्ट्रीय प्रसारण ने प्रसारित विज्ञापनों से 3 करोड़ रुपए की कमाई की थी। □

जंगल में एक विधवा बुढ़िया रहती थी। उसके सात बेटे और एक प्यारी सी बेटी थी। बेटी का नाम था बीरा। कुछ दिन बाद जब बुढ़िया मर गई, तो उसके ये बच्चे अनाथ हो गए। सातों भाई शिकार के शौकीन थे। शिकार से जो मिलता, सातों भाई व बहन मिलजुल कर खाते। वे अपनी बहन को बहुत प्यार करते थे।

एक दिन वे सातों भाई मिलकर जंगल में शिकार खेलने गए हुए थे। उन्होंने जाते-जाते बीरा बहन से कहा तुम हमारे लिए भोजन बनाकर तैयार करना, हम लोग जल्दी ही लौट आएंगे।' भाइयों के जाने के बाद झोपड़ी में बीरा अकेली रह गई। बीरा ने चूल्हे में आग लगाकर खीर बनाना शुरू किया। थोड़ी देर बाद खीर बनकर उबल गई जिससे चूल्हे की आग बुझ गई। बीरा बहुत परेशान हुई। अब आग कैसे लगाए। उसके आसपास किसी का घर भी नहीं था जहां से आग मांग कर वापस चूल्हे की लकड़ियां जला सके। वह अपनी झोपड़ी से बाहर निकल कर आ गई और जंगल में दूर निकल गई। देखने लगी कि कहीं कोई घर नजर आएगा, तो आग मांग लेगी। बहुत दूर चलते-चलते उसे एक बड़ा सा मकान दिखा। उसने मकान के सामने जाकर दरवाजा खटखटाया। दरवाजा एक औरत ने खोला। औरत ने बीरा को देखकर कहा- 'तुम यहां से चली जाओ। ये घर एक राक्षस का है। वह अभी आने वाला है। वह तुम्हें देखेगा तो खा जाएगा।' बीरा ने कहा, 'बहन मुझे थोड़ी सी आग चाहिए, खाना बनाना है। वह औरत राक्षस की पत्नी थी। दयालु थी। बीरा ने उसे बहन कहा तो उस पर दया आ गई। उसने जल्दी से बीरा को थोड़ी आग दे दी। उसने उसे चौलाई भी दी। और कहा कि इस चौलाई के दानों को रास्ते में एक एक गिराती जाना। जहां दो रास्ते मिलें वहां पर से चौलाई गिराना बंद कर देना। इससे राक्षस तुम्हारे पीछे तो आएगा, फिर रास्ता भटक जाएगा। और तुम्हारे घर तक नहीं पहुंच पाएगा। याद रखना, इस चौलाई को घर तक मत ले जाना, नहीं तो राक्षस तुम्हारे घर पहुंच जाएगा। और तुम लोगों को खा जाएगा।

बीरा अपने साथ चौलाई ले गई, और रास्ते भर चौलाई गिराती चली गई। वह जल्दी-जल्दी में राक्षस की पत्नी की बात भूल गई, और कुछ चौलाई घर पर भी ले आई। जब राक्षस अपने घर लौटा तो उसे मनुष्य की गंध आने लगी। उसने अपनी पत्नी से पूछा, कि यहां कोई मनुष्य आया था? उसकी पत्नी ने कहा- कि यहां तो कोई नहीं आया। तुम्हें बेवजह वहम हो रहा है। राक्षस ने अपनी पत्नी को बार-बार पूछा, कि ऐसा हो ही नहीं सकता। तू झूठ बोल रही है। उसने अपनी पत्नी को पीटना शुरू कर दिया। आखिर में राक्षस की पत्नी ने बीरा के बारे में कह दिया।

इतना सुनते ही राक्षस बीरा की तलाश में निकल पड़ा। वह अपने घर की चौलाई के दाने देखते देखते उसकी झोपड़ी तक पहुंच गया। झोपड़ी में बीरा अकेली थी, तब तक उसके भाई नहीं लौटे थे। वो घर आकर खीर पकाने में लग गई। उसने अपने भाइयों के लिए सात थाली में खाना परोस रखा था। और उनका इंतजार कर रही थी। इतने में राक्षस अंदर आ गया। वो डर गई। डर के मारे पानी के पीपे के पीछे छुप गई। राक्षस ने अच्छा खाना देखा, तो उसके मुंह में पानी भर आया। उसने सातों थाली का खाना खा लिया। और पानी पीने के लिए पीपे की तरफ आ गया। पानी भी सारा पी गया। फिर उसकी नजर डरी हुई बीरा पर पड़ी। जो कि दुबक कर बैठी थी। राक्षस का पेट इतना भर गया था कि उससे चला भी नहीं जा रहा था। उसने बीरा को उठाया और उसे पूरा निगल गया। और वहीं पर सो गया।

लोककथा पर आधारित

जब बीरा के भाई लौटे तो उन्होंने बीरा को ढूंढ़ा और राक्षस को सोते देखा, तो उन्हें शक हुआ। वे समझ गए कि उनकी बहन को राक्षस खा गया है। उन्होंने तुरन्त राक्षस के हाथ पैर काट डाले। फिर उसका पेट फाड़ डाला। राक्षस मर गया। और उसके पेट से बीरा भी बाहर निकल आई। इसके बाद वे भाई बहन सुखपूर्वक रहने लगे। अब जब भी वे कभी बाहर जाते तो कोई न कोई भाई बीरा के पास रहने लग गया। कुछ दिनों बाद भाइयों ने एक अच्छा सा वर खोजकर बहन का विवाह कर दिया। □

■ कौशल्या

बीरा बहन

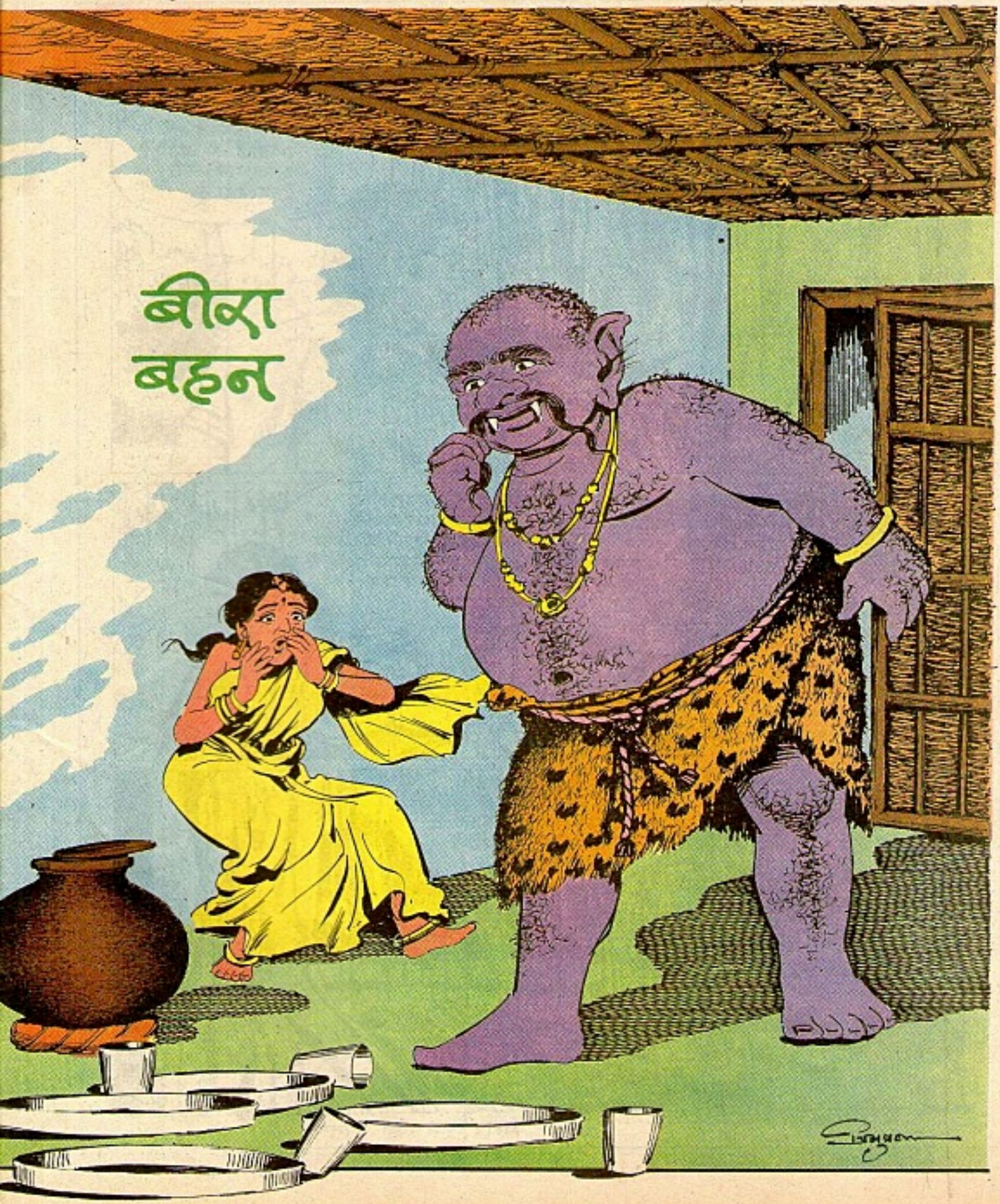

महाभारत

"उसने देखा कि वे सब खाली जमीन पर सो गये हैं. इससे उसे बड़ी वेदना हुई. वह कह उठा:
धिक्कार है मुझे जो अपनी मां और भाइयों को नंगी जमीन पर सोते देख रहा हूं.
कुन्तिभोज की लाड़ली बेटी, विचित्र-वीर्य की बहू और राजा पाण्डु की पटरानी कुन्ती आज धूल-भरी भूमि पर सो रही है!
साक्षात् धर्म, वायु और इन्द्र से पुत्र प्राप्त करने वाली, राजप्रासादों में फूलों की सेज पर आराम करने वाली कुन्ती आज निरी धरती पर सो रही है.
हाय! क्या इससे भी बढ़ कर कोई दुःख हो सकता है कि इन नरपुंगवों को मैं नंगी जमीन पर सोते देख रहा हूं!

ईर्ष्या से कुल को कलंकित करने वाले भाईबंद जिसके न हों, वह सुखी रह सकता है. वह गांव के एक मात्र फलवाले वृक्ष की तरह होता है – सब उसे चाहते हैं, पूजते हैं.

वह मनुष्य भी सुखी रह सकता है, जिसके बहुत-से भाईबंद हों किंतु सब न्यायपरायण और वीर हों.

जो वीर हैं, ऐश्वर्यवान हैं, जिनके मित्र और भाईबंद बहुत सारे हैं, वे वन के विशाल वृक्षों की भांति होते हैं.

और एक हम हैं जो धृतराष्ट्र और उसके बेटों द्वारा खदेड़े जा कर, जलते मकान में से किसी तरह बच निकल कर यहां आ पड़े हैं!

अरे ओ दुर्योधन, तेरी आंखों पर परदा पड़ा हुआ है. तू इस भ्रम में है कि देवता तेरे पक्ष में हैं.

किंतु जान ले, यदि तू जीवित है तो केवल इसलिए कि युधिष्ठिर भैया तुझपर क्रुद्ध नहीं हैं, तुझे मार डालने की आज्ञा मुझे नहीं देते.

नहीं तो मैं मारे क्रोध के तुझे, तेरे भाइयों को, तेरे मित्र कर्ण और तेरे मामा शकुनि को कभी का यमलोक भेज चुका होता.
"यह कहते हुए भीम ने हथेलियां मलीं और लंबी सांस छोड़ी. फिर सोचा.
जंगल के पास निकट ही कोई शहर होगा.
लो, जब चौकन्ना रहना चाहिए तब ये सब सो रहे हैं! ठीक है, मैं जागता रहूंगा. जब ये लोग नींद से ताजे हो कर जागेंगे, तब इससे अपनी प्यास बुझायेंगे.
यह कह कर भीम अकेला ही बैठा जागता रहा.
इस तरह विदुर की सहायता से पांडव वारणावत में कौरवों के षड्यंत्र के शिकार होने तथा आग में भस्म हो जाने से बच कर निकल गये.
इसके साथ वैशम्पायन द्वारा सुनाये गये व्यास-रचित अमर इतिहास महाभारत के हमारे प्रस्तुतीकरण का आठवां खंड समाप्त होता है. □□

क्या है फफूंद?

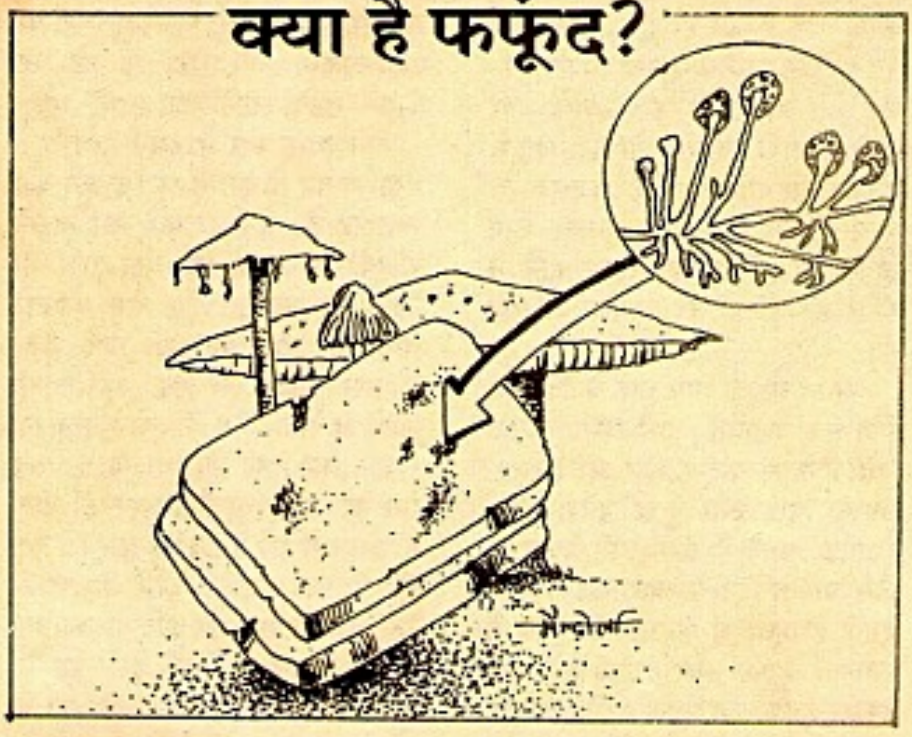

बरसात अपने साथ तरह-तरह के अचरज पैदा करने वाले जीव-जन्तु, कीट-पतंग, वनस्पतियों को लेकर आती है। सच तो यह है कि हर साल बरसात हमारे ज्ञान को बढ़ाने के लिए भूली-बिसरी चीजों, जीवों और घटनाओं से हमें मिलाती है, हमारी कुछ नया, अनोखा और रोमांचक जानने की रुचि को बढ़ाती है।

मैदानों में दूध की तरह सफेद पक पानी से नम छातों को मोटी छड़ी जैसी टेक लगाए, तुमने देखा होगा। हां, इन्हें तुम 'कुकरमुत्ता' कहते हो न! इस 'कुकरमुत्ते' के ऊपर हमारे देश की प्रख्यात कवि-विभूति सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने खासी लंबी कविता ही लिख डाली थी।

इन छाता ताने खड़े कुकरमुत्तों के बारे में कुछ जानना दिलचस्प होगा न!

सच तो यह है कि कुकरमुत्ते हमारे वनस्पति जगत की सबसे नीचे की कक्षा में रखे गए हैं। इसका भी खास कारण है।

सबसे निचले दर्जे की वनस्पति है फफूंद! हां, वही फफूंद जिसे तुम गंदगी समझते हो। जूते- चप्पलों, कपड़ों, अचार, बासी भोजन, डबल रोटी में जो सफेद, हरा-नीला पावडर-सा जमा नजर आता है- यह फफूंद है। और 'कुकरमुत्ता' फफूंद का ही एक बहुकोशिकाओं वाला रूप है।

बहुरूपिया फफूंद का यह सबसे सुन्दर रूप है 'कुकर मुत्ता' यह पेनसिलीन देने वाली 'पेनीसीलियम' फफूंद का रूप है। कई कुकुरमुत्ते तो 'फुटबाल' के बराबर आकार के होते हैं।

इनका रंग सफेद क्यों होता है? तुमने पढ़ा होगा कि हवा, पानी और सूर्य के प्रकाश के साथ पेड़-पौधों की पत्तियां अपना भोजन बनाती हैं। इनमें 'क्लोरोफिल' नामक पदार्थ पाया जाता है। 'क्लोरोफिल' की मदद से ही पत्तियां भोजन बनाती हैं और क्लोरोफिल उन्हें हरा रंग देता है। अब तुम समझ गए होंगे कि फफूंद का यह रूप 'कुकरमुत्ता' इसीलिए सफेद होता है कि इसमें 'क्लोरोफिल' नहीं पाया जाता। इसी कारण ये अपना भोजन खुद नहीं बना पाते। कई बार फफूंद के कई रूप रंग-बिरंगे दिखते हैं। इसका कारण इनके रंगीन बीजाणु हैं। फफूंद तो आमतौर पर बिना रंग की ही होती है। दूसरों के भरोसे भोजन बनाने वाली फफूंद जीवित और मरी हुई चीजों, जानवरों, खाने की चीजों पर अपने आपको उगाकर भोजन बनाती है। अपना भोजन बनाने के लिए इसके शरीर में 'एन्जाइम' होता है। यह 'एन्जायम' उन चीजों में घुल जाता है जहां फफूंद जमती है। फफूंद का शरीर सोंख लेने की भारी क्षमता रखता है। इसी कारण 'एन्जायम' से बने घोल को फफूंद सोंखकर अपनी भूख मिटाती है। अब तुम भलीभांति समझ गए होंगे कि 'कुकरमुत्ते' बरसात के दिनों में क्यों उगते हैं।

यद्यपि फफूंद बड़ा नुकसान पहुंचाती है। क्योंकि यह दूसरों का भोजन खुद हड़प जाती है। गेहूं, आलू जैसी खाने की चीजों को तो ये पूरी तरह नष्ट कर देती हैं। वास्तव में ये आलसी, कामचोर और दूसरों का हक खाने वाली हैं। पर ये मुफ्त की सफाई कर्मचारी भी हैं। तमाम जीवित, मरी, सड़ी-गली चीजों को खाकर साफ कर देती हैं। कई खाने की चीजें जो सड़ाकर बनाई जाती हैं- फफूंद के द्वारा खमीर उठाने वाली एक कोशिका की 'यीस्ट' इसी का रूप है। यह 'यीस्ट' की ही करामात है जिससे डबल रोटी, जलेबी बनती है। कई तेज असर दवाएं भी फफूंद से ही मिलती हैं।

कुकुरमुत्तों के बहाने मिली यह नई जानकारी तुम्हारे लिए कितने काम की है। अब बेचारी फफूंद को गंदगी ही तो नहीं मानोगे। किसी न किसी रूप में फफूंद हमारी नाश्ते की 'डिश' बनाने में बड़ी मददगार है। तभी तो हम रोज सवेरे डबल रोटी, जलेबी खा पाते हैं। □

■ देवेन्द्र कुमार पाठक

कहानी "बसेरा"

मैं प्रतिदिन टहलने के लिए बस स्टॉप रोड़ की तरफ जाता था। उसका कारण यह था कि बस स्टॉप रोड़ के सामने वाली सड़क पर दोनों तरफ बाएं और दाएं हरे-हरे पेड़ों की कतारें लगी थीं। सड़क के किनारे-किनारे पर नीम, शीशम, बरगद, शहतूत के पेड़ उगे थे और उन्हीं के पीछे आम, अमरूद, बेल और गुलाबों के बगीचे थे। जब मैं उधर से गुजरता था और हवा के स्पर्श को पाकर जब सभी पेड़ मस्ती से झूमते थे तो मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मानो भोर की बेला में कोई गीत गुनगुना रहे हों। तब मेरी खुशी का कोई पारावार नहीं रहता था- घंटों मैं सड़क के किनारे बने पत्थर पर बैठकर पेड़ों से निहार, करता था। समीप ही एक बरगद का पेड़ था उस पर तमाम पक्षी अपना-अपना डेरा डालते थे कुछ स्थायी और कुछ अस्थायी रूप से। भोर की बेला में उनकी चहचहाहट और कलरव व कोयल की मीठी धुन सुनकर ऐसा लगता था मानो सुबह- सुबह कानों में मंदिर की घंटियों की आवाज आ रही हो।

समय बीतता रहा। जाड़े के दिन आ गए। एक कहावत काफी प्रसिद्ध है कि 'चार दिन की चांदनी, फिर अंधेरी रात।' अर्थात सुख और दुःख हमेशा आगे-पीछे चलते हैं ठीक उसी प्रकार से जैसे प्रत्येक दिन के बाद रात अवश्य आती है। हुआ यूं कि एक दिन जब मैं टहलता हुआ उधर पहुंचा तो क्या देखता हूं कि वही पुराना बरगद का पेड़ कुछ लोग काट रहे हैं। मैं कुछ उदास सा उसी पेड़ के पास जा बैठा, वहीं पर एक आदमी और बैठा था जो पेड़ काटने वाले लोगों का साथी था।

मैंने उदास स्वर में उससे पूछा 'क्यों भैया, ये पेड़ तो हरा है आप इसको क्यों काट रहे हैं? इस पर पता नहीं कितने पक्षियों ने अपना घर बना रखा है। उनके घर उजाड़ते हुए क्या आपको थोड़ी सी भी दया नहीं आती है?'

उस आदमी ने मुझे अजीब सी नजरों से देखा, जैसे मैंने कोई बचकाना सवाल कर दिया हो। वह बोला 'बाबू मेरा पेड़ काटना पुश्तैनी धन्धा है। ठीक है, अगर मैं इस पेड़ को न काटूं तो क्या इस पेड़ का मालिक दूसरे आदमी से नहीं कटवाएगा। और पक्षियों का क्या वे अपना घोंसला किसी दूसरे पेड़ पर बना लेंगे- इसमें दया की क्या बात है। घोंसले तो बनते- बिगड़ते ही रहते हैं।

एक नेता की तरह उसने अपना भाषण मुझे सुना दिया। उस व्यक्ति की बातों में सच्चाई थी इसीलिए मुझे कुछ देर के लिए चुप हो जाना पड़ा था। फिर

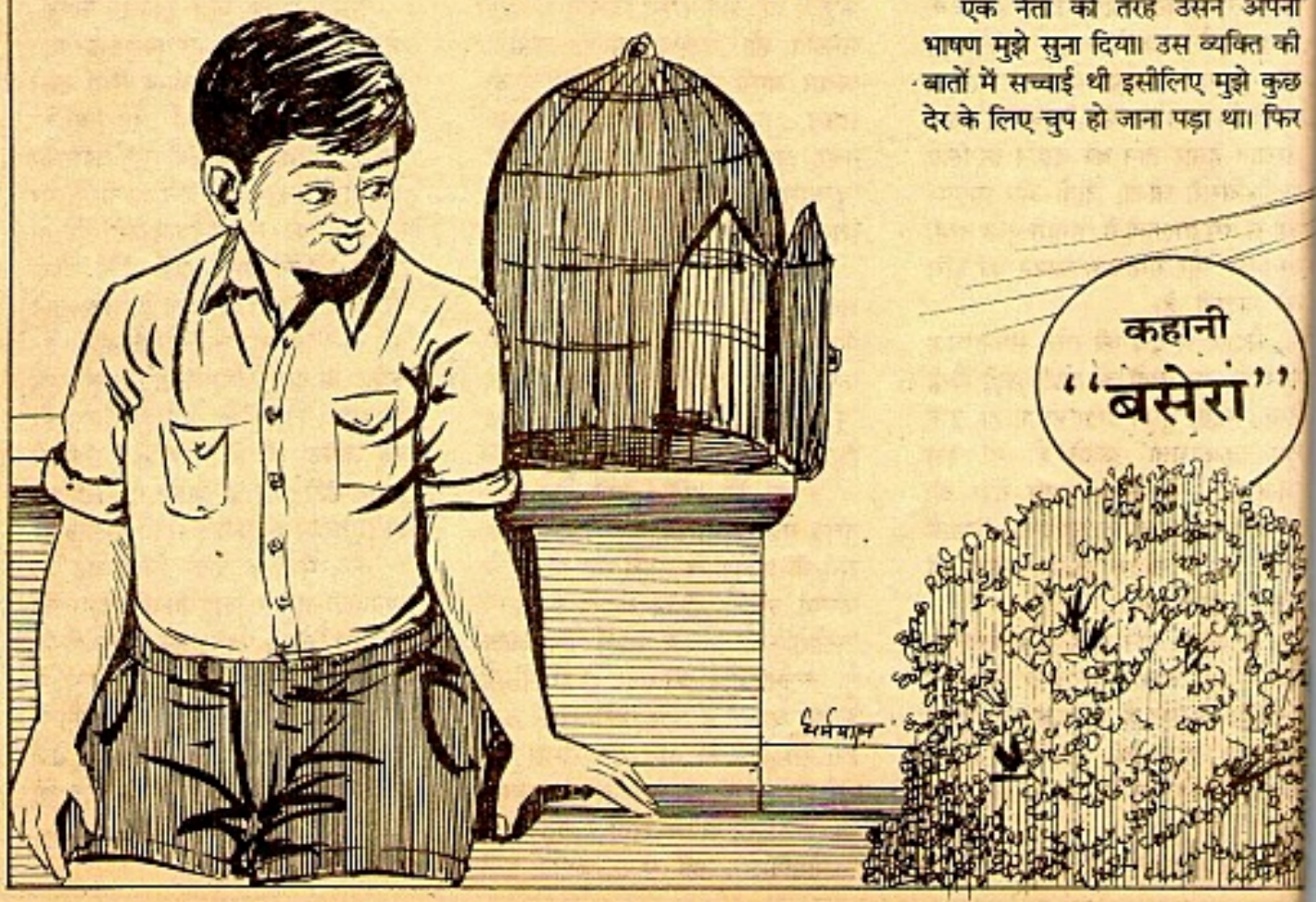

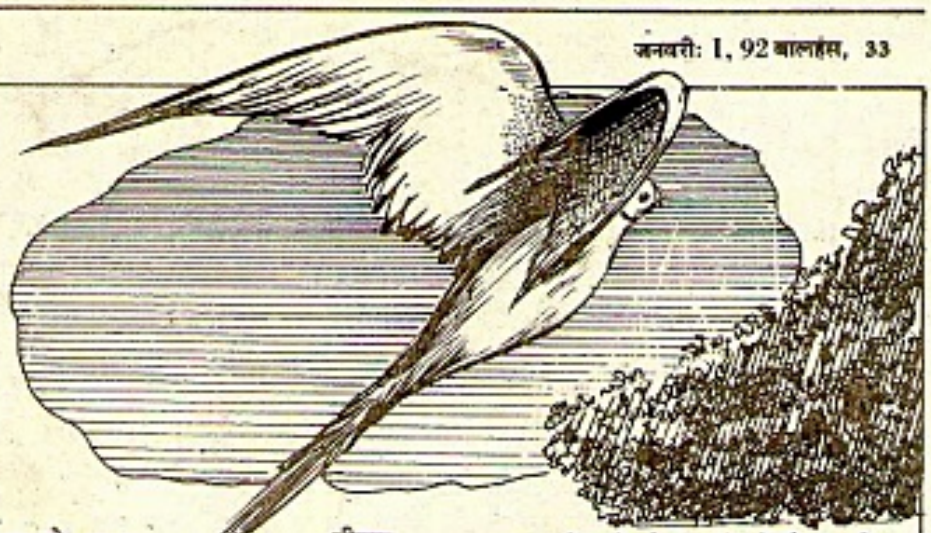

मैं उससे काफी देर तक इधर-उधर की बातें करता रहा। लेकिन इस बीच मेरी आंखों और कानों को पिछली बार जैसा कलरव, चहचहाहट और कोयल की मधुर आवाज सुनायी नहीं दी और न ही आंखों ने पहले जैसा समा देखा वहां पर। थोड़े बहुत पक्षी आसपास के पेड़ों पर बैठे चुपचाप बरगद के पेड़ को कटते हुए देख रहे थे। समीप ही एक नीम के पेड़ की डाल पर एक तोता-मैना का जोड़ा बैठा कटते हुए बरगद को बड़े ध्यान-पूर्वक देख रहा था। कभी मैना जोर से चहचहाती थी तो उसके जवाब में तोता भी टांय-टांय कर कुछ कहता था। मुझे ऐसा लगा मानों बरगद के पेड़ पर इनका कुछ छूट गया है, इसीलिए तोता-मैना इतने ध्यान-पूर्वक इस पेड़ को देख रहे हैं। मगर क्या हो सकता था? मेरे दिमाग में एक प्रश्न उठा। मैं सोचने लगा या तो घोंसला हो या इनके अण्डे बच्चे होंगे।

कुछ पक्षी पंख फड़फड़ाकर उड़ गए थे शायद दाना-पानी की तलाश में या फिर नयी जगह और नया बसेरा करने के लिए। मगर वह तोता का जोड़ा अब भी अपनी जगह पर अडिग बैठा था। थोड़ी देर बाद बरगद के पेड़ की एक मोटी शाख कटकर जमीन पर 'धड़ाम' से आ गिरी थी। मगर मुझे पेड़ की शाखा गिरने की आवाज के साथ एक आवाज और सुनायी पड़ी थी। किसी नवजात पक्षी की आवाज थी वह। उस आवाज को सुनकर तोता और मैना भी टांय-टांय करने लगे। मैंने पत्तों के झुरमुट में से उनको निकाला, वास्तव में ये तोता-मैना के बच्चे थे। अपने बच्चों को देखकर दोनों फिर टांय-टांय करने लगे थे। मुझे ऐसा लगा, मानो वे दोनों मुझसे कह रहे हों कि मैं उनको पाल लूं।

कुछ सोचकर दोनों बच्चों को मैं घर ले आया। दीवार में बने आले में मैंने एक छोटा सा तिनकों से चुनकर घोंसला बनाया लेकिन वह पक्षियों जैसा घोंसला न बन सका था। लेकिन फिर भी उन दोनों बच्चों के लिए पर्याप्त था। एक दिन मैंने तोता-मैना को अपने घर में उसी आले के सामने बैठा पाया। वे दोनों अपनी भाषा में बात कर रहे थे। मुझे देखते ही दोनों टांय-टांय आवाज करते हुए उड़ गए। फिर दोबारा मैंने उनको कभी अपने घर में नहीं देखा। मेरे घर में मेरी एक छोटी सी भांजी थी नाम था टीनू। वह अक्सर चिड़ियों के पीछे-पीछे दौड़ा करती थी। कई बार उसने मुझसे तोता लाने के लिए कहा था मगर हमारे शहर में पक्षी नहीं बिका करते थे। इसीलिए हम उसको टाल जाया करते थे। तोते के बच्चों को देखकर वह बहुत खुश हुई थी। वह प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम को उन बच्चों को बाजरा आदि का दाना चुगाया करती थी। उसे स्वयं के खाने-पीने की चिन्ता न थी मगर तोते के बच्चों के खाने-पीने का हमेशा ध्यान रखा करती थी। वह अपनी तोतली भाषा में मुझसे पूछती- 'मामा-मामा ये बच्चे कब तक बड़े होंगे।'

और मैं उसे समझाता था कि 'प्रत्येक चीज समय के साथ आगे बढ़ती है लिहाजा बच्चे भी अपने समय के साथ बड़े होंगे।'

'जब ये बड़े हो जाएंगे तो मैं इनको पढ़ाया करूंगी। मैं इनमें से एक का नाम रखूंगी मिट्ठू और दूसरे का नाम खट्टू।' वह बताती थी मैं उसकी हरकतों को देखकर मंद-मंद मुस्कराता रहता था।

समय पंख लगाकर अपनी गति से उड़ता रहा। दोनों बच्चे बड़े हो गए थे, उड़ने भी लगे थे। मगर उनके पंख अभी इतने ज्यादा मजबूत नहीं हो पाए थे कि अपनी गति के साथ दूर तक उड़ सकें।

एक दिन टीनू ने मुझसे पिंजरा लाने के लिए कहा ताकि उनको पिंजरे में बंद कर सके जिससे बड़े होने पर किसी अन्य जगह उड़कर न चले जाएं।

मैंने उसे समझाया, 'आजादी सब-को प्यारी होती है। अगर तुमको एक कमरे में बंद कर दिया जाए और खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें दी जाएं तो क्या तुम उन चीजों के लिए कमरे में बंद होकर रहना पसंद करोगी?

'नहीं मामाजी!' टीनू बोली।

'ठीक इसी प्रकार पक्षी भी कैद में रहना पसंद नहीं करते हैं।'

धीरे-धीरे दोनों बच्चे बड़े हो गए और एक सुबह दोनों उड़कर चले गए। फिर वापिस नहीं आए। टीनू ने उस दिन न कुछ खाया न पीया। दिन भर तोतों के लौटने की राह देखती रही।

दोनों बच्चे अब बड़े होकर नए बसेरे की तलाश में निकल पड़े थे। □

■ राजीव कश्यप

गप्प कथा: 1

छगन चाचा की शेरनी मां

बच्चों की आदत होती है कि जब काम-धाम न हो तो कहानी सुनने की जिद्द करते हैं। छगन चाचा हर वक्त उन्हें मामूली कहानियां सुनाया करते थे। कभी पतंग की तो कभी मुर्गे की तो कभी गधे की। परन्तु बच्चे कुछ भयानक, आश्चर्यचकित कर देने वाली साहस कथा सुनना चाहते थे। वे छगन चाचा से जंगल की कहानी सुनाने की जिद्द करने लगे।

छगन चाचा बोले, 'यह बात है! तो सुनो– 'मेरे पिताजी शिकार के बड़े

शौकीन थे। एक बार मेरे माता-पिता मुझे लेकर जंगल में शिकार खेलने गए। मैं तब बिलकुल छोटा, नन्हा-मुन्ना, पांच साल का बच्चा था।

उस भयानक अंधकारमय जंगल में पिताजी घोड़े पर चढ़कर, पीछे मां व मुझे बिठाकर शिकार खेल रहे थे। अचानक एक पत्थर से ठोकर खाकर घोड़ा लड़खड़ाया और हम सब घोड़े से नीचे गिर पड़े।'

एक बच्चे ने बात काटकर कहा, 'फिर क्या हुआ चाचा?' चाचा बोले, 'मेरे माता-पिता तो किसी प्रकार संभल गए पर मैं लुढ़कता हुआ एक खाई में जा गिरा। अंधेरी खाई में जब गिरा तो मेरे चोट नहीं आई, मैं किसी नरम-नरम चीज पर गिरा था। मैंने देखा, कि एक शेरनी और उसके तीन बच्चे आराम कर रहे थे। मैं उन पर जा गिरा तो सब दहाड़ उठे। मैं बेहोश!

दूसरे दिन मुझे उनकी अदालत में ले जाया गया। जहां न्यायाधीश की जगह सिंह बैठे थे। सियार खड़े होकर बोला, 'श्रीमान, हम जानवर निर्दोष होते हैं फिर भी मनुष्य हमें मार डालते हैं। जंगल के जंगल तबाह कर देते हैं। हमारे कितने ही भाई-बन्धुओं की सम्पूर्ण जाति ही आदमी ने नष्ट कर दी। यही नहीं, हमें पिंजरे में बंद करके हमारा तमाशा बनाते हैं। हमारा व्यापार करते हैं। आदमी के इस बच्चे को हमें कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए।'

फिर हाथी बोला, 'नहीं श्रीमान, माना कि मनुष्य जाति हमारी दुश्मन है। हमें बोझा ढोने पर मजबूर करती है। परन्तु हमें शान्ति का पथ छोड़कर बदले की भावना से कोई काम नहीं करना चाहिए। फिर जानवर और मनुष्य में अन्तर ही क्या रह जाएगा? यदि हम भी ईर्ष्या, द्वेष व क्रोध जैसे तत्वों को ग्रहण करेंगे तो हम भी मानव के समान बन जाएंगे।'

हाथी की बात से सिंहराज प्रभावित हुए। बोले, 'आदमी के इस बच्चे को हम मारेंगे नहीं बल्कि शेरनी अपने पास रखकर पालेगी। इसकी देखभाल करेगी और जब यह बच्चा जाना चाहेगा, इसे जाने दिया जाएगा।

सिंहराज के हुक्म से मैं वहीं रहने-पलने लगा। मैं शेरनी के बच्चों के साथ खेलता, जंगल के अन्य जानवर भी मेरे साथी बन गए थे। फिर एक दिन जब मैं बड़ा हो गया तो गांव वापिस आ गया।

छगन चाचा ने अभी इतना ही कहा था कि तभी कुछ बच्चे भागते हुए आए, 'भागो, भागो, अपने- अपने घरों में घुस जाओ। जंगल से एक बूढ़ी शेरनी गांव आते देखी गई है। खतरे की घड़ी है। सरपंचजी पुलिस को खबर करने गए हैं....' कहते हुए बच्चे भाग गए। छगन चाचा भी उठ खड़े हुए।

तभी बच्चों ने कहा, 'अरे छगन चाचा, आप कहां भाग रहे हैं? चाचा बोले, 'क्यों सुना नहीं, कोई शेरनी गांव में घुस आई है। जाओ... भागो.... तुम सब भी अपने-अपने घर में छुप जाओ।'

'मगर आप क्यूं डर रहे हैं छगन चाचा? हो सकता है, यह बूढ़ी शेरनी आपकी वही शेरनी मां हो और आपसे मिलने आ रही हो।' बच्चों ने हंसते हुए कहा। एक बच्चा बोला, 'आप छिप जाओ चाचा, हम आपकी माताजी का स्वागत करने को यहीं खड़े हैं.....।'

हवा में फिर ठहाका गूंज उठा। □

■ **रेशमी मुखर्जी**

गप्प कथा: 2

छगन चाचा का खरबूजा

एक बार छगन चाचा शाम को आंगन में चारपाई पर बैठे सुस्ता रहे थे। तभी अचानक बारिश की बूंदें गिरने लगीं। वे जल्दी से चारपाई समेटकर अपने कमरे में आए तो देखा बच्चे तो पहले ही अपना आसन जमाकर बैठे थे। छगन चाचा भी तैयार होकर बैठ गए।

बारिश बहुत तेज हो गई। एक बच्चे ने पूछा, 'चाचा, मूसलाधार बारिश हो जाए और नदी में बाढ़ आ जाए तो.... तो क्या होगा?'

छगन चाचा बोले, 'बच्चो, तुम क्यों फिक्र करते हो? तुम्हारे छगन चाचा अभी जिन्दा हैं। फिर कुछ सोचकर बोले, 'वैसे बीस साल पहले अपने गांव की नदी में बाढ़ आई थी। तब सब गांव वालों को मैंने ही बचाया था।' बच्चों ने आश्चर्य से पूछा, 'वो कैसे?'

छगन चाचा पहले थोड़ा मुसकराए फिर हंसकर मूंछों को ऊपर उठाते हुए बोले, 'चलो, तुम्हें आज मैं वही घटना सुनाता हूं। छगन चाचा ने डिब्बे में से एक पान उठाकर मुंह मे दबाया और हुक्के का लम्बा कश लेते हुए बोले, 'हुआ यूं बच्चो कि एक बार गांव में

शेष पृष्ठ ४० पर

हारू मामा

■ विश्वनाथ मुखर्जी

इण्टर की शिक्षा समाप्त कर लेने के बाद बड़े भाई साहब ने आगे की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद विश्व विद्यालय में जाने का निश्चय किया। इलाहाबाद में हमारा ननिहाल था। पिताजी की इच्छा नहीं थी, पर मां तथा मामा के दबाव के कारण वे राजी हो गए।

जिस दिन भाई साहब इलाहाबाद रवाना हो रहे थे, उस दिन सबसे छोटे भाई नन्हें ने मिठाई का एक डिब्बा देते हुए कहा- "मिण्टू दादा, अपने साथ लाल पेड़े का यह डिब्बा लेते जाओ। पता नहीं, इलाहाबाद में मिले या न मिले।"

इन्दु ने कहा- "जब यह डिब्बा खत्म हो जाएगा तब मिण्टू दादा को लाल पेड़ा कहां मिलेगा।?"

घर के सभी लोगों को यह मालूम है कि मिण्टू भाई लाल पेड़ा बहुत पसंद करते हैं। शायद ही ऐसा कोई दिन होगा जब हम लोगों को पेड़ा न देते हों। नन्हें और इन्दु की बातों से उनका चेहरा उदास हो गया। उन्होंने कहा- "नन्हें भाई, अब हम इसमें से थोड़ा- थोड़ा खायेंगे। जब खत्म हो जाएगा तब आप फिर भेज दीजिएगा।"

नन्हें ने कहा- "हम रोज भेजेंगे।"

इन्दु ने पूछा- "कैसे भेजोगे?"

अब नन्हें साहब सोचने लगे। कुछ देर बाद मिण्टू दादा रिक्शे पर सवार होकर स्टेशन चले गए। हम सब यह जानते थे कि मिण्टू दादा लाल पेड़ों के आगे और कोई मिठाई नहीं खाते। सभी लोग मिठाई भेजने के बारे में सोचते रहे, पर कोई उपाय नहीं सूझा।

तभी बुलबुल ने कहा- "हारू मामा तो रोज इलाहाबाद से आते हैं।"

हमारे हारू मामा डाक विभाग में काम करते हैं। वे इलाहाबाद से गोरखपुर जाने वाली डाकगाड़ी में जाते हैं। हर स्टेशन पर डाक लेते और देते हैं। कभी-कभी हमारे घर ठहर जाते हैं। एक दिन हम स्टेशन गए और उनसे मिले।

हमारी समस्या सुनकर उन्होंने कहा- "यह कौन सी बड़ी बात है। तुम मिठाई का डिब्बा दे देना। मैं मिण्टू को दे दूंगा।"

मामाजी की बातें सुनकर हम लोग प्रसन्न हो गए। अब मिण्टू दादा को नित्य लाल पेड़ा खाने को मिलेगा। हमने उन्हें यह खुशखबरी दे दी। हर दूसरे दिन हम स्टेशन जाकर मामाजी को मिठाई का डिब्बा दे देते थे। प्लेट फार्म का टिकट तथा कभी-कभी रिक्शे के पैसे जरूर खर्च हो जाते थे, पर डाक पार्सल से कम खर्च होता था।

कुछ दिनों बाद बड़े भाई का पत्र आया कि आजकल पेड़े कम क्यों भेजते हो? क्या भाव महंगा हो गया है? भाई साहब का यह पत्र पाकर हम चौंक गए। पूरे 250 ग्राम पैक करके भेजा जाता है। आखिर बीच में कैसे गायब हो जाता है?

बुलबुल ने कहा- "कहीं मामाजी दो-चार खा तो नहीं जाते?"

हारू मामा पेड़ा खा जाएंगे, इस पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन नन्हें भाई को कौन समझाए। स्टेशन पर उन्होंने मामा से पूछा- "क्यों मामा, आजकल हमारे पेड़ों पर हाथ साफ करने लगे हो?"

शेष पृष्ठ 8 पर

विज्ञान कथा

पानी तेरे रूप अनेक

■ मनमोहिनी

मम्मी देखो देखो, भैया ने अंडा तैरा दिया पानी में, मम्मी हमारा अंडा तो तैर ही नहीं रहा है। डालते ही पानी में नीचे चला गया। भैया हमें बता ही नहीं रहा है मम्मी कि इसका अंडा कैसे तैर रहा है। मम्मी भैया से कहो न हमें भी सिखा दे, हम भी अपनी सहेलियों को यह खेल दिखाएंगे।

रश्मि एक धार में बोले चली जा रही थी। मम्मी रसोई में दूध गर्म कर रही थीं। रश्मि के शोर के बीच उन्हें डर था कि जरा भी ध्यान इधर- उधर होते ही दूध उफन कर बाहर आ जाएगा। पल्लव और रश्मि नाश्ते की मेज पर

जाने क्या खटर पटर किये जा रहे थे।

दूध में उबाल आने के बाद मम्मी ने गैस बंद की। दूध पर जाली ढकी और दोनों बच्चों के पास पहुंच गई, थोड़ा-दूध गर्म करके वह बच्चों को पहले ही दे चुकी थीं। उन्होंने देखा कि सच ही पल्लव ने पानी पर अंडा तैरा दिया है। पूछने पर उसने शान दिखाते हुए कहा कि मैं तो इसे पानी के बीच में भी तैराये रख सकता हूं और पानी डालने पर भी यह जहां का तहां तैरता रहेगा। उसके पास प्लास्टिक की पिचकारी वाली शीशी थी। उससे उसने गिलास के किनारे- किनारे धीरे-धीरे पानी डालते हुए गिलास को काफी ऊपर तक भर दिया। वाकई अंडा अब बीच में तैर रहा था। न वह ऊपर आया और न नीचे ही गया। मम्मी को भी मजा आ रहा था इस खेल में।

सीधी सादी मम्मी। उसने तो अपनी मम्मी के घर में कभी अंडा आते हुए भी नहीं देखा था। समझती थी कि अंडा शक्तिदायक होता है इससे उसने कभी भी बच्चों व पति को खाने से रोका नहीं था। आमलेट आदि बनाकर भी दे देती थी। लेकिन खुद खाते हुए उन्हें पता नहीं क्यों हिचकिचाहट होती थी। कहती थीं कि अब इतने पुराने संस्कार खत्म ही नहीं होते।

उधर रश्मि ने फिर मचलना शुरू कर दिया था कि मम्मी भैया से कहो न कि हमें भी सिखा दें अंडा तैराना। पल्लव भी पूरा शैतान है। उसने शर्त रख दी कि आज मम्मी भी हमारे साथ आमलेट खाए तो ही मैं यह जादू सिखा सकता हूं। इतनी कमजोर तो है, हमारे साथ इन्हें भी रोज खाना चाहिए। आजकल दूध भी तो पानी जैसा आता है। एक अंडा ही तो है जिसमें मिलावट नहीं होती। फिर ये अंडे तो एकदम शाकाहारी हैं। उनसे बच्चे तो निकल ही नहीं सकते।

रश्मि ने सोचा कि मम्मी के न मानने पर भैया बात बताएगा नहीं। सो उसने भी मम्मी की साड़ी पकड़ कर उन्हें मनाना शुरू कर दिया। पीछे से पापा की आवाज सुनाई दी, "हमारी बात तो नहीं मानी, अब बच्चों की तो मान लो। हमारे साथ रहकर धर्म तो तुम्हारा सुधरना या बिगड़ना था सो हो गया। क्यों नहीं बच्चों की इतनी सी बात मान लेती हो?"

आखिर मम्मी तैयार हो गई। पापा भी वहीं बैठकर समझने की कोशिश करने लगे। कामर्स के विद्यार्थी रहे थे और अब उसके ही आंकड़ों में डूबे रहते थे। उनके लिए भी चीज नयी ही थी।

पास रखे दूसरे गिलास को पानी से आधा भरकर पल्लव ने 3-4 चम्मच नमक घोल दिया। पानी के स्थिर होने पर उसने धीरे से अंडा उसमें छोड़ दिया। सचमुच ही यह अंडा भी तैर रहा था। पल्लव ने बताया कि नमक घुलने पर पानी यूं तो सादा ही दिखाई देता है लेकिन उसका घनत्व बढ़ जाता है। घनत्व बढ़ने की वजह से अंडा डूब नहीं पाता, तैरता ही रहता है।

रश्मि ने पूछा कि और पानी डालने पर पहले वाले गिलास में अंडा ऊपर क्यों नहीं आया? इस पर पल्लव ने समझाया कि बाद में डाला गया पानी नमक के घोल से हल्का था सो ऊपर ही रह गया। आगे पल्लव ने बताया कि पानी में नमक जितना अधिक घोला जाएगा, पानी का घनत्व उतना ही अधिक बढ़ता जाएगा, एक कप पानी में यदि 4 चम्मच नमक घोलें और दूसरे कप में 3 चम्मच तो निश्चित रूप से 4 चम्मच नमक वाला पानी 3 चम्मच नमक वाले पानी से भारी होगा। अगर कोई इतने सधे हाथ से ज्यादा भारी पानी पर कम भारी पानी डाले तो बाद वाला पानी उसके ऊपर ही रहेगा।

रश्मि ने कहा- "ऐसा कैसे हो सकता है?, पानी तो पानी है सब मिल जाएगा और न भी मिले तो हमें पता कैसे पड़ेगा।"

पल्लव ने कहा "एक नमूना तो तुम अंडे वाले पानी का देख ही चुकी हो। अंडा बीच में इसीलिए है कि नीचे नमक वाला भारी पानी है और ऊपर सादा- हल्का पानी। अगर स्कूल न जाना होता तो अभी मैं तुम्हें एक रंग-बिरंगा खेल दिखाकर यह सिद्ध भी कर देता। छुट्टी के दिन मैं करके दिखा दूंगा।"

रश्मि को विश्वास होने लगा था कि भैया जरूर कर सकेगा ऐसा ही कुछ। लेकिन जिज्ञासा तो जिज्ञासा ही होती है। एकदम शांत कैसे होती? और प्रतीक्षा करना भी सहज नहीं होता। पूछ बैठी "रंग-बिरंगा खेल कैसे दिखाओगे भैया? थोड़ा बता तो दो। उसके लिए तैयारी भी तो करनी पड़ेगी। अंडा, नमक, पानी तो यहीं रखे थे सो तुमने जल्दी से उसे तैरा दिया।"

नाश्ता करते हुए पल्लव ने कहा "सो तो है उसके लिए कई चीजें चाहिए। मम्मी घर में मिठाई बनाया करती हैं सो खाने के रंग होंगे। अगर ज्यादा रंग हो तो ज्यादा रंग-बिरंगा बना लेंगे हम खेल को। हम ऐसा करेंगे कि एक कप के लगभग पानी में 4 चम्मच नमक घोलकर उसमें किसी रंग की कुछ बूंदें डाल देंगे। उस घोल को हम किसी चौड़े मुंह वाली बोतल- बोर्नविटा वाली चल जाएगी- में डाल देंगे। अब अलग से करीब उतने ही पानी में 3 चम्मच नमक घोलेंगे और दूसरी तरह के रंग की बूंदें डाल देंगे। इस घोल को हम सधे हाथ से धीरे-धीरे पहले वाले घोल के ऊपर डाल देंगे। अलग रंग होने की वजह से साफ दिखाई देगा कि बाद वाला घोल ऊपर ही है। इसी तरह नमक की मात्रा घटाते और रंग बदलते हुए हम बोतल में घोल डालते जाएंगे, चाहे तो सबसे ऊपर सादा और बिना रंग का पानी डालकर एक और तह

शेष- पृष्ठ 77 पर

मूर्ख चोर
बालकिशन शर्मा
रात को एक चोर
उफ्फ.. ताला तो खोल दिया लेकिन.. यह फाटक नहीं खुल रहा है
उफ...
धक्का
फाटक खुल ही नहीं रहा
कम्बख्त
धाड़
धाड़
!?
मूर्ख.. कैसे मेहमान हो एक तो रात को देर से आते हो.. और फाटक भी उल्टा खोल रहे थे
उल्टा
भाग जाओ सवेरे आना
धड़ाम

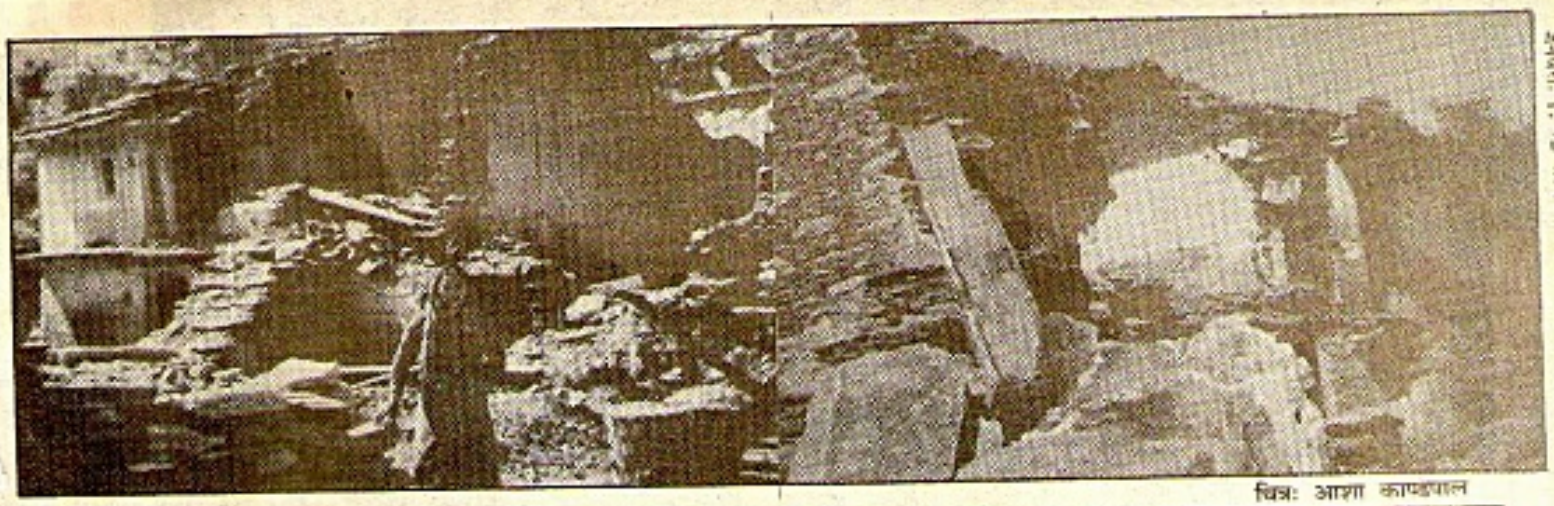

चित्र: आशा कापड़पाल

भूकम्प से तबाही

उन्नीस अक्टूबर मध्य रात्रि के बाद 2 बजकर 53 मिनट का समय उत्तर प्रदेश के गढ़वाल मण्डल में भूकम्प की एक अत्यन्त भयावह एवं आतंकित कर देने वाली दस्तक। अधिकतर लोग घरों के अन्दर से बाहर दौड़ पड़े। पूरे 45-46 सैकण्ड तक दरवाजों- खिड़कियों के टकराने की आवाज भूकम्प की तीव्रता का एहसास कराती रही। इस मण्डल के उत्तरकाशी, चमोली एवं टिहरी जनपदों में तो भूकम्प ने जैसे ताण्डव- नृत्य सा कर दिया। सर्वत्र सभी के चेहरों पर दहशत की एक काली छाया दृष्टिगोचर हो रही थी, जिन क्षेत्रों में भूकम्प का विनाशकारी प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में नहीं पड़ा था, वहां लोग प्रकृति के इस कौतुक का अनुभव करते हुए, एक बार फिर नींद के अंक में सो गए।

प्रातः प्रसार- माध्यमों द्वारा भूकम्प का केन्द्र अल्मोड़ा बताया गया एवं 'रेक्टर स्केल' पर इसे 6.1 मापा गया। कुछ एक भूकम्प- विज्ञानियों द्वारा इसे साधारण स्तर का बताते हुए धन एवं जन के हानि की संभावना को कम बताया गया। लेकिन 20 अक्टूबर की शाम होते-न-होते भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों की एक अत्यन्त भयावह तसवीर सामने आने लगी। चूंकि प्रसार- माध्यमों द्वारा बार-बार इसका केन्द्र अल्मोड़ा बताया जा रहा था। इसलिए कुमाऊं मण्डल, जिनमें अल्मोड़ा, नैनीताल एवं पिथौरा-गढ़ जनपद सम्मिलित हैं, के अधिकांश निवासी अत्यन्त सशंकित मुद्रा में वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यग्र जान पड़ रहे थे। लेकिन विनाश की सूचनाएं केवल गढ़वाल मण्डल से ही आ रही थीं, जिनमें सर्वाधिक प्रभावित जिला विनाश की दृष्टि से उत्तरकाशी लग रहा था।

अधिकांश सम्पर्क मार्ग चट्टानों के खिसक जाने के कारण पूरी तरह से अवरुद्ध हो गए थे। जगह-जगह उनमें काफी बड़ी-बड़ी दरारें आ गई थीं। पुल अकस्मात ही टूटकर नदियों की गोद में जा समाए थे। संचार माध्यम व बिजली लगभग ठप्प से हो गए थे। मकानों की स्थिति तो और भी दयनीय थी। दरवाजों- खिड़कियों के कब्जे तक उखड़ गए थे। मकान की दीवारों- छतों में भी दरारें पड़ गई थी। बाद में भूकम्प के कुछ अन्य झटकों ने इन दरारों को इतना चौड़ा कर दिया कि उनके आरपार सभी कुछ देखा जा सकता था। भूकम्प के इन झटकों का प्रवाह अभी भी नहीं रुका है। फलतः लोग मकानों के बाहर तम्बुओं के नीचे अपनी रातें काटने के लिए मजबूर हो गए हैं।

पूरी तरह ढ़ह जाने वाले मकानों का दृश्य तो अत्यन्त ही हृदय- विदारक था। गांव के गांव श्मशान में परिवर्तित हो गए थे। लाशें मलबों के नीचे पड़ी थीं। घायल असहाय- से कराह रहे थे। कहीं-कहीं तो उन्हें मलबों से निकालने के लिए लोग ही नहीं थे। स्थिति की भयावहता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि ऊपर पहाड़ की चोटियों पर स्थित कुछ एक गांव इस तरह नीचे घाटी में आ मिले थे कि अब उनके वहां होने की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। किसी घर में यदि बूढ़े बचे हैं तो कहीं कोई युवा बचा है। सबकुछ अत्यन्त करुण, भयावह एवं स्तब्ध कर देने वाला। वीभत्स इतना कि दूर अंचलों में स्थित गांवों में कहीं सामूहिक क्रिया-कर्म हुए तो कहीं यह भी संभव नहीं हुआ। लकड़ियों के अभाव में परिजनों ने लाशें यूं ही नदियों में प्रवाहित कर दीं। सम्पर्क मार्गों के अवरुद्ध हो जाने के कारण दूर के स्थानों में लोग यदि मलबों से जीवित निकाल भी लिए गए तो घायलों को तत्काल आवश्यक सहयता ही नहीं उपलब्ध हो पाई। सेना के 'हेलीकाप्टर्स' द्वारा दुर्गम स्थलों में यथासंभव दवाइयों एवं भोजन आदि के पैकेट्स गिराए गए। इनकी भी अपनी सीमाएं थीं।

अब तो स्थितियां और भी विकट होने वाली हैं। शीत का प्रकोप बढ़ने लगा है। बारिश और उसके बाद बर्फ, कितना दुष्कर हो चलेगा इन पर्वतीय अंचलों में जन-जीवन। हम-आप महज कल्पना ही कर सकते हैं। □

■ रमेश चंद्र पंत

अछूती रोचक कहानियां, मधुर कविताएं, जानकारी बढ़ाने वाले लेख, नई प्रतियोगिताएं और मनोरम चित्रकथाएं

हर अंक में कई विशेषताएं

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

पाक्षिक

बालहंस

1992

जनवरी					
रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29

मई					
रवि	31	3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28

बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

फरवरी

रवि		2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

मार्च

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

अप्रैल

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	
शनि	4	11	18	25	

बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

जून

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

जुलाई

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

अगस्त

रवि	30	2	9	16	23
सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

सितम्बर

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

अक्टूबर

रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

नवम्बर

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

दिसम्बर

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

'भूकम्प से तबाही'

बीस अक्टूबर 91 को उत्तर प्रदेश के उत्तरांचल में उत्तरकाशी के अगोड़ा नामक स्थान पर जबर्दस्त भूकम्प आया। भूकम्प से सैकड़ों लोगों की जानें गईं, सैकड़ों घायल हुए। पशुधन की भी भारी हानि हुई।

इन प्रभावित क्षेत्रों से हमारे पाठकों व रचनाकारों ने हमें भूकम्प के अपने अनुभव व घटना का वर्णन आदि लिखकर भेजे हैं।

यहां प्रस्तुत है- 'भूकम्प की तबाही' पर उनके अपने अनुभव।

बीस अक्टूबर को आये भूकम्प ने गढ़वाल के सब लोगों को हैरान कर दिया क्योंकि यह भूकम्प सुबह 2.55 पर आया जब सभी सो रहे थे, मैं भी उस समय सो रही थी। अचानक हमारी चारपाई हिलने लगी। मैंने सोचा शायद मैं कोई सपना देख रही हूं और जब मेरे घर के आसपास के सभी सदस्य उठकर अपने- अपने घरों से निकल कर बाहर आ गए और मेरी मम्मी भी हम सबको कमरे से बाहर ले आयीं तब मैंने समझा कि भूकम्प आया है, हमारे पड़ोस के लोग तो जोर-जोर से रो रहे थे। उनको रोता देखकर मैं भी रोने लगी और भूकम्प समाप्त होने पर सब लोग एक जगह बैठ गए।

सुबह दिन निकलने पर हर जगह पर भूकम्प के बारे में ही चर्चा हो रही थी और उस दिन गढ़वाल में इतना नुकसान हुआ जिसकी कल्पना शायद ही किसी ने की होगी। सबसे ज्यादा नुकसान उत्तरकाशी में हुआ। वहां सबसे ज्यादा जानें गयी और कितने ही घर उजड़ गए।

इसके बाद तो लगभग भूकम्प के झटके आते ही रहे, लेकिन वे महसूस नहीं हुए, हमारे घर की दीवारों में भी दरारें आयीं लेकिन मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं है। मैं तो उन लोगों के बारे में सोचती रहती हूं जो बेघर हो गए हैं। मैं भगवान से यही दुआ करती हूं कि मृत लोगों की आत्मा को शान्ति पहुंचे तथा उनके परिजनों को यह सब सहने की शक्ति दे।

इस कार्य में यहां के लोगों ने भी पूर्ण सहयोग दिया है, ज्यादातर यहां के स्कूलों ने। हमने स्कूलों से चंदा इकट्ठा किया और राहत कार्य के लिए भेजे गए कर्मचारियों को दिया लेकिन मुझे बहुत अफसोस है कि जितना सामान या पैसा उन्हें दिया गया था उसमें से आधा ही जरूरतमंदों तक पहुंच पाया है।

यह मेरा आंखों देखा हाल है जब सरकार की तरफ से हेलिकॉप्टर द्वारा डबल रोटी गिराई जा रही थी तो एक दुकानदार ने अपने नौकरों से डबल रोटी अपनी दुकान में भरवा ली और उन्हें बेचने लगा। लेकिन कुछ सुरक्षा गार्डों ने उसकी दुकान को जब्त कर लिया। इन लोगों के साथ ऐसा ही होना चाहिए। आखिर ये क्यों नहीं सोचते कि अगर यही हाल उनके साथ हुआ होता तो उन्हें दूसरों की तरह ही कितना कष्ट होता।

अब तो राहत कार्य भी तेजी से चल रहा है लोगों में सन्तोष की भावना उत्पन्न हो रही है और सभी के चेहरों पर जो उदासी छायी हुई थी धीरे-धीरे दूर होती जा रही है। लेकिन इतना सब होने पर भला कौन सुख से रह पाएगा और कौन यह सब भुला सकेगा, शायद ही लोग इस कष्ट को भुला पाएंगे। □

■ कु. मंगला पौड़ी गांव [उ.प्र.]

शेष पृष्ठ 54 पर

पश्चिमी राजस्थान में भूकम्प

आठ नवम्बर-91 को पश्चिमी राजस्थान के कई नगरों व गांवों में 6.3 रिक्टर वाला भूकम्प आया लेकिन फिर भी न तो कोई जनहानि हुई और न ही कोई विशेष नुकसान हुआ।

जबकि उत्तरकाशी में 20 अक्टूबर-91 को जो भूकम्प आया था, वह तो 6.1 रिक्टर ही था। जिसने भीषण तबाही मचाई थी।

पश्चिमी राजस्थान में आए इस भूकम्प को तबाही करने से रोकने में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मदद इस क्षेत्र के रेगिस्तानी प्रकृति के कारण मिली। हालांकि तंग मकानों व पथरीली जमीन पर बसी घनी आबादी वाले क्षेत्रों में भूकम्प से काफी नुकसान हो सकता था मगर ऐसा नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण था दशकों पूर्व बुजुर्गों की भवन निर्माण संबंधी दूरदर्शिता व सूझबूझ। उस समय मकानों की मजबूती का इतना ध्यान रखा जाता था कि भूकम्प से हिल जाने के बावजूद दीवारें और इमारतें सही सलामत रहीं। जबकी कई नए मकानों व भवनों में दरारें आई।

जैसलमेर से सटी भारत पाक सीमा के पास जिस सुल्तानपुर क्षेत्र में भूकम्प का केन्द्र था, वहां रेत और कच्छारी भूमि की मोटी परत ने भूकम्प की शक्तिशाली ऊर्जा को काफी हद तक भीतर ही भीतर अवशोषित कर दिया।

भूकम्प की तरंगें ठोस वस्तु के सम्पर्क में आने पर आगे से आगे बढ़ती है लेकिन यहां चूंकि रेगिस्तान है इसलिए रेत जैसी टीली सतह ने उसे बढ़ने से रोका। इसके अलावा यहां पथरीला या चट्टानी क्षेत्र न होने से भूस्खलन भी न हुआ। इसके विपरीत उत्तर काशी में अधिक नुकसान होने का कारण भूकम्प के कारण हुआ भूस्खलन था। इसने इमारतों की नीवों को ही खिसका दिया था। तभी तो वहां तिनकों की तरह मकान, भवन टूट-बिखर गए थे।

रेगिस्तानी क्षेत्र होने के अलावा भारी नुकसान न होने का एक कारण और बताया गया है- इमारतों का पारम्परिक निर्माण कौशल । कहा जाता है कि भूकम्प से होने वाला नुकसान उपरी तीव्रता व अधिकता के अलावा भवनों की निर्माण सामग्री व उसकी तकनीक पर भी काफी निर्भर करता है। जैसे यहां के बुजुर्गों ने किया। वे मकानों की नींव की मजबूती को बहुत अधिक महत्त्व देते थे। एक कारण यह भी माना जा रहा है कि मकानों की दीवारें आपस में सटी होने के कारण वे नहीं हिल पाई। यही नहीं, ऐसी दीवारों में दरारें भी नहीं पड़ी क्योंकि उनके पीछे दूसरी दीवार का सहारा था।

पश्चिमी राजस्थान में आए इतने शक्तिशाली भूकम्प के बावजूद पुराने मकानों, भवनों का सुरक्षित रह जाना भू-विज्ञान और वास्तुकला से जुड़े लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहा है।□

■ 'सुधि'

'चीनू गिलहरी' कहानी प्रतियोगिता में बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। पर अधिकांश बच्चों ने या तो चीनू से बहुत बड़े-बड़े काम करवा दिए या फिर उसकी मजेदार शैतानियां नहीं दिखा सके।

इस प्रतियोगिता में तीन पुरस्कार के अलावा तीन प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए हैं।

प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त कहानियां फरवरी [प्रथम] '92 अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

हमारे नन्हें-मुन्ने पाठकों ने भी पूरा उत्साह दिखाया। कुल प्राप्त 212 कहानियों में से हमने पांच ऐसी कहानियां पसंद की हैं जो दस वर्ष तक के हमारे नन्हें-मुन्ने पाठकों की लिखी हुई हैं।

इन पांच का चुनाव हमने नन्हें मुन्नों द्वारा लिखी 42 कहानियों में से किया है। इनकी कहानियां जनवरी [द्वितीय]' 92 अंक में प्रकाशित की जाएंगी। इन बच्चों के नाम हैं-

1. विकास वार्ष्णेय, 8 वर्ष, चन्दौसी
2. गोधूलि वर्मा, 9 वर्ष, बिलासपुर
3. प्रियदर्शी सारस्वत, 10 वर्ष, कानोड
4. स्वाति गुप्ता, 10 वर्ष, स्योहारा-बिजनौर
5. अनुपमा वर्मा, 10 वर्ष, झुन्झुनू

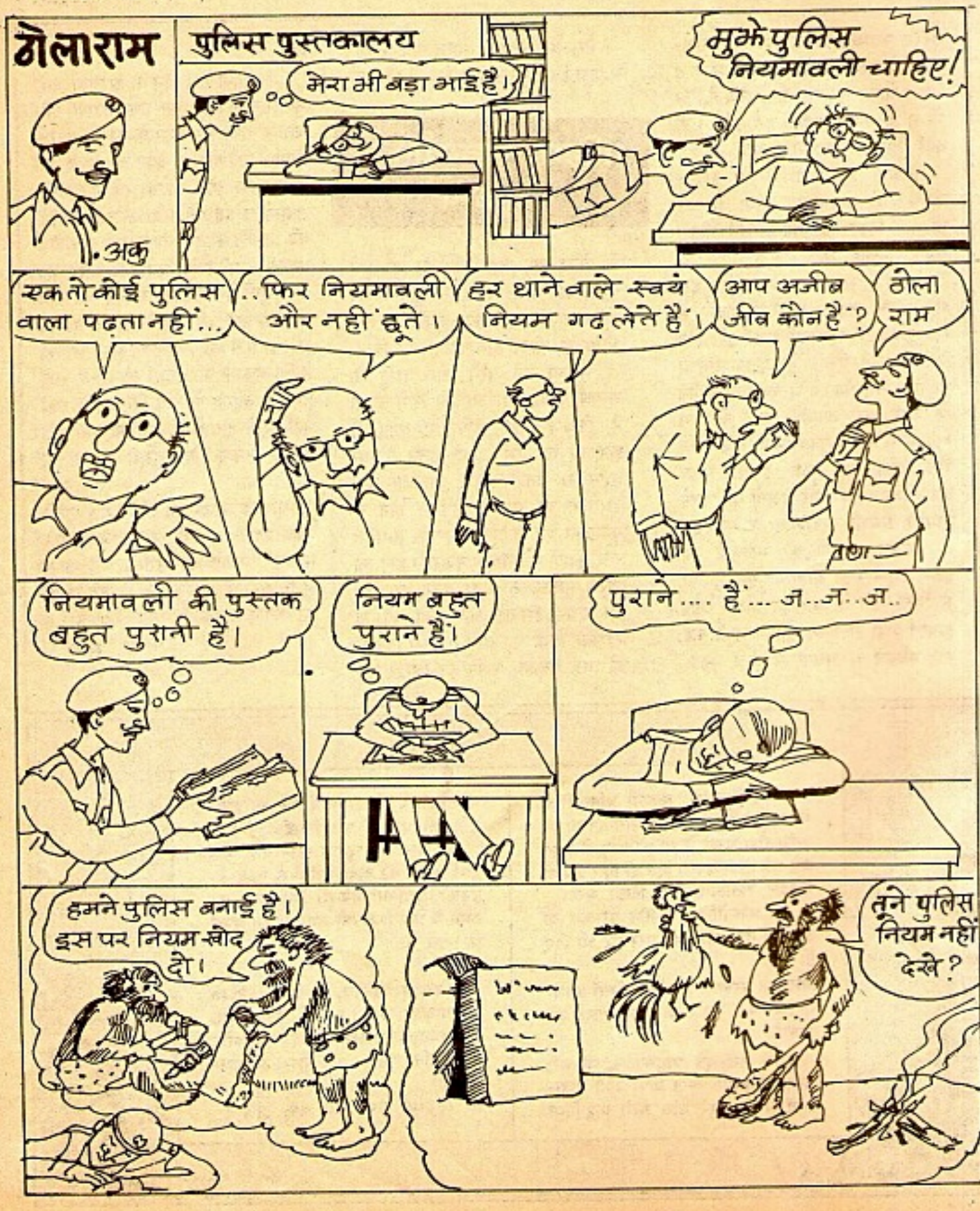
ठेलाराम
अकु
पुलिस पुस्तकालय
मेरा भी बड़ा भाई है।
मुझे पुलिस नियमावली चाहिए!
एक तो कोई पुलिस वाला पढ़ता नहीं...
..फिर नियमावली और नहीं छूते।
हर थाने वाले स्वयं नियम गढ़ लेते हैं।
आप अजीब जीव कौन हैं?
ठेला राम
नियमावली की पुस्तक बहुत पुरानी है।
नियम बहुत पुराने हैं।
पुराने.... हैं... ज..ज..ज..
हमने पुलिस बनाई है। इस पर नियम खोद दो।
तूने पुलिस नियम नहीं देखे?

इस नियमावली को भोजपत्र पर लिखवा लो।
हिमालय की गुफा में सुरक्षित यह भोज पत्र लो।
पुलिस नियमावली!
भोज पत्र से उतार दिया!
जिल्ले इलाही को इसी की तलाश थी।
सर, हिन्दोस्तान से बहोत कुछ मिला हाय। यह फुलिश नेमावली भी।
कापी कर लो।
अंग्रेज भारत छोड़ गए। हमारे लिए बना बनाया पुलिस नियमावली छोड़ गए।
लागू कर दें।
मैं क्या क्या सोचने लगता हूं!
लीजिए सम्हालिए पुलिस नियमावली!
रख दो।
मैं जानता था इसे कोई नहीं पढ़ता। पुलिस वाले तो बिल्कुल नहीं।

खीर का लेप

पुराण कथा

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। युद्ध स्थल में भयानक शांति थी। बस कभी-कभी कहीं से किसी घायल व्यक्ति की कराह सुनाई दे जाती। माता गांधारी अपने सौ पुत्रों को खोकर पाषाण प्रतिमा बनी बैठी थी। रोते रोते उनकी आंखें सूख गई थी। आवाज गले में ही रुक गई थी। मन ही मन उन्हें बड़ा पश्चाताप हो रहा था। अपनी विवशता पर कि अपने पुत्रों को उन्होंने जीवन भर देखा ही नहीं। जन्म दिया तब भी नहीं देखा, पुत्र युवा हुए तब भी नहीं देखा, पुत्रों ने विवाह किया, युद्ध क्षेत्र में प्रस्थान कर गए परन्तु उन्होंने एक बार भी आंखों पर पट्टी उतार कर अपने हृदय के टुकड़ों को आंख भर नहीं देखा। केवल दुर्योधन को ही तो देखा था एक बार। कैसा सुदर्शन व्यक्तित्व था उसका। शेष पुत्र कैसे होंगे- यह प्रश्न आज उन्हें मथ रहा था। उन्हें पता है कि अभी कुछ ही समय बाद उनके सौ के सौ पुत्रों के मृत शरीर अग्नि को समर्पित कर दिए जाएंगे। फिर वह जीवन भर उन्हें देखना तो दूर उनकी कल्पना भी नहीं कर पाएगी। अभी वे इस ऊहापोह में डूब उतरा रही थी कि श्री कृष्ण ने कक्ष में प्रवेश कर प्रणाम किया।

गांधारी अपने मन की बात कृष्ण से छिपा न सकीं और अपनी इच्छा कह बैठीं। कृष्ण ने उनकी आंखों की पट्टी की ओर इशारा किया और कहा- पुत्रों को देखने के लिए इसे तो खोलना होगा मां?

"हां वत्स, आज मैं अपने पुत्रों के शवों को देखने के लिए इसे खोल दूंगी।"

कृष्ण ने रथ द्वार पर लगाया। माता गांधारी पट्टी खोल कर रथ में जा बैठीं। दोपहर का समय था। चारों तरफ तेज प्रकाश था पर उन्हें प्रकाश से क्या लेना देना। उन्हें तो सिर्फ अपने पुत्रों के मुख देखने थे उनका हृष्ट-पुष्ट शरीर निरखना था। बस, पहली और अन्तिम बार उन्हें अपने नयनों से दुलरा लेना था।

रथ तीव्र गति से बढ़ा जा रहा था। सारथी इस बार भी कृष्ण ही थे। कुरुक्षेत्र के विशाल युद्ध स्थल का तो दृश्य ही विचित्र था। शवों के ढेर लगे थे किसी का सिर कहीं तो धड़ कहीं पड़ा था। चारों तरफ टूटे रथ, फटी ध्वजाएं, अस्त्र-शस्त्र, हाथी, घोड़ों के शव... सब ओर केवल शव ही शव। गिद्ध कौओं का तो वहां महाभोज हो रहा था। ऐसे रणक्षेत्र में गांधारी अपने अनदेखे, अनजाने सौ पुत्रों को भला कैसे पहचानती। उनका मन रोष से भर गया। ममत्व का उमड़ता ज्वार गहरे विषाद में बदल गया। इस सारी पीड़ा का कारण एक ही था और वह साक्षात् सामने खड़ा था। उनकी कठोर दृष्टि कृष्ण के ऊपर उठी।

कृष्ण के मंद मंद मुसकराते मुख को देख कर गांधारी का मन हाहाकार कर उठा। उसने दोनों बाहें उठा आकाश की ओर देखा। आज उसके पास कोई संबल, कोई सहारा न था। उसने क्रोधवश कृष्ण को शाप दिया- "यशोदा नन्दन, जिस तरह आज मैं अपने सौ मृत पुत्रों के क्षत-विक्षत शवों को देख रही हूं तुम भी पूरे यादव कुल को इसी तरह समाप्त होते देखोगे और

घृणित मृत्यु को प्राप्त होंगे। कृष्ण ने मुसकरा कर सिर झुका लिया और कहा- "माता जिसने इस भूतल पर जन्म लिया है वह अवश्य मृत्यु को प्राप्त करता है। अतः मैं आपके इस शाप को शिरोधार्य करता हूं।"

समय बीतता रहा। यादव वंश में आपसी झगड़े बढ़ गए। पूरा यादव वंश समाप्त प्रायः था। इन सबसे ऊब कर श्रीकृष्ण एक वन में पीपल के वृक्ष के नीचे जाकर लेट गए। उनका बायां पांव दाहिने पांव पर रखा था। सांवले रंग के, पांव का लोहित तलवा ऐसा दिखाई दे रहा था मानों कृष्ण मृग का मुख हो। व्याध ने तीर का निशाना साधा और लौह बिद्ध तीर सीधा पांव के तलवे में जा घुसा। व्याध को जब अपनी गलती पता चली तो वह दौड़ कर श्रीकृष्ण के चरणों में लौट गया। श्रीकृष्ण ने उसे क्षमा कर दिया। माता गांधारी का शाप पूरा हो गया था।

फिर व्याध का ही दोष नहीं था। वास्तव में उस तीर में लगा लोहा भी तो यादव वंश के विनाश का सूचनक था। यशोदा नन्दन को याद आ रहा था अपना बचपन, जब गोएं चराते हुए कुछ ग्वालों ने ऋषियों से ठिठोली की थी।

उन दिनों विश्वामित्र कुछ ऋषियों के साथ मथुरा से लगे हुए उसी वन में ठहरे थे जहां ग्वाले गाएं चराते थे। एक दिन कुछ यादवों को ऋषियों से ठिठोली करने की सूझी। उन्होंने शम्ब नाम के ग्वाले को स्त्रियों की तरह साड़ी पहनाई और मुनियों के पास ले जाकर पूछा- "ऋषिवर आप तो त्रिकाल दृष्टा हैं। कृपया बताएं इस स्त्री के पुत्र होगा अथवा पुत्री। ऋषि वास्तव में त्रिकालदृष्टा थे। उनसे यह उपहास सहन नहीं हुआ, उन्होंने यादवों को शाप दिया कि इस युवती को लोहे का मूसल पैदा होगा और वही तुम्हारे यादव वंश का समूल नाश करेगा? इस बात से यादव घबरा गए। अपने स्थान पर लौटने पर उन्हें वहां एक मूसल दिखाई पड़ा। अब तो उनकी घबराहट और बढ़ गई। सारे ग्वालों ने मिलकर उस मूसल के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उन टुकड़ों को पानी में बहा दिया। लोहे के वे टुकड़े किनारे जा लगे और व्याध ने उन्हें अपने तीरों में लगा लिया। वही लोहबिद्ध तीर कृष्ण के बाएं तलवे में लगा।

श्रीकृष्ण की मृत्यु की कथाएं सिर्फ इतनी ही नहीं है। एक अन्य कथा भी कृष्ण के देहावसान से जुड़ी है।

एक बार दुर्वासा ऋषि द्वारिका पधारे। कृष्ण व उनकी पत्नी रुकमणी ने उनकी बहुत आवभगत की। शीतल जल से उनके चरण धोए, ससम्मान आसन दिया और नाना प्रकार के व्यंजन भोजन में प्रस्तुत किए।

दुर्वासा, श्रीकृष्ण के इस आदर सत्कार व विनयशीलता से प्रसन्न तो हुए, परन्तु उनके मन में यह संशय भी रहा कि कहीं कृष्ण उनके क्रोधी स्वभाव से डर कर तो ऐसा व्यवहार नहीं कर रहे? अतः उन्होंने उनकी परीक्षा लेनी चाहिए। भोजन करते समय ऋषि ने खीर बड़े प्रेम से खाई और जूठी बची खीर का कटोरा कृष्ण के हाथ में देकर कहा- 'पुत्र इस खीर को अपनी पूरी देह पर मल लो, यह एक अतिथि का आदेश है।"

कृष्ण ने प्रेम से वह कटोरा लिया और खीर मलनी शुरू कर दी। कृष्ण के सहज व्यवहार को देखकर रुकमणी को बहुत गुस्सा आया, यह भी कोई अतिथि की मर्यादा है। वे कृष्ण को आंखों के इशारे से मना करने लगी। जितना वह मना करतीं, गुस्सा दिखाती, कृष्ण उतने ही स्नेह से खीर का लेप करते जाते। धीरे-धीरे जूठी खीर उनके सारे शरीर पर लग गई। उन्होंने ऋषि को प्रणाम किया और कहा- आदेश दें ऋषिवर।

दुर्वासा उनकी विनयशीलता से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने प्रसन्न होकर कृष्ण को वरदान दिया- "तुम्हारे शरीर पर जहां-जहां खीर का लेप लगा है तुम्हारा शरीर वज्र के समान हो जाएगा। इस पर किसी अस्त्र-शस्त्र का असर नहीं होगा।

परन्तु श्रीकृष्ण ने अपने पांव के तलवों पर तो खीर का लेप किया ही नहीं था। अतः मृत्यु ने खीर विहीन स्थान पांव का तलवा खोज ही लिया था।

शापित तीर था, शापित व्यक्ति था,, और शापित समय फिर तो मृत्यु अवश्यंभावी थी। □

■ क्षिप्रा शंकर

शब्द परिचय: 76

जाली वि. नकली, बनावटी

वाक्य: मेरे औजार जाली हैं, मेरी दवा जाली है, मेरा डाक्टरी सर्टिफिकेट जाली है।

जिक्र संज्ञा पु. चर्चा, बातचीत

वाक्य: शेरों की गोष्ठी में खरगोश का जिक्र कर दिया

जिद्दी वि. हठी, अड़ने वाला

वाक्य: बेटे बाप की तरह जिद्दी हैं। नीचे देखकर नहीं चलते।

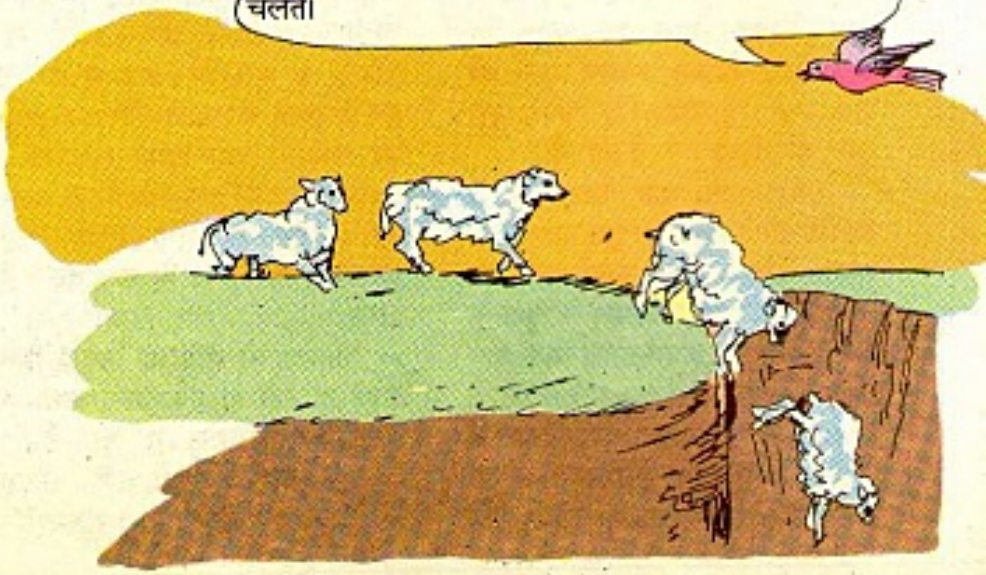

जीतना क्रि.स. विजय प्राप्त करना। फतह पाना।

जीर्ण वि. बहुत पुराना, बहुत बुड्ढा

जीवट संज्ञा स्त्री हिम्मत, हृदय की दृढ़ता

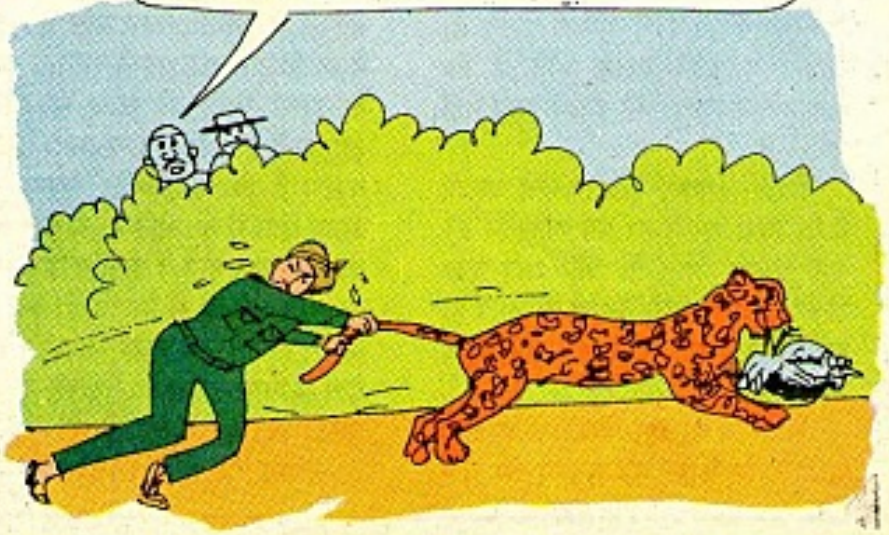

भूकम्प से तबाही

भूकम्प से तबाही नई बात नहीं है। धरती पर मानव के अस्तित्व से पहले भी भूकम्प आए हैं। तब न तो आज जितना विकास था और न ही इतनी तबाही।

जब आबादी वाले क्षेत्रों में धरती कांपती, तो लोग इस घटना से भयभीत होते और तरह-तरह की अटकलें लगाते। यही कारण है कि विश्व में अनेक हिस्सों में भूकम्प के बड़े अजीब कारण बताए गए हैं।

लेकिन भूकम्प का पहला वैज्ञानिक कारण प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने दिया था। अरस्तू का मानना था कि धरती के गर्भ की अनेक गुफाओं में हवा बन्द है। किन्हीं कारणों से जब यह बाहर निकलती है तो उसके वेग और दबाव से धरती कांपने लगती है। जहां कहीं धरती की सतह कमजोर होती है, वह फट जाती है। आज हमें मालूम है कि यह वैज्ञानिक कारण भी गलत है।

भूकम्प का असली कारण धरती की सतह और गर्भ में लगातार होने वाली कुछ क्रियाएं हैं। इसलिए धरती के गर्भ में लगभग हर दिन भूकम्प उठते हैं। लेकिन ये इतने हलके होते हैं कि वैज्ञानिक उपकरण भी इनको भांप नहीं पाते।

पिछले आंकड़े देखें तो पता चलता है कि विश्व भर में हर वर्ष औसतन 21 बड़े भूकम्प आते हैं। और मात्र कुछ सैकंड में ही भयंकर तबाही हो जाती है। हमारे देश में भूकम्प से कोई कम तबाई नहीं होती।

हिमालय के आसपास तक के क्षेत्रों में अब तक आठ बड़े भूकम्प आ चुके हैं। [7.5 रिक्टर तीव्रता से अधिक]।

भूकम्प की तीव्रता रिक्टर स्केल पर मापा जाता है। इस पैमाने पर पांच अंक तक के भूकम्प बहुत साधारण माने जाते हैं। छः से ऊपर तक के विनाशकारी और सात से ऊपर के बेहद विनाशकारी।

भूकम्प की तीव्रता उसकी ऊर्जा, तरंगों के आकार-गति पर निर्भर करती है। ऊर्जा को एक रासायनिक विस्फोटक टी.एन.टी. के तुल्यांक के रूप में मापा जाता है। सात अंक का भूकम्प 90,700 टी.एन.टी. के बराबर ऊर्जा पैदा करता है।

वैज्ञानिकों ने भूकम्प आने के कई कारण बताए हैं। इनमें सबसे अधिक मान्य 'प्लेट टेक्टॉनिक सिद्धांत है। इसके अनुसार धरती की बाहरी परत [50 से 100 किमी. मोटी] 12 छोटी, बड़ी प्लेटों से मिल कर बनी है। यह प्लेटें या पटरे स्थिर नहीं हैं। कुछ सेंटीमीटर प्रति वर्ष की रफ्तार से लगातार एक दूसरे से सट कर चलते हैं। कभी-कभी कुछ कारणों से प्लटों के आपस में टकराने की रफ्तार बढ़ जाती है या किनारों की चट्टानें सरकने लगती हैं। इससे धरती की सतह पर विकृति आ जाती है और भूकम्प आते हैं। यही कारण है कि अधिकांश भूकम्प कुछ खास क्षेत्रों में ही आते हैं। ये क्षेत्र धरती का वे हिस्सा होते हैं जहां कोई दो प्लेटें या पटरे आपस में मिलते हैं। इन क्षेत्रों को भूकम्पीय क्षेत्र कहा जाता है। हमारे देश में हिमालय पर्वत शृंखला के आसपास का क्षेत्र ऐसा ही है।

हमारा देश हिन्द प्लेट पर स्थित है। यह लगातार 5 सेंटीमीटर प्रति वर्ष की गति से उत्तर पूर्व की ओर आगे खिसक रही है। आगे खिसकने का क्रम कई करोड़ वर्ष से जारी है। इससे यूरेशियन प्लेट [चीन, रूस इसी प्लेट पर स्थिर हैं] पर लगातार दबाव पड़ता है। यूरेशियन प्लेट भी इसी दिशा में आगे खिसक रही है। लेकिन इसकी गति केवल दो सेंटीमीटर प्रतिवर्ष है। जब ये दबाव बहुत अधिक हो जाता है, तो भूकम्प के रूप में ऊर्जा बिखर पड़ती है। इसी कारण प्रत्येक शताब्दी में हिमालय पर्वत कुछ सेंटीमीटर ऊचा हो जाता है।

भूकम्प आने का एक कारण ऐसा भी है जिसके लिए दोषी इन्सान भी है। वैज्ञानिकों की राय है कि असाधारण रूप से विशाल बांध भूकम्प का कारण बन सकते हैं। धरती पर पानी का विशाल दबाव पड़ता है जिससे धरती की सतह पर विकृति आ जाती है। जो भूकम्प को जन्म देती है। भारत में ऐसा भूकम्प पहली बार 1967 के दिसम्बर माह में महाराष्ट्र की कोयना घाटी में आया था।

इसलिए भूकम्पीय क्षेत्रों में तो विशाल बांध बनाना भूकम्प को जानबूझ कर आमंत्रण देना है। जैसे गढ़वाल क्षेत्र में टिहरी बांध। तीन हजार करोड़ की लागत से बनने वाला यह विशाल बांध भूकम्पीय क्षेत्र में है।

भूकम्प से जुड़ी एक महत्त्वपूर्ण बात है भूकम्प की भविष्यवाणी की। अभी तक कोई ऐसी तरकीब नहीं निकाली जा सकी है जिससे भूकम्प की सही भविष्यवाणी की जा सके।□

■ सुधीर सक्सेना 'सुधि'

फुटबाल का चस्का

एक दिन घर में बैठे-बैठे मन में विचार आया क्यों न कोई ऐसा काम किया जाए कि लोग हमें याद रखें। तभी यह प्रश्न उठा कि हमें किस 'फील्ड' में काम करना चाहिए। तभी हमने सोचा क्यों न किसी खेल में नाम कमाया जाए। बहुत सोच विचार के बाद हमने विचार किया कि यह काम हमें मुहल्लों के बच्चों पर छोड़ देना चाहिए। बस, फिर क्या था, हमने हमारे घर पर 'मीटिंग' बुलाई और बच्चों से इस बात का निर्णय करने को कहा। बच्चे तो आखिर जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते ही हैं अतएव उन्होंने हमसे पूछा कि आखिर वे करना क्या चाह रहे हैं। हमारी 65 वर्षीय अनुभवी आंखों में चमक आ गयी और हमने बड़े शान से कहा कि हम किसी 'फील्ड' में नाम कमाना चाहते हैं। अब बच्चे समझ गए कि बूढ़ा सठिया गया है अतः इसका उपचार भी करना होगा। वे झट से बोले आजकल जो खेल सबसे ज्यादा 'पापूलर' है वह है 'फुटबॉल'। बस फिर क्या था, झट अलमारी खोली और निकाले पचास रु. और भागे दुकान पर। दुकान पर जाते ही हमने कहा कि हमें कोई ऐसी फुटबाल दिखाइए जो 'इंटरनेशनल' हो। यह कहके हमने पचास रु. शान से उसकी ओर बढ़ाए और बालों पर कंघी करने लगे [हालांकि हमारे सिर पर गिने हुए चार बाल भी नहीं हैं पर 'इम्प्रेशन' तो लगाना ही था] खैर, अब जब हमने पचास रु. दिए तो दुकानदार ने हमें ऊपर से नीचे तक देखा और मुंह से हवा भरने वाली बच्चों जैसी फुटबाल हमें दे दी। अब तो जनाब ए आली, हम पानी-पानी हो गए। अगले दिन जब हम दो सौ रु. लेकर गए तब जाकर दुकानदार ने हमको अच्छी सी बॉल दी अब हमारी खुशी का क्या ठिकाना, हमने आव देखा न ताव एक शानदार 'किक' फुटबाल पर जड़ा तो साहब दुकान का सारा सामान दुकानदार के ऊपर गिर पड़ा और वह वहीं चित्त हो गया। हमने फुटबाल उठाई और अस्सी किमी की रफ़्तार से भागे और घर आकर ही चैन की सांस ली।

अगले दिन सुबह पांच बजे हमारी नींद खुली तो बिना मंजन किए ही पूरे मुहल्ले घूम कर बच्चों की फौज को उठा लिया। अब आगे-आगे हम और पीछे-पीछे पूरी फौज। इस वक्त तक सात बज चुके थे। हम तो खुशी के मारे पागल थे ही, सो एक 'किक' ऐसी लगाई जो सीधी हमारे पड़ोसी को लगी। ईश्वर की कसम वह 'किक' ऐसी शानदार थी कि पेले भी हमें अपना गुरु बनाने को तैयार हो जाता परंतु उस किक के लगते ही हमारे पड़ोसी का चश्मा गिरा दूर और खुद एक तरफ सिर पर हाथ रखकर बैठ गए। हम तो वहां से सरपट भागे वरना आज तो शायद हम जेल में होते।

अगले दिन हमें फिर जोश आया और हम अपने करीबी मित्र जो पहलवान हैं, को साथ लेकर चल पड़े। मैदान में उन्होंने बॉल रखी और एक ऐसी 'किक' मारी जो हमारे खोपड़े पर बाउंस होते हुए हमें अस्पताल पहुंचा गयी। बेहोशी के दो दिन बाद जब आंख खुली तो देखा पलंग के सामने दुकानदार अपना हर्जाना वसूलने के लिए मरदूत सा खड़ा है। इस घटना के बाद तो हमने फुटबाल से ऐसी तौबा की कि बस पूछो मत, भूल से भी फिर कभी हमारे मुंह से 'फ' शब्द नहीं निकला। □

□ उत्तम माथुर

पृष्ठ ५५ का शेष

अठारह वर्ष के अब तक के जीवन में इतना भयानक दृश्य कभी सामने नहीं आया।

मैं भारत की एक महा पवित्र नगरी हरिद्वार [हरिद्वार गढ़वाल क्षेत्र में आता है] की एक तिमंजिली इमारत में था।

दिनांक 20 अक्टूबर 1991 प्रातः लगभग 2 बज कर 55 मिनट पर भूकम्प आया, ऐसा कहा गया, पर मुझे घड़ी देखने की सुध ही कहां थी, ऐसा लगा किसी ने मेरा बिस्तर ऊपर-नीचे से पकड़ कर झुला-झुला दिया हो। मुझे स्मरण है उस समय अपने मुंह से निकला प्रथम शब्द, मैं उठ कर सहजता से बोला "अरे क्या कर रहे हो"?

फिर एकदम भय से जागा मैं, उठा और कमरे के कोने में खड़ा हो गया, ऐसी प्रेरणा कि मैं बाहर भागा नहीं बल्कि कोने में खड़ा हो गया कहां से आई, नहीं जानता।

मात्र एक मिनट में इतना सब, इतनी फुर्ती कहां से आ गई, समझना कठिन है। मौत का भय कैसा होता है समझ में आया।

प्रातः छः बजे अपने घर को रवाना हो गया, बात में ज्ञात हुआ कि उस इमारत में एक दरार आ गई थी।

दूसरे दिन चमोली गया, स्वयंसेवी संस्था के साथ, वहां का दृश्य देखा तो पता चला कि मां के हृदय में कितनी उथल-पुथल व पीड़ा थी। चारों ओर टूटे मकान, मरे हुए जानवर और कुछ छटपटाते लोग व कुछ शान्त थे। चीटियों के, शान्त झुंड को जरा सा छू देने में जितनी हलचल होती है, वैसी हलचल थी।

एक बालक जो लकड़ी की बड़ी बल्ली से व पत्थर से दबा था, मैंने उसका हाथ पकड़ कर बाहर निकालना चाहा तो उसका हाथ मेरे हाथ में झूल गया, इतनी भयानक स्थिति थी, गढ़वाल की।

हमारे इधर पर्वतीय घर प्रायः तीन मंजिल के, पर 12-15 फुट ऊंचे होते हैं, सबसे नीचे का भाग जो प्रायः तीन ओर से भूमि में होता है उसमें जानवर, मध्य के भाग में परिवार जन तथा सबसे ऊपर गोदाम जैसा सामान आदि रखने की व्यवस्था होती है। छत व दीवारें प्रायः पत्थर की और प्रथम भाग व द्वितीय भाग की छत चीड़ के मोटे भारी तख्तों से बनी होती है, इस कारण नुकसान अधिक होता है भवन गिरने पर।

उत्तर काशी से कुछ कि.मी. दूर अगोड़ा गांव भूकम्प का केन्द्र बताया गया। जिसमें सैंकड़ों लोग मरे तथा सैंकड़ों घायल हुए है।

भूकम्प कुमायूं में भी आया पर इधर नुकसान नहीं हुआ।

हमारे इधर के लोग वीर व साहसी है, तभी तो इतनी ठंढ में खुले आसमान के नीचे घायल होने पर भी रहे और कोई शिकायत सरकार से नहीं की।

नेता लोग यहां नेतागिरी करने आ चुके हैं। इस कारण व्यवस्था बिगड़ने लगी है। कुछ नेता कहते है, कि साहयता केन्द्र दे रहा है। प्रधानमंत्री जी आए तभी इतना हुआ वरना कौन पूछता है। आदि आदि।

गवाना का पुल टूट गया था, इससे कई गांवो में सहायता मुश्किल से पहुंची।

संकटो से झुझने का अदम्य साहस यहां स्पष्ट देखने को मिलता है।

15-20 लोगों के परिवार बिलकुल नष्ट हो गए हैं। किसी-किसी परिवार में केवल एक ही सदस्य अतीत का दुःखद वर्णन करने को शेष रहा है।

टिहरी बांध के कारण यहां डर का वातावरण बन गया है, कि कहीं भूकम्प इससे भी तेज आया तो, पहले भूकम्प विनाश करेगा, फिर टिहरी बांध का जल उस विनाश को चरम सीमा पर ले जाएगा। □

■ दिनेश जोशी
हल्द्वानी [उ.प्र.]

उन्नीस अक्टूबर की रात्रि को जब मैं सोया तो मैं भी आम आदमी की भांति चन्द घण्टों बाद होने वाले उस भीषण कांड, उस प्रलयंकारी भूकम्प के आगमन की कल्पना तक से पूर्णतः अनजान था। कुछ दूरी पर ही होने वाली 'रामलीला' का शोर मेरे कानों में लोरी की भांति पड़कर नींद को और भी अधिक आनन्ददायक बना रहा था।

नींद में ही मुझे अपनी चारपाई हिलती महसूस हुई। घबराकर आंखें खोलीं तो पूरा कमरा ही हिलता महसूस हुआ। चूंकि कमरा दुमंजिले पर होने के साथ-साथ कच्चा भी है अतः वह कम्पन की बजाय मात्र हिलता हुआ ही महसूस नहीं हो रहा था बल्कि साफ नजर भी आ रहा था। मैंने तुरन्त रजाई एक ओर फेंकी और उठ बैठा। परन्तु मकान न केवल लगातार हिलता ही जा रहा था अपितु कम्पन क्षण-प्रतिक्षण तेज होते जा रहे थे, इसी बीच छत में से मिट्टी झड़नी प्रारम्भ हो गयी। मैं भागकर दूसरे कमरे में पहुंचा जहां मेरी माताजी उस भूकम्प के प्रभाव से अपनी निद्रा त्याग चुकी थीं। मेरे दूसरे कमरे में पहुंचने के पश्चात फिर कम्पन धीरे-धीरे करके समाप्त हो गए, परन्तु तब भी दिल इतनी जोर से धड़क रहा था मानो मुझसे पहले मकान के बाहर जाना चाहता हो। अब चूंकि मेरे जीवन में भूकम्प के साथ मेरा यह प्रथम साक्षात्कार था इसलिए भूकम्प समाप्त होने के बाद भी मैंने अपने आपको

काफी समय तक उस तरह ही कांपते पाया जिस प्रकार मैं भूकम्प आने पर कांप रहा था।

भूकम्प समाप्त होने पर मेरे कानों में लोगों की बहस की आवाजें पहुंची। लोग घरों से बाहर निकल आए थे तथा लगभग पन्द्रह सैकण्ड तक लगातार अपनी विभीषिका जारी रखने वाले इस भूकम्प के विषय में आपस में बातें कर रहे थे, परन्तु सबकी आवाजें भूकम्प के कम्पन से स्पष्टतया प्रभावित प्रतीत हो रही थी।

वापस बिस्तर पर जाने का साहस तो नहीं हो रहा था, परन्तु शनैः शनैः लोगों को वापस अपने- अपने घरों में लौटता देख कुछ साहस बंधा तथा दिल को काबू में रखने के लिए पुनः नींद को गले लगाना ही उपयुक्त लगा।

गढ़वाल मंडल में आयी इस दैवी-आपदा से सर्वाधिक तबाही 'उत्तरकाशी' जिले में हुई। उस तबाही को देखते हुए हमारे आसपास तो ईश्वर की कृपा से तबाही शून्य ही रही। जान-माल का भी नुकसान नहीं हुआ। परन्तु जिस तेजी के साथ भूकम्प आया था तथा जितनी जोर से दिलों को हिला गया था, उससे तो यही प्रतीत हो रहा था मानों जताना चाह रहा हो कि इंसान आज भी 'प्रकृति का दास' है।

20 अक्टूबर से आज तक भूकम्प के कई झटके महसूस किए जा चुके हैं और अब तो हम लोग रोज रात को यह सोचकर सो रहे हैं कि पता नहीं दूसरे दिन सुबह उठेंगे भी या नहीं?

भूकम्प से सर्वाधिक प्रभावित उत्तरकाशी जनपद में हुई तबाही का जिस तरह से मेरे भ्रमणकारी दोस्तों, स्वयंसेवी दोस्तों आदि ने वर्णन किया है वह किसी भी पत्थर तक को पिघलाने के लिए पर्याप्त है।

नन्हे-नन्हे बच्चों के रेत में फंसे शव, चारों तरफ बिखरी लाशें, लकड़ी के अभाव में नदियों में ही विसर्जित शवों तथा मुर्दाघाटों में तमाम औरतों बच्चों आदि के पड़े शव जिन्हें चील, कुत्ते नोंचकर खा रहे हैं यह सब देखकर दिल सचमुच कराह उठता है। खुले आकाश के नीचे बच्चों को जन्म देती महिलाएं, कड़ाके की सर्दी में खेतों तथा खुले में पड़े घायलों को देखकर, जगह- जगह पड़े पशुओं की एकटक घूरती पथराई आंखें देखकर मनुष्य की आंखें स्वयं ही आंसू बहाने को बाध्य हो जाती हैं।

मृत व्यक्तियों की तुलना में मृत पशुओं की तीन गुनी लाशें तथा उनकी दुर्गन्ध संक्रामक रोगों को भी आकर्षित कर रही हैं। गांवों में तीन-तीन कि.मी लम्बी दरारों ने तो गांवों का अस्तित्व ही मिटा दिया।

परन्तु क्रोध तो तब आता है जब राहत सामग्री पहुंचने में विलम्ब होता है। फल-सब्जी विक्रेता मनमानी करते हैं। मकान मालिक नए तिगुने- चौगुने किराये लेते हैं। राहत कार्यों को छोड़कर अधिकारी, उच्च अधिकारियों की चाप-लूसी करते हैं। ऐसे में भगवान भला करे उन युवकों तथा छात्रों और स्वयंसेवकों का जो सरकार के बिना बोले ही राहत कार्यों में जुट गए जबकि सरकारी सेवा पैसेन्जर ट्रेन की भांति घिसटती हुई बढ़ रही है। □

■ **संजय शर्मा**
जयहरीखाल
पौड़ी गढ़वाल [उ.प्र.]

बीस अक्टूबर की रात को आए जबर्दस्त भूकम्प से दो दिन पहले अर्थात 18 अक्टूबर की रात एक बजे के लगभग भी भूकम्प का एक हल्का सा झटका आया था। 19 तारीख को दिन में हमारे बीच उसी झटके की चर्चाएं हो रही थीं। लेकिन तब क्या पता था कि अगले दिन एक ऐसा झटका आएगा और नष्ट कर देगा मानव की लम्बी सभ्यता और उसकी वर्षों की मेहनत।

20 तारीख की रात को जब भूकम्प आया तो दिल दहल गया। इतना तेज झटका मैंने अपनी जिंदगी में पहली बार महसूस किया। मेरी छोटी बहन बिस्तर से नीचे गिर पड़ी। मैं अकसर अपने पास टेबिल घड़ी रखती हूं क्योंकि सुबह चार बजे उठकर पढ़ने का नियम बना रखा है। वह घड़ी गिरकर टूट गई। मेरे रैक से किताबें नीचे गिर पड़ीं। मैं किताबें उठाकर संभालने लगी। मेरा भैया उठकर बाहर की ओर भागा तो मैं भी उसके साथ बाहर की ओर भागी। मैंने देखा, हमारा मकान इस तरह हिल रहा है जैसे हम हाथ में पकड़ कर कोई हल्की सी वस्तु को हिलाते हैं।

भूकम्प के झटके थोड़ी ही देर में थम गए। हम सभी लोग अपने- अपने बिस्तरों में घुस गए। मगर फिर थोड़ी देर बाद एक हल्का सा झटका आया।

हमें रात को इस प्रलयंकारी भूकम्प के विषय में इतना ज्यादा पता नहीं चल पाया। यह तो समझ गए थे कि इस झटके से नुकसान जरूर हुआ होगा पर जो जानमाल की हानि हुई, उसके विषय में तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।

सुना तो बहुत था कि भूकम्प से बस्ती की बस्ती नष्ट हो जाती है पर देखा नहीं था इस कारण विश्वास नहीं होता था।

पर अब तो! बस पूछिए मत। इस हृदय विदारक दृश्य से कभी-कभी मन जिन्दगी से ही ऊबने लगता है। तब अहसास होता है कि मनुष्य कितना छोटा है प्रकृति के सामने, एक खिलौना मात्र।

प्रकृति कितनी शक्तिशाली है। आदमी जो एक पेड़ तक नहीं हिला सकता, प्रकृति ने मीलों दूर-दूर तक सबकुछ झकझोर कर रख दिया।

सुबह उठने पर पता चला प्रकृति के प्रकोप का परिणाम। दीवाली के उत्सव को समीप पाकर जहां मन खुशियों से झूम उठता था, वहीं जी चाहता है, एक दिया भी न जलाया जाए। ये सारे दीप दे दिए जाएं उन लोगों को जिनकी जिन्दगी आसरे की तलाश में है।

कालेज जाने पर पता चला- कालेज की जीव विज्ञान की प्रयोगशाला की पिछली दीवार पर दरार पड़ी है। बिजली की लाइन क्षतिग्रस्त है। कच्चे मकान ध्वस्त पड़े हैं। लोग प्रकृति के कहर पर दुहाई दे रहे हैं। जिनके मकानों में दरारें पड़ गई हैं, वे डरते हैं, अपने ही घरों में जाने से। सड़कें भी क्षतिग्रस्त हो गई हैं।

भगवान न करे, कभी भी प्रकृति ऐसा कहर किसी और जगह पर ढाए। पर क्या करें, अगर अपना वश चलता तो कभी ऐसी हलचल न होने देते, इस धरती पर।

कहीं बाढ़ कहीं भूकम्प, कहीं तूफान बार-बार आते रहते हैं। लेकिन हम असहाय से प्रकृति की विनाश लीला को चुपचाप मूकदर्शक बनकर देखने व फिर उस पर आंसू बहाने के अलावा और कर ही क्या सकते हैं?

हमारे बस में तो सिर्फ इतना ही है कि प्रकृति के इस कहर पर नतमस्तक होने वाली उन दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना कर सकें। बेसहारा व असहायों को रोशनी का एक छोटा सा दिया थमा सकें। जिन्दगी के प्रति फिर से उत्साह भर सकें। टूटे दिलों में, उदास चेहरों की खामोशी दूर करने की कोशिश में कामयाब हो सकें।

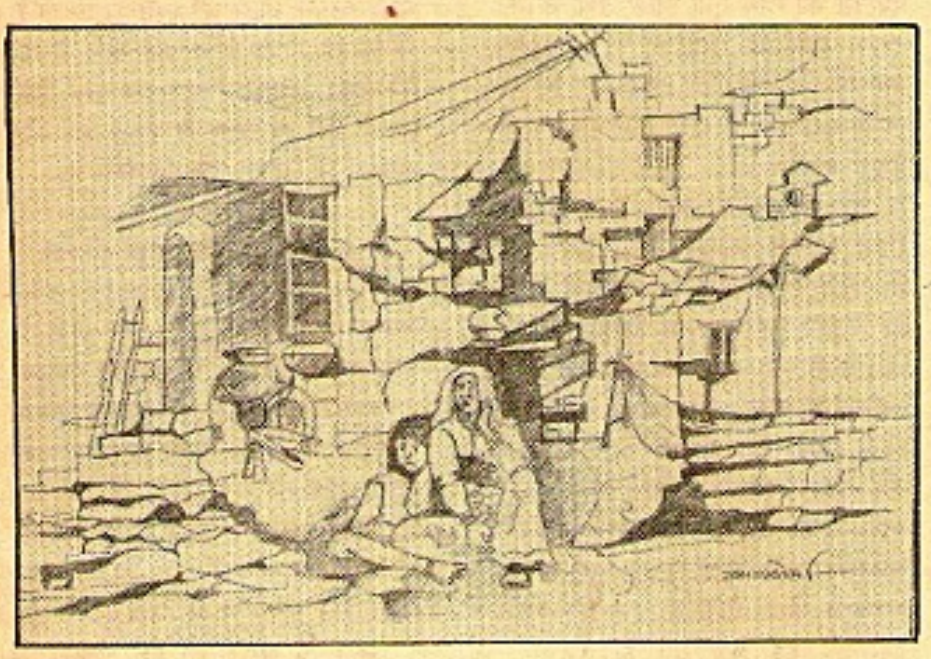

भगवान हमें शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करने के रास्ते पर ले जाए। दूसरे के कुछ काम आ सके हमारी जिन्दगी! □

■ **देवेश्वरी जोशी,**
पो. अपर चमोली [उ.प्र.]

हम सभी घर में सोये हुए थे। अचानक अजीब सी हलचल हुई। मकान हिलने से हड़बड़ाकर हम सभी लोग जाग गए। सायं-सायं की लम्बी आवाज के साथ झूले की तरह मकान हिल रहा था। सभी लोग बेहद घबरा गए थे। घर के बाहर भी हल्का शोर हो रहा था। लोग अपने घरों से बाहर निकल रहे थे। कुत्तों की भी तेज-तेज भौंकने की आवाजें आ रही थीं। पापाजी बोले- "लगता है भूकम्प आया है, जल्दी से घर से बाहर चलो।" सभी लोग जल्दी-जल्दी घर से बाहर आ गए। बाहर भी बहुत लोग जमा हो चुके थे। रात का समय था, लगभग दो बजकर पचास मिनट पर भयंकर भूकम्प का झटका आया था जो कि लगभग 25 सेकण्ड तक रहा। इस भूकम्प से धरती का कम्पन इतना अधिक हो रहा था कि दो मंजिल व तीन मंजिल में रखी मेजों की दराजें तक खुल गयी थी। सभी लोगों के दिलों में एक दहशत सी हो गई थी।

सभी डर रहे थे कि कहीं दुबारा भूकम्प तो नहीं आयेगा। इसलिए सभी लगभग डेढ़-दो घंटा घर से बाहर ही खड़े रहे। सुनसान सड़कों पर भी अच्छी खासी चहल-पहल शुरू हो गई थी। लोग अपने- अपने भूकम्प के अनुभव एक-दूसरे को बता रहे थे। लगभग दो घंटे पश्चात हम लोग घर में वापस गए लेकिन भय के मारे किसी को भी नींद नहीं आयी, सभी रातभर जागते रहे।

इतना भयंकर भूकम्प यहां आज तक नहीं आया था। वैसे मुझे याद है लगभग नौ या दस वर्ष पूर्व यहां भूकम्प का तेज झटका आया था लेकिन वह इतना तेज नहीं था। वह तो लगभग 5-6 सैकण्ड तक रहा था। उसका भी मैंने पूर्ण अनुभव किया था। तब भी हम सब घर से बाहर निकल आए थे। वह रात 8 बजे के लगभग आया था। उसमें कोई भी जान-माल की हानि नहीं हुई थी। मगर इस बार का भूकम्प इतनी अधिक तबाही ला देगा हम लोगों ने कल्पना भी नहीं की थी।

सुबह जब अखबारों में हमने रात

को आए भूकम्प की तबाही के बारे में पढ़ा तो होश उड़ गए। उत्तरकाशी [गढ़वाल] में सैकड़ों लोग भूकम्प से मर चुके थे और हजारों घायल हुए थे। भूकम्प के द्वारा तबाही की खबर पढ़कर रात को आए भूकम्प का अनुभव करके एक भययुक्त सिहरन सी दौड़ गई।

लेकिन ईश्वर का शुक्र था कि यहां कुमाऊं में ऐसा कुछ नहीं हुआ। मात्र कई मकान क्षतिग्रस्त हुए लेकिन कोई बड़ी अप्रिय घटना नहीं घटी। हल्द्वानी में भी जबरदस्त भूकम्प के झटके से कई मकान क्षतिग्रस्त हुए तथा कई मकानों में दरारें भी पड़ गई। नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत, भवाली, पिथौरागढ़, किच्छा, रूद्रपुर, काशीपुर व लाल कुआ में भी भूकम्प के तेज झटके से कई मकानों में दरारें पड़ गई तथा कई जगह संचार व विद्युत व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई थी। नैनीताल से कुछ दूरी पर बेताल घाट में एक ग्रामीण का मकान पूरी तरह से नष्ट हो गया लेकिन भूकम्प के कारण घर के लोग पहले ही बाहर आ गए थे। इस प्रकार उस काली रात के भूकम्प का अनुभव अत्यंत भयमय रहा तथा उसे याद करके आज भी एक सिहरन सी दौड़ जाती है, उत्तरकाशी में हुई भयंकर तबाही को देखकर अब भी रौंगटे खड़े हो जाते हैं। □

■ **शैलेन्द्र श्रीवास्तव**
हल्द्वानी- [नैनीताल]

बिना भयानक वर्षा हुए या बिना कोई ज्वालामुखी फटे यदि अचानक भूकम्प आ जाये तो स्थिति सचमुच भयावह हो जाती है और ऐसी ही स्थिति हुई 20 अक्टूबर को सुबह 2.55 के करीब।

कोई असामान्य स्थिति हो तो नींद में भी कुछ न कुछ अनुभव हो ही जाता है। अर्ध चेतनावस्था में ऐसा लगा कि कुछ हो रहा है। इसी समय मम्मीजी ने कहा कि ये तो भूचाल है। मैंने कहा- हां ऐसा ही लग रहा है। जरा 'लाइट तो खोलो।' किन्तु मम्मी भी लेटी रही और मैं भी। बगल में छोटा भाई सो रहा था उसे तो पता भी नहीं चला। कुछ सैकंड तक दरवाजों के कुंडे आदि खनकते रहे फिर शांति हो गयी। तब हम उठे और लाइट खोली। लगा ही नहीं कि ये भूकम्प उसी समय कहीं हजारों जाने ले रहा है।

उठने के पश्चात टार्च लैंप जगह पर रखे। तभी लाइट चली गई। लैंप जलाकर पुनः लेट गए। फिर कुछ डर भी लगा कि कैसे बुद्धू जैसे लेटे रहे बाहर जाने का प्रयास भी नहीं किया। यदि मकान ढह जाता तो क्या होता? दरवाजों पर ताले लगे थे, अगर कुछ होता तो बाहर भी कैसे निकलते खैर उस समय एहतियात बरतते हुए ताले खोल दिए।

वैसे पहाड़ों में जिस ढंग से मकान बने होते हैं आसपास कहीं मैदान तो होता नहीं है वहां जाकर खड़े हो जाओ। अगर ऐसी स्थिति आ जाये तो जहां भी जाओ पत्थर ही पड़ेंगे।

रातभर नींद आयी नहीं। सुबह समाचारों से भी भूकम्प की भयानकता का अहसास नहीं हुआ। धीरे-धीरे जब उत्तरकाशी के समाचार ज्ञात हुए तब पता चला कि क्या कुछ गुजर गया है इन 45-50 सेकण्ड में गढ़वाल पर। विशेष रूप से गढ़वाल के उत्तरकाशी, टिहरी और चमोली जिलों में। जैसे-जैसे समाचार प्राप्त हुए भूकम्प का स्वरूप स्पष्ट होने लगा। भारी तबाही का शिकार गढ़वाल, जाड़ों की ठिठुरती सर्दी में हजारों लोग बेघरबार ठंड में तन को ढकने और खाने को तरस रहे हैं। भूकम्प की विभीषिका को देख कर अन्तर्मन सिहर उठता है बार-बार। उसी समय शायद यही कुछ हमारे ऊपर भी बीत सकता था या कभी बीत सकता है। और शायद यही अहसास है जिसने हमें प्रेरणा दी है सहायता की। जिससे जितना बन पड़ा किया, अन्न और वस्त्र सहायता। यह सहायता है दान नहीं क्योंकि दान तो अक्षम लोगों को दिया जाता है, किन्तु वो लोग अक्षम नहीं हैं। अपने पैरों पर खड़े थे और उन्नति के लिये संघर्ष कर रहे थे। वक्त ने उन्हें अक्षम बना दिया है कुछ समय के लिए किन्तु उम्मीद है कि सहायता के बल पर वो शीघ्र ही पुनः अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे। इस दुखद परिस्थिति में हम सबकी शुभकामनायें और विश्वास उनके साथ हैं।"

भूकम्प से कोई विशेष नुकसान हमारे क्षेत्र में नहीं हुआ। किन्तु देश के किसी भी हिस्से में हुआ नुकसान हम सब का ही है और उसकी भरपाई भी हम सबको मिल कर करनी चाहिए। □

■ **जया काण्डपाल**
लैंसडाउन [उ.प्र.]

रामलीला के शोरगुल से मुक्त होकर हम उसी रात चैन की नींद सोये थे। पता ही न चला कि कब रात के दो प्रहर बीत गए। जैसे-जैसे रात बीतती जा रही थी वैसे-वैसे ही ठंड का प्रकोप बढ़ता जा रहा था। ठंड से बचने के लिए मैंने रजाई को चारों तरफ से दबाना चाहा परन्तु ऐसा लगा कि मैं रजाई से कभी इस तरफ से तो कभी उस तरफ से बाहर होती जा रही हूं। नींद के झोंके में ही लगा कि घर के अन्दर की सभी चीजें झनझना रही है। यहां तक कि दरवाजों के कुंडे आदि सभी झनझना रहे थे। पास ही सोई अपनी पुत्री से मैंने कहा- "ये क्या हो रहा है। जब तक वो जवाब देती तब तक मैंने ही क्या "अरे। ये तो भूचाल आ रहा है। जब तक नींद में भूचाल का खयाल मन में आया तब तक भूचाल हमको नींद से झकझोर कर झटके देकर जा चुका था।

मन में इस कदर दहशत छाई कि

शेष पृष्ठ ६० पर

प्रतियोगिता परिणाम

चीनू गिलहरी

चीनू! एक ऐसी गिलहरी जो अपना जीवन तो त्याग सकती थी, पर अपनी शैतानियां नहीं छोड़ सकती थीं। सभी उसकी शैतानियों से परेशान हो चुके थे। पता नहीं, कब किसके सिर पर किस पेड़ से चीनू नामक आफत कूदे और सिर के कुछ बाल अपने शिकार की यादगार स्वरूप ले जाए?

एक दिन मुन्ने राजा स्कूल से घर लौट रहे थे। किताबों के बोझ से उनके बस्ते का कुछ भाग खुला ही रहता है। न जाने कब चीनू महारानी इसी खुली जगह से बस्ते के अन्दर प्रवेश कर गई और मुन्ना के साथ उसके घर बिन बुलाए मेहमान की तरह पहुंच गई। मुन्ना की मां ने टोस्ट और दूध मुन्ना के लिए मेज पर रख दिए। मुन्ना ने अपना बस्ता उसी मेज पर रखा और हाथ-मुंह धोने चला गया। मुन्ना लौटकर आया तब तक टोस्ट तो चीनू के पेट में चला गया और खुद चीनू बस्ते में। लौटकर मुन्ना हैरान। पर तभी उसे अपना बस्ता हिलता हुआ दिखाई दिया।

अब तो मुन्ना बहुत डरा। हिम्मत करके उसने जैसे ही बस्ते में हाथ डाला, चिक्-चीं, चिक्-चीं की आवाज करते हुए चीनू ने बस्ते में से बाहर उछाल भर दी। घबराए हुए मुन्ना के हाथ से बस्ता छूट गया। और चिक्-चीं, चिक्-चीं करती चीनू तुरंत आम के पेड़ पर विराजमान हो गई। फिर वहीं से शून्य में ताकते भौंचक खड़े मुन्ना को देखकर हंसने लगी।

घूमते-घूमते एक दिन चीनू गप्पू ग्वाले के घर की ओर निकल पड़ी। वहां खड़ी जुगाली करती हुई गप्पू की भैंस को देखकर उसकी मनके जैसी आंखें चमक उठीं। चुपके से जाकर उसने भैंस की दुम में तीन-चार जगह इतनी जोर से दांत गड़ाए कि बेचारी भैंस बिलबिला उठी और बांऽऽ- बांऽऽ करती रस्सी तुड़ा के ऐसी भागी कि शाम तक गप्पू उसे ढूंढ़ता रहा। पर वह मिली सरकारी कांजी हाउस में, जहां से 51 रुपये जुर्माना देकर गप्पू को भैंस छुड़ानी पड़ी। पर इन सबसे चीनू का क्या सरोकार, वह तो उसी प्रकार शैतानियों में मस्त रहती।

जब कभी कुछ भी करने को नहीं मिलता तब वह तलैया के मेढकों को गप्पें सुना-सुना कर अचंभित करती। वह मेढकों को कहती, जानते हो, परसों हाथी दादा मेरे पेड़ की डालियां तोड़ रहे थे। मैंने मना किया तो माने ही नहीं। मुझे बड़ा गुस्सा आया। मैं सीधे उनके कान में घुस गई। फिर जब उन्होंने माफी मांगी तभी मैं उनकी सूंड से होकर निकल भागी। बेचारे मेढक विश्वास भी कर लेते कि इस आफत की पुड़िया का क्या भरोसा, कब क्या कर बैठे?

मीकू बन्दर को भी वह बेवकूफ बना लेती थी। वह उसे खूब समझाता कि देख चीनू, इतनी शैतानी मत किया कर। पर चीनू कहां मानती? कहती, 'देखो, मीकू, मेरी जिंदगी है ही कितनी लम्बी? जब तक जीऊंगी अपना मस्ती में और हंसी-खुशी से। मरना तो है ही एक दिन।' मीकू बेचारा चुप हो जाता।

उस दिन तो गजब ही हो गया। कुछ बच्चे नदी के किनारे पिकनिक मना रहे थे। शायद उन्हें जगह का चुनाव करते समय चीनू का ध्यान न रहा हो क्योंकि जिस जगह बच्चा पार्टी जमा थी, वहीं था चीनू का घर। चीनू उस समय वहां नहीं थी पर थोड़ी देर बाद जब अखरोट लेकर वापस आई तो खाने की इतनी सारी चीजें जमीन पर रखी देखकर उसके मुंह में पानी भर गया। अपना-अपना टिफिन सबने लगाया ही था कि धप्प से बिट्टू के सिर पर कुछ गिरा और पैर तक सर्र से आकर मीना के हाथ पर चढ़ गया। तब सबको दिखी चीनू गिलहरी। कुछ बच्चे तो डर से चिल्ला पड़े और कुछ भागे। नन्हीं पिंकी तो इतना डर गई कि उसे नदी का ध्यान भी न रहा और दौड़ते- दौड़ते सीधे नदी में गिर गई। बड़ी मुश्किल से उसे नदी से निकाला गया। तब तक चीनू का घर खाने की चीजों से भर चुका था।

कहानी प्रतियोगिता

उसकी शरारतों से कइयों को लाभ भी पहुंच जाता था। किन्नू अपने बीमार बेटे की दवा लाने शहर गया था। डाक्टर ने उसे दवा के साथ ही बच्चे को मेवा खिलाने को कहा पर बेचारे किन्नू के पास कहां पैसे? कुछ थोड़े फल खरीद कर लौट आया। थका हारा, बेचारा किन्नू, चीनू के पेड़ के नीचे ही आ बैठा। चीनू उस समय अखरोट खा रही थी। किन्नू को देख वह खाना भूलकर शैतानी करने की सोचने लगी। कुछ न पाकर उसने अपने अखरोट के भण्डार से एक-एक करके 10-12 अखरोट टपाटप किन्नू के सिर पर बरसा दिए। किन्नू ने बिलबिला कर ऊपर देखा तो चीनू ने चिक्-चिक् करके उसे मुंह चिढ़ा दिया। किन्नू ने गुस्से में चीनू द्वारा फेंके अखरोटों को पत्थर समझ कर वापिस चीनू पर फेंकना चाहा पर हाथ में लेकर देखा तो वह चौंका, अरे ये तो बढ़िया अखरोट हैं। उसने खुशी-खुशी अखरोट बीने और अपनी राह चला गया।

चीनू एक बार मीकू के घर गई। मीकू घर पर नहीं था। अब बिना कोई शरारत किए वापिस लौटना तो चीनू की शान के खिलाफ था। वह उसके घर से फल व रोटियां उठा लाई। लौटने पर मीकू को सब बातें समझ आ गई। वह गुस्से में भरा हुआ चीनू के पेड़ के पास पहुंचा। वहां उसे चीनू पेड़ के पास ही पड़ी हुई मिली। चीनू देखने में एकदम मृत लग रही थी। मीकू घबरा गया। उधर चीनू अपने सफल अभिनय पर मन ही मन मुसकरा रही थी। आज उसे अपनी नई अनोखी शैतानी पर बहुत मजा आ रहा था। मीकू का सामान तो वह झाड़ी में छुपा आई थी। मीकू को देखकर वह कांपती आवाज में बोली, 'भैया, आज मुझे अपनी शैतानी का फल मिल गया। आज जब मैं तुम्हारे फल लेकर पेड़ पर चढ़ रही थी तब गिर गई और मेरी यह हालत हो गई है। यदि मैं मर जाऊं तो मुझे इसी पेड़ के कोटर में रख देना।'

इतना कहकर चीनू खामोश हो गई व उसकी गर्दन एक ओर लुढक गई। मीकू अपना नुकसान तो भूल गया और दुखी मन से चीनू को उठाकर कोटर में रख दिया। फिर सबको यह खबर देने कुछ दूर ही चला था कि पीछे से उसे चीनू की आवाज सुनाई दी, 'क्यों मीकू भैया, अपने फल रोटी वापिस नहीं लोगे क्या?' और जैसे ही मीकू पीछे घूमा उसे चीनू दूर खड़ी हंसती दिखाई पड़ी। मीकू जब तक लपक कर उस तक पहुंचे, चीनू ये जा, और वो जा...। हारकर मीकू लौट आया। चीनू भी शैतानियों से भरे अपने दिमाग के साथ फिर कोई नया शिकार ढूंढने चल पड़ी। □

■ कुहू बैनर्जी,
14 वर्ष, बेलरायां [उ.प्र.]

शेष पृष्ठ 66 पर

पृष्ठ 57 का शेष

बिजली जलाने की भी हिम्मत न हुई। काफी देर बाद उठकर बिजली जलाई तो उस समय भी अलमारी से लटका चाबी का गुच्छा हिल रहा था। कहीं फिर भूचाल न आ जाए और बिजली न चली जाए इसी डर से तुरन्त उठकर टार्च और लैंप को यथास्थान रखा ही था कि बिजली गुल हो गई। बड़ी मुश्किल से उठकर लैंप जलाया।

रात्रि के अंधकार में डूबा था लैन्सडौन। लैन्सडोन पोड़ी गढ़वाल जिले में करीब 1524 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसलिए उस दिन बाहर काफी ठंड थी। जैसे-जैसे उजाला होने तक बातें करते हुए समय बिताया। जरा सा भी हिलने पर लगता कि भूकंप ही आ रहा है। उजाला होते ही सब लोग घर से बाहर निकल कर रात्रि में आए भूकंप की चर्चा करने लगे। मैंने सर्वप्रथम आमने सामने के मकानों पर नजर डाली सब ठीक थे।

भूकंप से लैन्सडौन नगर तो बहुत ज्यादा प्रभावित न हुआ। कुछ पुराने मकानों में ही दरारें आई। पर असली तबाही तो हुई हमारे नगर से दूर स्थित उत्तरकाशी और टिहरी जिलों में जहां कुछ गांवों का तो अस्तित्व ही मिट गया तो कुछ गांव अब भी लगातार आ रहे भूकंप के झटकों के कारण अस्तित्वहीन होने की स्थिति में हैं। हजारों नींद में ही मलबे में दबकर सदा के लिए सो गए तो हजारों बेघर हो गए। उत्तरकाशी, जहां इन दिनों शीत का प्रकोप काफी बढ़ जाता है वहां बचे हुए लोग मकानों के ध्वस्त हो जाने के कारण या फिर भूकंप के आ रहे झटकों की दहशत के कारण खुले मैदानों में सो रहे हैं।

पहाड़ों के सीढ़ीदार खेत जो सदियों पहले धीरे-धीरे खेती योग्य बनाए गए थे सब समाप्त हो चुके हैं। न रहने को घर, न पहनने को वस्त्र। अन्न, धन, मवेशी सभी कुछ तो समाप्त हो गया है भूकंप से। देश के विभिन्न भागों से विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाएं इन भूकम्प पीड़ितों के लिए राहत सामग्री अन्न, वस्त्र आदि भेज रहे हैं ताकि इस कड़ाके की ठंड से ये लोग कुछ तो बचाव कर सकें।

20 अक्टूबर 1991 को आए भूकंप के जोरदार झटकों के बाद अभी भी हलके हलके झटके मन में दहशत पैदा कर रहे हैं। कभी-कभी मैं सोचती हूं कि कहीं फिर प्रकृति का कोप भूकंप के रूप में हुआ तो क्या करेंगे? यही प्रश्न जब मैंने नौ-दस वर्षीय बच्चों से किया तो एक ने तो तुरन्त कहा कि भूकंप आने पर वह अपने कपड़ों का बक्सा लेकर बाहर जाएगा ताकि कपड़े तो पहन सके। तो दूसरे बच्चे की प्रतिक्रिया थी कि चुपचाप घर के अन्दर ही बैठे रहेंगे क्योंकि एक न एक दिन तो सभी को मरना ही है।

पहाड़ी इलाके में आए इस भूकंप से जान-माल की हानि तो हुई ही वहीं एक बड़ी चट्टान के भागीरथी में गिर जाने से भागीरथी का मार्ग ही अवरुद्ध हो गया जिससे वहां पर फिर एक बार बाढ़ के रूप में होने वाली तबाही नजर आने लगी थी। परन्तु सेना के जवानों के अथक प्रयास से चट्टान को तोड़ा गया तब कहीं बाढ़ से बचाया जा सका लोगों को।

इस बार उत्तरांचल में आए भूकंप का केन्द्र उत्तरकाशी जिले के 'अगोड़ा' नामक गांव में था। जहां पर बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई हैं और गांव भी अपना अस्तित्व लगभग खो चुका है और वहां से आने वाले व्यक्तियों से पता चला है कि कुछ गांवों में पहाड़ों की चोटियों पर लगातार धुआं उठता हुआ दिखाई दे रहा है। कई गांव तो पहाड़ों पर इतने दुर्गम स्थानों पर बसे हैं कि वहां तक पहुंचने के रास्ते ही बंद हो चुके हैं। वहां पर सहायता पहुंचाना भी बहुत मुश्किल हो रहा है।

न जाने क्या बीत रही होगी उन लोगों पर जो भूकंप की तबाही से प्रभावित होंगे। एक तरफ तो कड़ाके की ठंड, दूसरी तरफ ये बेघर लोग जो अन्न और वस्त्र के अभाव के साथ-साथ भूकंप की दहशत से भी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए हैं। ईश्वर इन सबकी रक्षा करे यही कामना है। □

■ **आशा काण्डपाल**
लैन्सडौन [उ.प्र.]

वह 20 अक्टूबर की रात्रि शायद गढ़वाल के इतिहास में सबसे वीभत्स रात्रि थी। इस रात्रि ने एक बार फिर सिद्ध किया कि मानव प्रकृति के सामने बौना है। इस रात्रि ने यह भी सिद्ध किया कि मानव चाहे विज्ञान के क्षेत्र में कितनी ही उन्नति कर ले, परन्तु प्रकृति पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

उत्तरकाशी से 22 कि.मी. दूर अगोड़ा नामक स्थान पर भूकम्प का केन्द्र था। समाचारों में इसे गलती से अल्मोड़ा नाम दे दिया गया था। इस भूकम्प में सैकड़ों लोगों की जानें गईं, सैकड़ों घायल हो गए।

भूकम्प 20 अक्टूबर को आधी रात के बाद आया। मैं अपनी चारपाई से गिर पड़ा।

इस विनाशकारी भूकम्प से मृत लोगों को राहत देने का कार्य उसी दिन प्रातः तीन बजे से शुरू हो गया। भूकम्प से उत्तरकाशी, टिहरी व चमोली में क्षति हुई। सर्वाधिक क्षति उत्तरकाशी में हुई।

एक प्राकृतिक विपदा भारत के ऊपर और आ गई। ऐसे समय में प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है कि वह भूकम्प पीड़ितों को राहत प्रदान करे। □

■ **देवेन्द्र कुमार,**
चमोली [उ.प्र.]

खबर

आस्ट्रिया के सिमिलान ग्लेशियर से चार हजार वर्ष पुराने एक ममी कृत मानव शरीर की खोज की गई है। यह सुरक्षित शरीर चमड़े का वस्त्र धारण किए हुए है तथा इसके शरीर पर गुदना गुदा हुआ है। इससे ताम्र युग के जीवन की झलक मिल सकेगी। ममीकृत शरीर के नुकीले दांत इस बात की पुष्टि करते हैं कि ताम्र युग में मनुष्य मांसाहारी था। यह शरीर लगभग दो हजार ईस्वी पूर्व का है। शरीर के पास से चकमक पत्थर, चमड़े के टुकड़े तथा फर मिले हैं।

अमरीका के एक शहर लास वेगास से 161 किलोमीटर दूर बेकर 'वैली आफ डेथ' का प्रवेश द्वार समझा जाता है। यहां विश्व का विशालतम थर्मामीटर लगाया जा रहा है। इसकी ऊंचाई 134 फीट होगी। इसे बनाने में 40 टन इस्पात लगेगा और इसके बीचों-बीच लाल नियोन रोशनी का एक विशाल स्तम्भ होगा जो तापमान में वृद्धि होने के साथ ऊपर चढ़ेगा। थर्मामीटर के निचले भाग में एक दुकान होगी जहां वस्तुएं बेची जाएंगी जैसे एक विशेष प्रकार का मग जिसमें ऐसा थर्मामीटर लगा होगा जो मग में गर्म पेय डालते ही लाल हो जाएगा।

जन्मजात कटे हुए होंठ, तालुवे का इलाज बच्चों के लिए अब कठिन नहीं है। इसका इलाज जल्दी करना चाहिए

बाद में दिक्कत हो सकती है। ऐसे बच्चों को पैदा होते ही सही तरीके से दूध पिलाने का तरीका उसकी मां को सिखाना बहुत जरूरी है क्योंकि होंठ व तालुवा कटे होने से ये बच्चे मां का दूध नहीं ले सकते और केवल खास तरीके की बोतल से चम्मच से ही दूध पी सकते हैं। ऐसे बच्चों के माता-पिता को यह विश्वास दिलाना भी जरूरी है कि बच्चे को कोई बड़ी बीमारी नहीं है। इसका उपचार हो सकता है।

ऐसे तो बालकों के मन मस्तिष्क को दूषित करने के अनेकों साधन इकट्ठा किए जा रहे हैं जैसे फिल्में, दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम चटपटे समाचार आदि। रही सही कसर अब रहस्य, रोमांच पूर्ण रचनाएं करने वाले पूरा किए दे रहे हैं। शिशु या बालक शाश्वत काल से भोला और निर्मल हृदय रहा है किन्तु उसे पात्र बना कर उससे ऐसे-ऐसे क्रूर व अनैतिक कार्य कराए जा रहे हैं कि रचनाकारों पर क्षोभ

आता है। एक आठ वर्षीय भोले से बालक के हाथ में चाकू देकर उसे खूनी अन्दाज में अपनी मां की ओर बढ़ते दिखाना या एक नन्हीं सी लड़की में अचानक 'सुपर पावर' प्रकट हो जाना। लेखकों को एक नया विषय मिल गया है- निर्दोष बचपन। अपनी कुरुचिपूर्ण कल्पना को उस पर थोप कर उसके बचपन को भ्रष्ट करने में लग गए हैं ताकि उनकी किताबें नए विषय और चटपटे वर्णन के कारण बिक सकें। अंग्रेजी में प्रकाशित 'एक्सारसिस्ट', 'द ओमन', 'पोल्टर जीस्ट' ऐसी ही कथाएं हैं। पश्चिम से आने वाली किताबों का एक पूरा जखीरा जैसे सिर्फ शैतान के चंगुल में फंसे बच्चों की कथाओं से भरा रहता है।

लखनऊ के पतंग बनाने वालों के हाथ की बनी पतंगें विदेशों में भी निर्यात होती हैं। पतंगबाजी में महारत हासिल करने के लिए यहां के पतंगबाज घंटों

डोर खींचने का रियाज करते थे। कहा जाता है कि कुएं में डोर के गोले डाल दिए जाते थे लेकिन उसे पानी तक पहुंचने नहीं दिया जाता था। लगातार तेज गति से डोर खींचते रहने से गोला कुएं के बीच ही खुलता-खुलता खत्म हो जाता था। खींचने वाले की हथेलियों में खून छलछला आता।

गिरगिट की भांति पक्षियों के अंडे भी आसपास के वातावरण के अनुसार अपना रंग बदल लेते हैं। रंग बदलने की प्रक्रिया से अंडे अपनी सुरक्षा कर लेते हैं।

सभी नदियां समुद्र में आकर मिल जाती हैं किन्तु समुद्र में भी नदियां बहती हैं। पूर्वी अमरीका के किनारे से उत्तरी योरोप की दिशा में बहने वाली गल्फ स्ट्रीम दुनिया की सबसे प्रसिद्ध समुद्री नदी है। इसका गरम नीला पानी समुद्री जल से बिल्कुल अलग दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त ब्राजील की धारा, जापान की धारा, उत्तरी भू-मध्यीय धारा आदि संसार की प्रमुख समुद्री नदियां हैं।□

■ अनुराग

चतुर राजकुमार

■ जी.पी. नागर

सैकड़ों वर्ष पूर्व चीन में एक सम्राट था जो कि अपनी बुद्धि तथा शक्ति के लिए अत्यधिक विख्यात था। उसके कोई पुत्र नहीं था, केवल एक पुत्री थी जो कि अपने पिता की भांति बुद्धिमान, साहसी तथा अपनी माता की भांति रूपमती थी। इस बुद्धिमान तथा सुन्दर राजकुमारी के लिए विवाह योग्य होने पर अनेक सुन्दर, सुशील तथा वीर राजकुमार उससे विवाह करने के इच्छुक हो गए। उन्होंने सम्राट के पास विवाह प्रस्ताव भेजे। बुद्धिमान सम्राट ने उनको सूचित किया कि वह इच्छुक राजकुमारों की तीन परीक्षाएं लेगा। उनमें सफलता प्राप्त करने वाले के साथ राजकुमारी का विवाह होगा, असफल राजकुमारों को प्राणदण्ड दिया जाएगा। परीक्षाओं में सफल व्यक्ति राजकुमारी का पति ही नहीं, वरन् सम्राट का उत्तराधिकारी भी होगा।

राजकुमारी से विवाह के इच्छुक राजकुमारों में से अनेक ने प्राणदण्ड के भय से सम्राट द्वारा आयोजित परीक्षाओं में भाग लेने का साहस नहीं किया। देश तथा विदेशों के आठ राजकुमारों ने जिन्हें अपनी जान कम तथा आन ज्यादा प्रिय थी, सम्राट को सूचित किया कि वह राजकुमारी को पाने के लिए उनके द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने को तत्पर हैं।

निश्चित दिन चीन की राजधानी में आठ तेजस्वी राजकुमार पहुंच गए। इनमें तिब्बत का राजकुमार भी था जो कि सबसे अधिक सुन्दर, बलवान तथा चतुर था। सम्राट ने समस्त राजकुमारों का सत्कार किया, उनको भव्य महलों में ठहराया। इसके बाद उसने सबको बुलाकर कहा।

"सामने वाले मैदान में सौ घोड़ियां तथा उनके बछड़े अलग-अलग बंधे हैं। तुम में से जो व्यक्ति हर बछड़े को उसकी मां के साथ मिलवा देगा, वही विजेता होगा।"

तिब्बती राजकुमार ने कुछ भी नहीं किया। वह समस्या पर विचार करने लगा। उसके साथी सात राजकुमारों ने घोड़ियों को उनके बछड़ों से मिलवाने का प्रयास किया किन्तु वे नितान्त असफल रहे। बछड़ों के पास आते ही घोड़ियां हिन-हिनाने लगती या पीछे के पैरों से बछड़ों को मारने लगती। यह सब देखकर तिब्बत के राजकुमार ने हरी घास मंगवा कर घोड़ियों के सामने

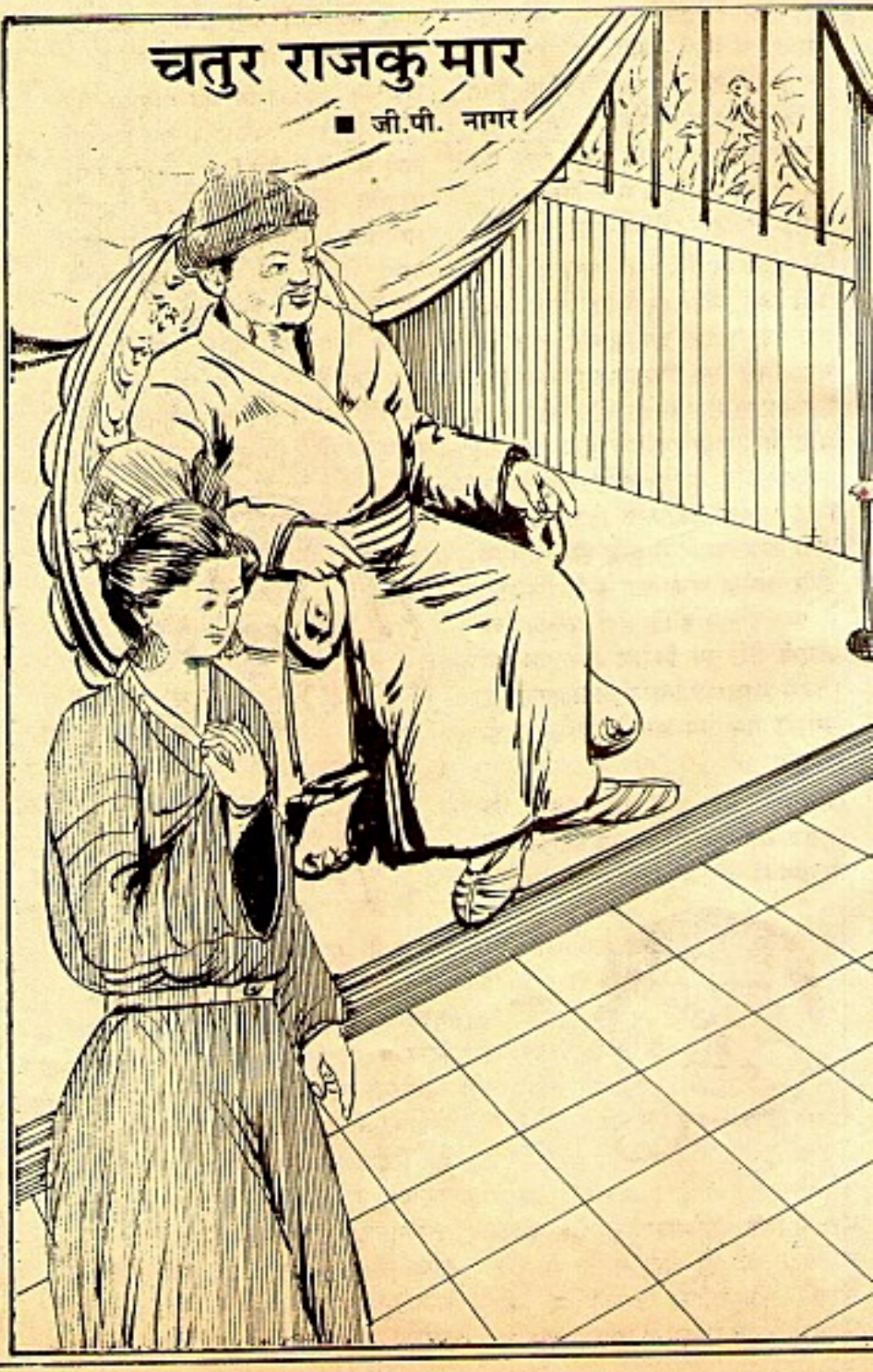

डाली। उस नर्म घास को खाकर वह अपने बछड़ों के लिए हिन-हिनाने लगी। उसी समय तिब्बत के राजकुमार ने बछड़ों को छोड़ दिया। हर बछड़ा अपनी मां के पास पहुंच गया। राजकुमार की

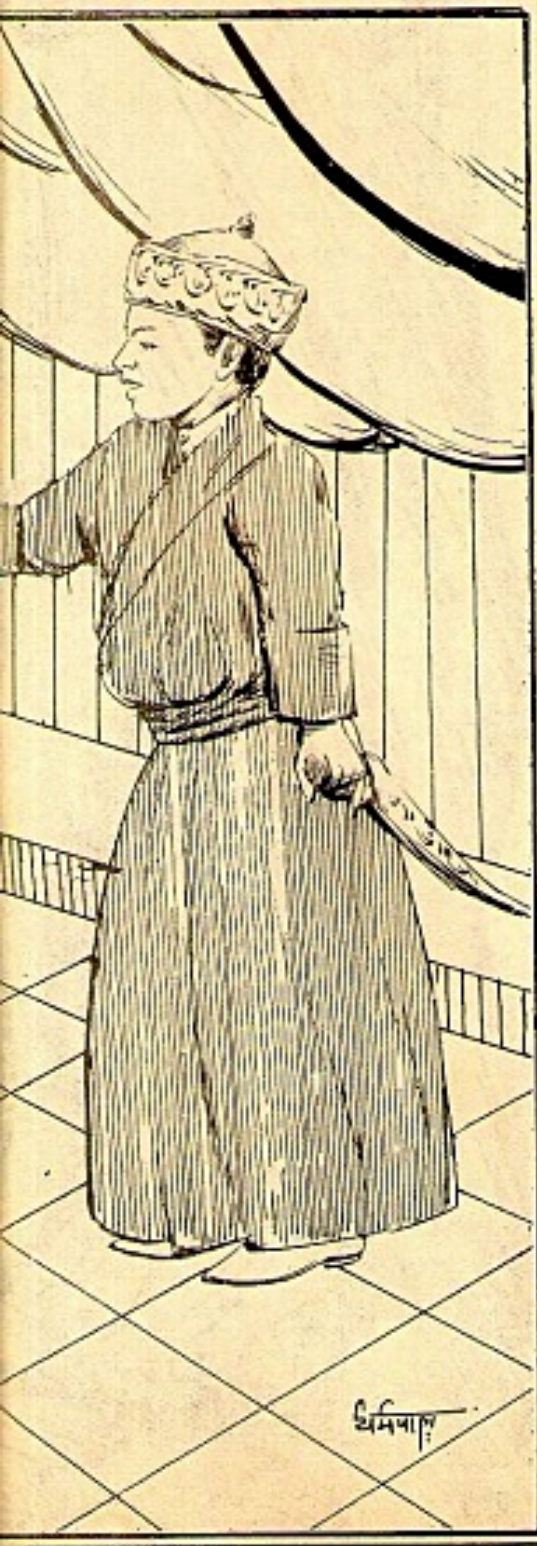

बुद्धिमता से चीन के सम्राट अत्यधिक प्रभावित हुए।

जब दूसरे दिन आठों राजकुमार सम्राट के समक्ष उपस्थित हुए तब उनके हाथ में नीलम का एक अत्यधिक बड़ा टुकड़ा था जिसे राजकुमारों को दिखाते उन्होंने कहा कि इस नीलम में सैकड़ों छिद्र नजर आते हैं, किन्तु वास्तव में इसमें एक ही छोटा सा छिद्र है। आप उस छिद्र में होकर धागा पिरोयें। सात राजकुमारों ने छेद में धागा डालने की कोशिश की किन्तु असफल रहे। असली छेद इतना छोटा था कि वह दिखाई ही नहीं देता था। अब तिब्बती राजकुमार की बारी आयी। उसने एक चींटी को पकड़ कर उसके धागा बांधा तथा उसे नीलम के एक ओर रखा तथा उसकी दूसरी ओर शहद लगा दिया। शहद की सुगन्ध से आकर्षित होकर चींटी छेद में घुस गयी तथा उसके साथ ही धागा भी चला गया। तिब्बती राजकुमार ने धागे में गांठ लगाकर सम्राट को दे दी। सम्राट ने उसे दूसरी प्रतियोगिता में भी विजयी घोषित कर दिया। उसने सब राजकुमारों से कहा- कल की तीसरी तथा अंतिम प्रतियोगिता है। यह सबसे कठिन है। पराजित होने वालों को अपना सिर गंवाना होगा। "इसलिए जो अपनी जान नहीं खोना चाहते हैं, वह प्रतियोगिता में भाग नहीं लें।" दूसरे दिन सम्राट ने अपने बढ़ई को एकान्त में बुलवा कर एक पेड़ के तने को इस प्रकार छिलवाया कि उसके दोनों सिरे ऐसे हो गए जिससे पता ही नहीं चले कि जड़ किस ओर थी।

समस्त राजकुमारों के एकत्रित हो जाने पर सम्राट ने उनको पेड़ का तना दिखाते हुए कहा- "आप यह बताएं कि इसका जड़ वाला सिरा कौन सा है?"

सात राजकुमारों ने पेड़ के टुकड़े को अत्यधिक ध्यान से उलट-पुलट कर देखा। उस पर हाथ फेरा, उसको उठाकर देखा मगर उनकी समझ में नहीं आया कि पेड़ के तने वाला भाग कौन सा था। वह अत्यधिक निराश होकर तिब्बती राजकुमार की ओर देखने लगे।

तिब्बती राजकुमार ने पेड़ के टुकड़े को नौकरों से उठवा कर किले के चारों ओर बनी खाई में गिरवा दिया। खाई में पानी बहुत धीमे-धीमे बह रहा था अतः पेड़ का टुकड़ा उसमें धीमे-धीमे बहने लगा। थोड़ी देर में उसका एक भाग ऊपर हो गया तथा दूसरा भाग नीचे। यह देखकर तिब्बती राजकुमार ने चीनी सम्राट से कहा "जो भी नीचे है, वह जड़ का भाग है। जड़ की ओर का भाग अधिक भारी होता है, अतः वह नीचे है तथा ऊपर का भाग हल्का होने से ऊपर है।

चीनी सम्राट ने प्रसन्न होकर तिब्बती राजकुमार को गले लगा लिया। उन्होंने कहा-

"राजकुमार, मैं अपने वायदे के अनुसार अपनी राजकुमारी का विवाह तुम से कल करूंगा। तुम मेरे उत्तराधिकारी बनोगे। यदि तुम कुछ मांगना चाहते हो तो मांग लो।"

तिब्बती राजकुमार कुछ समय के लिए विचार मग्न हो गया। उसने कहा-

"मेरा विवाह कल होगा। कल हर्ष का दिवस होगा। ऐसे दिन राजकुमारी के साथ विवाह की इच्छा से आए उन राजकुमारों का वध करना अनुचित होगा जो कि प्रतियोगिताओं में असफल रहे हैं। आप उनको जीवन दान देने की कृपा करें।"

सम्राट ने मुस्करा कर कहा "मेरे पुत्र मेरा इरादा किसी भी राजकुमार का वध करने का नहीं था। मेरा इरादा था कि केवल वीर व साहसी राजकुमार ही मेरी पुत्री के साथ विवाह करने हेतु प्रतियोगिताओं में भाग लें। अब मैं संतुष्ट हूं। केवल आठ राजकुमार ही आए तथा आप उन सबसे बुद्धि, सूझ-बूझ में सर्वश्रेष्ठ हैं। □

असम की लोककथा

किसी गांव में एक ब्राह्मण रहता था उसकी पत्नी बड़े बुरे स्वभाव की स्त्री थी। हर समय किसी न किसी से लड़ते-झगड़ते रहना उसकी आदत थी। ब्राह्मण सवेरे ही भिक्षाटन के लिए निकल जाता और सांझ ढलने पर घर लौटता। जिस दिन ब्राह्मण को भिक्षा में कुछ नहीं मिलता, उस दिन ब्राह्मणी उसे बुरा भला कहती। कभी-कभी तो मार-पिटाई की नौबत आ जाती और ब्राह्मण को उस रात घर से बाहर ही रहना पड़ता।

ऐसे ही एक दिन ब्राह्मण को भिक्षा में कुछ भी न मिला। खाली हाथ ब्राह्मण को लौटा देख ब्राह्मणी का गुस्सा सातवें आसमान तक जा पहुंचा। उसने चूल्हे की लकड़ी निकाली और ब्राह्मण को दे मारी। ब्राह्मण दर्द से चीखता हुआ घर से बाहर भागा। उसकी पत्नी ने उसका पीछा किया पर थोड़ी दूर जाकर निराश लौट आई। उसके घर के बाहर पीपल का एक पेड़ था वह उसी के नीचे बैठकर ब्राह्मण के लौटने का इन्तजार करने लगी। जब काफी देर तक ब्राह्मण नहीं आया तो उसका गुस्सा और बढ़ गया। अतः गुस्से से पागल ब्राह्मणी ने पीपल के पेड़ को ही लकड़ी से मारना शुरू कर दिया। उस पेड़ के खोखल में एक भूत रहता था वह बड़ा सीधा-सादा था, कभी किसी को परेशान नहीं करता था। अचानक हुए इस प्रहार से वह डर गया। बाहर आ हाथ जोड़ कर बोला- मेरा क्या कसूर है ब्राह्मणी जो तुम मुझे पीटने को तैयार हो?'

ब्राह्मणी ने कहा- तू जब तक मेरे पति को ढूंढ कर नहीं लायेगा, मैं तुझे भी यहां नहीं रहने दूंगी। भूत ने डर से उसकी बात मान ली और उसके पति को ढूंढने चल दिया। सारी रात वह जगह-जगह ब्राह्मण को ढूंढता रहा। अगले दिन सवेरे, जब वह एक बगीचे के पास से गुजर रहा था तब उसे पेड़ के नीचे एक आदमी बैठा दिखाई दिया। भूत झट उसके पास पहुंचा और बोला- क्यों भाई तुम ही अपनी पत्नी के डर से घर से भाग आए हो।

ब्राह्मण ने आश्चर्य से कहा 'तुम्हें कैसे मालूम?'

मैं भी तो तुम्हारी पत्नी से पिट कर बेघर हो गया हूं। चलो जल्दी घर लौट चलो ताकि मैं भी अपने घर में रह सकूं।

तुम तो भूत हो फिर तुम उसे कहां मिले? ब्राह्मण के भूत से पूछने पर भूत ने सारी कथा कह सुनाई। कि किस तरह ब्राह्मणी ने उसे उसके घर से निकाल दिया। इस पर ब्राह्मण ने वापस जाने से इन्कार करते हुए कहा- "तुम चाहे कहीं भी रहो मैं तो वापस उस कर्कशा औरत के साथ नहीं रहूंगा। इस पर भूत ने कहा- 'चलो मैं भी तुम्हारे ही साथ रहता हूं।"

एक दो दिन तो भिक्षा से निकल गए फिर भूत को ब्राह्मण का भिक्षा मांगना अच्छा नहीं लगा। उसने ब्राह्मण से कहा कि तुम कोई और काम क्यों नहीं करते ताकि तुम्हें भीख न मांगनी पड़े। इस पर ब्राह्मण ने कहा "भिक्षा मांगना मेरा काम है और मुझे कोई काम नहीं आता। तब भूत ने कहा मैं तुम्हें एक तरकीब बताता हूं जिससे तुम धनवान हो सकते हो, पर तुम्हें मेरी कुछ शर्तें भी माननी होंगी। मैं इस देश के प्रधानमंत्री की लड़की पर चला जाता हूं और किसी भी तरह न उतरूंगा तब तुम ओझा बन कर आना और कहना- ऐ भूत इस घड़े में आ जा तुम्हारे कहने से मैं घड़े में आ जाऊंगा और तुम्हें बहुत सा इनाम मिलेगा। पर मेरी शर्त यह है कि जब मैं राजा की लड़की के सिर जाऊं तब तुम यह घड़ा लेकर मत

डरपोक भूत

आना क्योंकि मैं राजकुमारी को प्यार करता हूं। ऐसा कह कर भूत ने एक घड़ा ब्राह्मण को दिया।

अगले ही दिन पूरे देश में यह चर्चा फैल गई कि प्रधानमंत्री की लड़की पर भूत-प्रेत का साया है। देश के बड़े-बड़े वैद्यों के इलाज से भी वह ठीक नहीं हुई। तब ब्राह्मण ओझा बन कर गया और बोला मैं यह भूत उतार सकता हूं। प्रधानमंत्री ने उसे अपनी बेटी व एक हजार स्वर्ण मुद्राएं देने का वायदा किया।

ओझा बने ब्राह्मण ने मंत्री की पुत्री के सामने जाकर खाली घड़ा रख दिया और बड़ी जोर से चिल्ला कर कहा- 'ऐ भूत के बच्चे, झट-पट इस घड़े में आ जा' भूत घड़े में आ गया। मंत्री की बेटी बेहोश होकर गिर पड़ी और थोड़ी ही देर में स्वस्थ हो उठी। प्रधानमंत्री ने वचन के अनुसार बेटी का विवाह ओझा से कर दिया और उसे एक हजार स्वर्ण मुद्राओं के साथ एक महल रहने के लिए भी दिया।

उधर, भूत घड़े से निकल कर राजकुमारी के सिर जा बैठा। राजकुमारी कभी हंसती तो कभी रोती। राजा-रानी उसके इस व्यवहार से बड़े चिन्तित हो गए। देश भर के नामी से नामी वैद्य व ओझा उसे ठीक नहीं कर पाए तब प्रधानमंत्री ने राजा को अपनी पुत्री की बात बताई और कहा- मेरा दामाद इसे ठीक कर सकता है।

राजा ने तुरन्त ब्राह्मण को घड़ा लेकर आने को कहा।

ब्राह्मण को भूत की शर्त याद थी अतः उसने राजकुमारी को ठीक करने से मना कर दिया। इस पर राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने आदेश दिया कि यदि कल सुबह तक राजकुमारी ठीक नहीं हुई तो मंत्री के दामाद को फांसी पर लटका दिया जायेगा। अब बेचारा ब्राह्मण क्या करता। घड़ा लेकर जा पहुंचा राजकुमारी के महल में।

भूत ने उसे घड़ा लेकर आते देखा तो जोर से चिल्लाया क्यों ब्राह्मणें, तुझे मेरी बात याद नहीं क्या?

इस पर ब्राह्मण डरते हुए बोला- मुझे तुम्हारी सारी बाते याद है पर मैं बड़ी मजबूरी में यहां आया हूं। एक बात तुम्हारे कान में कहनी है और है भी तुम्हारे भले की।

भूत बात सुनने ब्राह्मण के पास आया। तब ब्राह्मण ने उसके कान में कहा- मेरी ब्राह्मणी को मेरे विवाह व इनाम की बात पता चल गई है वह चूल्हे की जलती लकड़ी लेकर तुम्हें और मुझे ढूंढ रही है मेरा पीछा करते हुए वह राजमहल के द्वार तक तो आ ही गई थी, यहां भी अभी पहुंचने वाली होगी। अतः मैं तो तुम्हें बचाने के लिए ही यह घड़ा लाया था।

भूत उसकी बातों में आ गया और कूद कर घड़े में जा छिपा। ब्राह्मण ने उस पर ढक्कन लगाकर कपड़े से उसका मुंह बांध दिया।

राजा ने ब्राह्मण को आधा राज्य इनाम में दिया परन्तु ब्राह्मण को तो उस भूत की फिक्र ज्यादा थी। वह जल्दी ही उस घड़े को भारी पत्थर के साथ बांधकर ब्रह्मपुत्र नदी के मंझधार में डुबो आया। □

■ मृणालिनी श्रीवास्तव

[द्वितीय]

एक थी गिलहरी। नाम था चीनू। काम-धाम तो वह कुछ खास करती नहीं थी पर शैतानियों में बाबा रे बाबा! अव्वल नम्बर! कहते हैं न, खाली दिमाग शैतान का घर! जी हां, बिलकुल इसी कहावत को चरितार्थ करती थी चीनू। एक जगह टिककर बैठना तो शायद उसकी जन्मपत्री में भी नहीं लिखा था। और शैतानियां भी ऐसी वैसी नहीं। ऐसी-ऐसी शैतानियां करती थी कि पूरा चम्पकवन उससे दुःखी था। कभी भैंस की पूंछ पर अपने तीखे दांत गड़ा देती तो कभी बच्चों के नन्हें पैरों पर कूदकर उन्हें डरा देती। यहां तक कि शैतानी और चीनू तो अब एक ही सिक्के के दो पहलू बन चुके थे।

अभी कुछ ही दिन पहले की तो बात है- गोलू गधा नदी किनारे नरम दूब चबाकर बड़ी गहरी नींद में सो रहा था। तभी शैतान चीनू न जाने कहां से वहां पहुंच गई। गधेराम को खर्राटे भरते देखकर चीनू के दिमाग में शैतानी के 440 वोल्ट के बल्ब एक बार फिर जल उठे। बस, फिर क्या था। पहले तो उसने गोलू गधे की पूंछ से उसके पैरों को बांधा फिर गोलू के नाक में लम्बी, जंगली घास के तिनके डालकर ऐसा हिलाया कि आऽऽकछीं की आवाजें जोर-जोर से सुनाई देने लगीं। छींकों के साथ ही गोलू की आंख खुल गई। आंख खुलते ही जब उसने चीनू को जंगली घास पकड़े खड़े देखा तो वह सारा मामला समझ गया। क्रोध से गोलू का शरीर कांपने लगा। पर... अरे, यह क्या हुआ? जैसे ही गोलू गधे ने चीनू को पकड़ने के लिए खड़े होना चाहा कि धड़ाम से जमीन पर गिरा। और गिरता क्यों नहीं? नटखट चीनू ने गोलू की पूंछ से उसके पैर जो बांध दिए थे। चीनू को तो अब एक नया तमाशा मिल गया था। वह उसे चिढ़ाती जाती और चिढ़कर जैसे ही गोलू उठने का प्रयत्न करता कि धड़ाम से गिर पड़ता। जब चीनू का मन इस नए खेल से भर गया तो वह गोलू गधे को उसी हालत में छोड़कर चलती बनी। बाद में उसे किसी तरह बड़ी मुश्किल से चिम्पी बन्दर ने खोला। नहीं तो न जाने कब तक उसी हालत में पड़ा ढेंचू-ढेंचू करता रहता।

सबसे डांट खाने के बाद भी चीनू अपनी शैतानियों से बाज नहीं आई। आखिर शैतानी उसका जन्मसिद्ध अधिकार जो ठहरा।

एक दिन जंगल में सामूहिक भोज

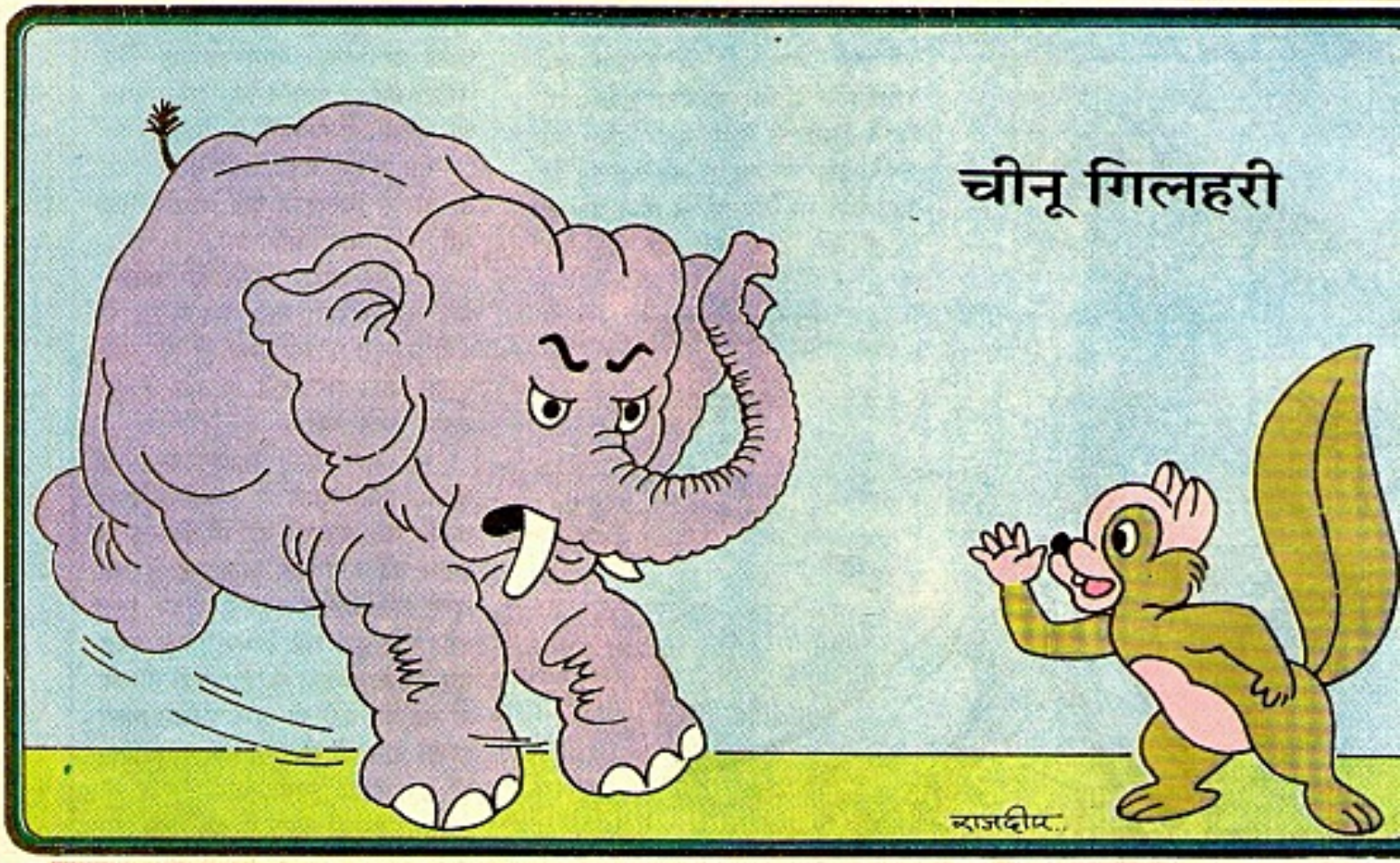

का आयोजन हुआ था। सब पक्षियों ने मिलजुल कर बड़ी मेहनत से खाना बनाया था। दूर-दूर तक फैली खाने की सुगंध से पता चलता था कि खाना सचमुच स्वादिष्ट बना है। पर शैतानी किए बिना चीनू को चैन कहां था? उसके दिमाग में तो शैतानियों की रेल चलती थी। वह दबे पांव रसोईघर में गई और खाने में ढेर सी लाल मिर्च डाल दी।

जब खाना परोसा गया तो सबकी हालत देखने योग्य थी। गुटकी भैंस तो छोटे तालाब का जाने कितना पानी पी गई, तो गुल्लू गधा ढेंचू-ढेंचू करता जमीन पर लौटने लगा। चतुर लोमड़ी की आंखों से गंगा-जमुना बहने लगी। कल्लू चीता भी जोर-जोर से दहाड़ने लगा। सभी जानवरों का यही हाल था सिवाय चीनू के। वह इन सबकी ऐसी हालत देखकर हंस-हंस कर दोहरी हो गई थी। पर नटखट चीनू की शैतानियों का कोई अंत थोड़े ही है।

कल रात हाथी दादा बीमारी के कारण ठीक से सो नहीं पाए थे। सो आज दोपहर को उनकी आंख लग गई थी। उनको इस तरह मस्ती में सोते देखकर चीनू के सिर में खुजली शुरू हो गई। चीनू गिलहरी किसी से डरती तो थी नहीं, सो उसे किस बात की चिंता। उसने हाथी दादा की सूंड के सिरे पर ऐसी जोर से दांत गड़ाए कि हाथी दादा अचकचा कर उठे और जोर से चिंघाड़ते हुए इधर से उधर भागने लगे। सूंड को पानी में डालकर बैठे तब चैन पड़ा। तभी चीनू उनके पैरों के बीच में से निकल कर उनकी पीठ पर चढ़ गई। हाथी दादा गुस्से में बौखला कर उसे पकड़ने को सूंड इधर-उधर मारने लगे तो वह ऊंचे पेड़ की लम्बी टहनी पर चढ़कर उन्हें चिढ़ाने लगी। काफी देर कोशिश करने के बाद भी जब चीनू उनकी पकड़ में नहीं आई तो वे खीजकर चल दिए।

खैर, जैसे-तैसे हाथी दादा की पूंछ का इलाज तो हो गया पर नटखट चीनू की शैतानियां तो लाइलाज हैं। □

■ **क्षमा केडिया**

15 वर्ष, जयपुर

[तृतीय]

मेरे पापा का तबादला बांसवाड़ा हो गया था। हम नए मकान में आए। वहां हमने बगीचे में एक पेड़ के कोटर में देखा, एक गिलहरी रहती थी। हम लोग जब नए-नए आए तब तो वह दूर ही रहती परन्तु तंग बहुत करती थी। मम्मी बाहर लॉन में कोई चीज सुखातीं तो वह उन्हें खाती या बिखेर देती थी। हमारे परिवार के सदस्य धीरे-धीरे उससे दोस्ती करने लगे। हमने उसका नाम चीनू रख दिया। सभी उसे चीनू कहकर पुकारते थे।

चीनू गिलहरी नटखट, चुलबुली और शैतान थी। बेरोकटोक घर में आ जाती। इधर-उधर उधम मचाती। जब पापा आफिस, दीदी-भैया व मैं स्कूल जाते तो वह मम्मी के पीछे-पीछे घूमती रहती या हमारे कुत्ते कूंकूं को तंग करती रहती और खुश होती।

हम सबके आने पर इतनी खुश होती कि इधर-उधर फुदकती रहती थी। जब हम होमवर्क करते तो वह कभी पेन, कभी पेन्सिल गिरा देती तो कभी रबर लेकर चली जाती। मेरी दीदी को चित्रकला का बहुत शौक है। चीनू अकसर उनके रंग बिखेर देती या उनके ब्रश कुतर डालती।

एक बार मेरे स्कूल में चित्रकला प्रतियोगिता थी। दीदी मुझे तैयारी करवा रही थीं। चीनू गिलहरी तब हमारे पास ही बैठी थी। रात को हमने पढ़ने के कमरे में पेन्टिंग रख दी। चीनू गिलहरी वहां पहुंची और उस पेन्टिग पर अलग-अलग तरह के रंगों को बिखेर दिया। सुबह उठते ही दीदी ने देखा तो लाल पीली होने लगीं। मैं तो रोने लगी क्योंकि उसी दिन एक घंटे बाद ही प्रतियोगिता थी। पापा-मम्मी ने मुझे समझाया कि जो हुआ सो हुआ। उस दिन चीनू गिलहरी पर मुझे इतना गुस्सा आया कि उसे कच्चा चबा जाऊं पर वह न जाने कहां छुपी बैठी थी। फिर अनमने मन से मैं स्कूल पहुंची। अपनी पेन्टिग सभी से छुपाती रही। सभी ने अपनी पेन्टिग रख दी तब अध्यापिका ने मुझसे कहा, 'तुम भी अपनी पेन्टिग रखो। तो मैंने उन्हें सारी बात बता दी। उन्होंने कहा, 'तुम रख तो दो, नम्बर नहीं आया तो कोई बात नहीं।' मैंने पेन्टिंग रख दी। परन्तु डर था कि कोई यह न कह दे कि ड्राइंग नहीं आती तो क्यों बनाई।

अंत में, जब निर्णय सुनाया गया तो सबसे पहले मेरा नाम बोला गया। मुझे विश्वास नहीं हुआ। मुझे प्रथम पुरस्कार दिया गया।

मैं जल्दी से घर पहुंच जाना चाहती थी। मन चाह रहा था चीनू गिलहरी को चूम लूं। घर पहुंची तो भैया ने मुझे देखते ही कहा, 'दीदी, चीनू गिलहरी बिजली के तार से चिपक कर मर गई।

सुनकर मुझे धक्का लगा। अंदर गई तो देखा चीनू गिलहरी का मृत शरीर पड़ा था। चीनू चली गई परन्तु मुझे दुःख और खुशी दोनों एक साथ दे गई।

मैं वह दिन आज भी नहीं भुला पाई। □

■ **प्रियंका खमेसरा,**

10 वर्ष, बांसवाड़ा

दूरदर्शन विज्ञापन : मेरे अनुभव

जैसे ही आठ बजे, मैं अचानक खड़ी हो गई और टेलीविजन को देखने लगी। यह समय विज्ञापन प्रसारण का था। अब उस तड़क-भड़क की दुनिया के एक के बाद एक लुभावने चेहरे चमकीली पोशाकें और मुंह में लार टपका देने वाले खाद्य पदार्थ सामने आने लगे। मैं उन विज्ञापनों की ओर खिंचती चली गई। एक मिनट के लिए तो मैं उस विज्ञापनों के स्वप्न संसार में खो ही गई।

यह दूरदर्शन का सबसे अधिक आकर्षक फीचर विज्ञापन प्रसारण ही था जिसमें नर्म मुलायम बाल, लाजवाब आइस्क्रीम, नौजवान चेहरे, प्रसिद्ध हीरो और फैशनेबल कपड़े थे जिन्होंने मुझे टेलीविजन खोलने के लिए आकर्षित किया।

यद्यपि विज्ञापन वस्तुओं के प्रचार व प्रसार के लिए दिखाए जाते हैं ताकि लोग उन्हें खरीदने को आकर्षित हों लेकिन अब इन विज्ञापनों से दर्शकों का टी.वी. कार्यक्रमों की अपेक्षा अधिक मनोविनोद होने लगा है लोग इन्हें देखना अधिक पसन्द करते हैं। मैं स्वयं भी इन विज्ञापनों से इतनी अधिक प्रभावित हूं कि हमेशा चाहे मेरी परीक्षा हो या घर में मेहमान आएं मैं कुछ समय तो इन्हें देखने के लिए बचाकर रखती ही हूं। यहां तक कि बुद्धिमान लोगों द्वारा पसंद किए जाने वाले प्रोग्राम तथा समाचारों को सुनना व देखना भी छोड़ सकती हूं पर विज्ञापन देखना नहीं छोड़ सकती। नवीनीकरण की ओर बढ़ती हुई प्रकृति से मनुष्य का सामाजिक जीवन बहुत प्रभावित हुआ है। विज्ञापनों के कारण मनुष्यों के रंग-ढंग बदले हैं। लोगों की पोशाकों तथा हावभाव सभी मे यह परिवर्तन दीखता है। पहले व्यक्ति सिनेमा से प्रेरित होता था अब टेलीविजन से होने लगा है। दूरदर्शन अब करीब-करीब सभी घरों तक पहुंच चुका है और एक आवश्यक घरेलू सामग्री के रूप में जाना जाने लगा है। इससे न केवल लोगों की वेशभूषा में परिवर्तन आया है बल्कि लोगों के खाने के स्वाद भी बदले हैं। लोग अब उन भोज्य पदार्थों को खाना पसन्द करते हैं जिनका कि वे टी.वी. पर विज्ञापन देख लेते हैं।

किशोर उम्र के बच्चे विज्ञापनों से विशेष प्रभावित होते हैं। तड़क-भड़क और दिखावा पसन्द करने वाले तथा अत्यधिक फैशनेबल लोग अपने दैनिक सामान्य जीवन में इन्हीं विज्ञापनों की नकल करते हैं।□

■ **रचना शर्मा**
जयपुर

रात को नौ बजे जैसे ही हम अपना टेलीविजन चलाते हैं तो वही चिर-परिचित चेहरे और शीर्षक दिखाई देते हैं। यह एक ओर जहां टेलीविजन के व्यावसायिक पक्ष को उजागर करता है वहीं दूसरी ओर हमारे देश में विज्ञापन प्रसारण में सन् 1980 के बाद से आने वाले सतत सुधार को भी दर्शाता है। यह सुधार रंगीन टेलीविजनों के निर्माण का फल है।

मुझे अपने 1983-84 के अनुभव याद हैं जबकि विज्ञापन सीधे चित्रों के माध्यम से दिखाए जाते थे। उस समय किसी भी उत्पादन को पृष्ठभूमि में संगीत की ध्वनि के साथ कुछ देर उसके नाम और उपनाम के साथ दिखा दिया जाता था। ये कुछ जाने पहचाने विज्ञापन होते थे। तब मैं छोटा था पर उस समय मुझे उन विज्ञापनों ने बिल्कुल प्रभावित नहीं किया। इसीलिए मैं टेलीविजन देखने में रुचि भी नहीं लेता था।

मैं यह कहना चाहूंगा कि विज्ञापन प्रसारणों में सुधार धारावाहिकों के प्रचलन से भी हुआ है। विभिन्न व्यावसायिक कम्पनियां एक से बढ़कर एक नए-नए तरीकों को विज्ञापन प्रसारण में अपनाती हैं। टेलीविजन के विज्ञापनों की चकाचौंध बच्चों को बहुत आकर्षित और प्रभावित करती है।

मैं स्वयं नाश्ते की सामग्रियों, ठंडे पेय तथा आइस्क्रीम आदि के विज्ञापनों से प्रभावित हूं।

इन विज्ञापनों के द्वारा व्यापारिक कम्पनियों को अच्छा लाभ मिलता है, यदि विज्ञापन बहुत अच्छा और प्रभावकारी है तो यह बात वाकई महत्त्व नहीं रखती कि प्रचारित वस्तु कैसी है? बस उस प्रचार मात्र को देखकर हम उस चीज को प्राप्त करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। इसे विज्ञापनों का कुप्रभाव कहा जा सकता है जिससे मैं स्वयं भी पीड़ित हूं।

किन्तु मात्र इसी कारण हम विज्ञापनों की उपेक्षा नहीं कर सकते। नीरस व ऊबा देने वाले धारावाहिकों को देख चुकने के बाद यह विज्ञापन ही हमारे मस्तिष्क को ताजा बनाते हैं। इन्हीं विज्ञापनों के जरिए हम बाजार में बिकने वाली बहुत सी नई सामग्रियों की जानकारी भी प्राप्त कर लेते हैं। हम जिस चीज का विज्ञापन देख लेते हैं उसी से प्रभावित होकर वस्तु माता-पिता से मंगवाने को उत्सुक हो जाते हैं।

मुझे यह कहने में गर्व महसूस होता है कि हमारे देश में अब जो विज्ञापन प्रसारित किए जा रहे हैं वे अन्य पश्चिमी देशों में दिखाए जाने वाले विज्ञापनों के बराबर आ गए हैं। आज हम भी अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों के सामने गर्व से बोल सकते हैं।□

■ **मोहित वर्मा**
जयपुर

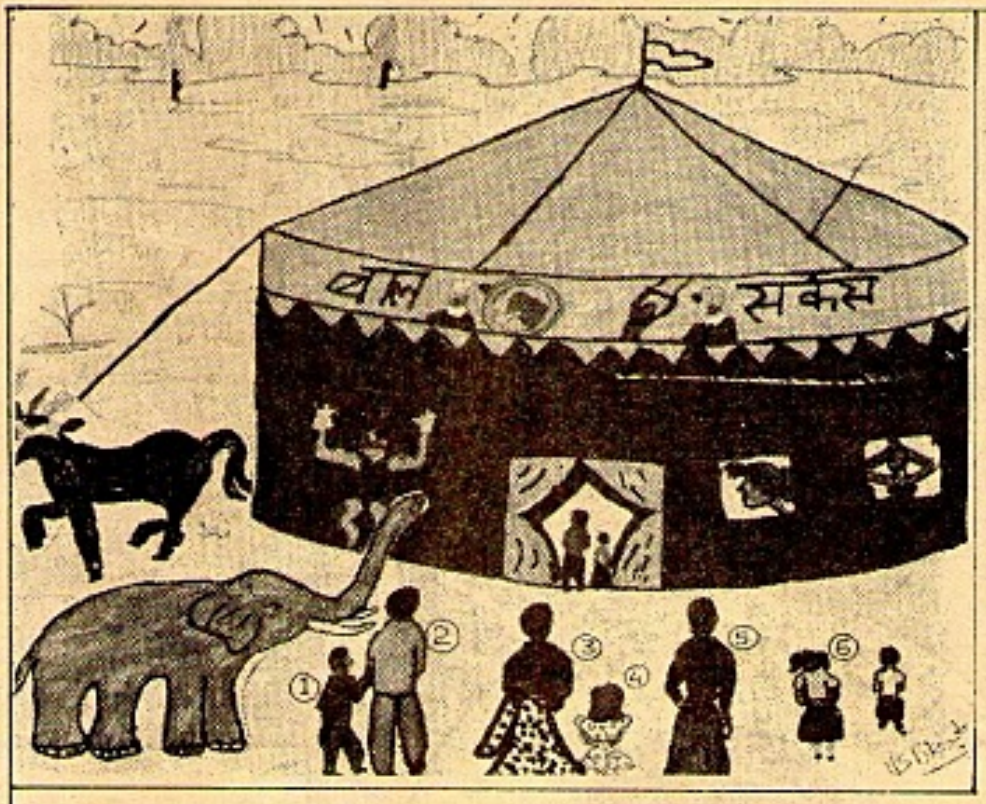

प्रतियोगिता परिणाम

किसने क्या कहा?

[1]

1. पापा, अन्दर चलो न, देखो वो भी जा रहे हैं।
2. नहीं बेटे, यह अपने बस की बात नहीं है। वे अमीर हैं।
3. हां, आप ठीक कहते हैं। देखो न एक टिकिट 25 रुपए का है।
4. पापा, यह महंगाई कितनी गन्दी होती है ना।
5. हां, देखो, हमें अन्दर तक नहीं जाने देती। महंगाई यहां बाल सर्कस में भी आ पहुंची।
6. पापा, मैंने सुना है, इसके अन्दर जानवर भी गए हैं। क्या जानवर हमसे भी अमीर हैं। हम तो इनसान हैं।

— गरिमा गर्ग
12 वर्ष, जोधपुर- [राज.]

[2]

1. भैया, हमें भी सर्कस दिखा दो न।
2. अरे, क्यों बेकार में पैसा खर्च करें?
3. भैया सच कहते हैं। चलो, मेला देखते हैं।
4. ....नहीं.... मैं तो सर्कस ही देखूंगी।
5. हे भगवान! बच्चे भी कितने जिद्दी होते हैं।
6. क्यों क्या आप कभी बच्चे नहीं रहे थे? हम तो देखेंगे सर्कस।

— राधेश्याम जोशी,
13 वर्ष, पो. कोहिना- चूरू [राज.]

[3]

1. पापा, अन्दर जाने में कितनी देर और है, जल्दी चलो न।
2. बस बेटे, थोड़ी ही देर और है। अभी पहला शो खत्म नहीं हुआ...
3. हां, अभी घोड़े का खेल खत्म हुआ है। शायद अब हाथी अन्दर जाएगा।
4. मम्मी, खड़े-खड़े थक गए हैं। किन्तु सर्कस के अन्दर जाते ही सारी थकान फुर्र हो जाएगी।
5. ये बच्चे तो सर्कस के दीवाने हैं। जब सर्कस लगे फौरन जिद शुरू...अरे मीना, उधर मत जाओ.., मेरे पास खड़ी रहो।
6. मम्मी, बस जरा वह पोस्टर पास से देखकर आती हूं।

— सुनील कुमार भाटी,
13½ वर्ष, चौमहला [राज.]

इन बच्चों को 40-40 रुपए पुरस्कार स्वरूप भेजे जाएंगे। सं.-

[4]

1. क्या यही है, बाल सर्कस पिताजी?
2. हां बेटा, वो देखो, सामने जोकर और बौना आया।
3. देखो बेटी, सामने जोकर और बौना खेल दिखा रहे हैं।
4. मम्मी-मम्मी, वो तो सुरेश और राकेश हैं।
5. हां बेटे, यह सर्कस तो बच्चों द्वारा ही दिखाया जा रहा है।
6. काश! मैं भी इस सर्कस में रहती।

— सर्वेश कुमार सिन्हा,
12 वर्ष, राजगीर [नालन्दा]

[5]

1. पापाजी, सर्कस में हाथी भी होंगे।
2. हां बेटे, हाथी तो सर्कस की शान है
3. चलो बेटी, जल्दी वरना सर्कस की सीटें भर जाएंगी।
4. मां चल तो रही हूं। मैं तो जरा बाहर लगे हुए रंगीन फोटो देख रही थी।
5. मैंने बहुत से सर्कस देखे मगर यह बाल सर्कस अपने आप में अजूबा है।
6. राजू उधर कहां जा रहे हो, दरवाजा इधर है।

— चन्दन कुमार,
जमशेदपुर

यदि मुझे मौका मिले तो...

प्रतियोगिता परिणाम

विचार मंच

यदि मुझे देश के लिए कुछ करने का मौका मिला तो मैं सबसे पहले उन नेताओं को दंड दूंगी जो गरीबों का खून चूस-चूस कर अपना घर भरते हैं। इसके बाद पंजाब व कश्मीर समस्या के बारे में उचित निर्णय करूंगी क्योंकि इन तीनों समस्याओं के कारण ही हमारा देश तरक्की नहीं कर पा रहा है।

अगर इन समस्याओं से छुटकारा मिला तो देश के गरीब लोगों की तरफ ध्यान दूंगी। गरीबों को घरेलू उद्योगों का प्रशिक्षण दिलाकर घरेलू उद्योगों को बढ़ावा दूंगी। गरीबों के लिए एक ऐसी संस्था खोलूंगी जिसमें उन्हें सस्ते दामों पर रोटी, कपड़ा और मकान मिल सके। गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दूंगी। जो बच्चे पढ़ने में मेधावी होंगे, उन्हें छात्रवृत्ति दूंगी जिससे वे उत्साहित होकर खूब पढ़ें।

प्रियंका सोनी,
14 वर्ष, महाराजगंज- सिवान [बिहार]

मैं डॉक्टर बनना चाहती हूं। डॉक्टर बनकर सेना में काम करूंगी। घायल सैनिकों की सेवा करूंगी। आवश्यकता पड़ने पर अपना खून भी दूंगी।

यदि सेना में काम नहीं मिला तो अपना स्वयं का दवाखाना खोलूंगी जिसमें असहाय एवं गरीब लोगों के लिए इलाज एवं दवा मुफ्त होगी।

नेहा स्मृति 7 वर्ष, बलिया

दिनोंदिन बढ़ती जा रही महंगाई को रोकने का प्रयास करूंगा। जो व्यापारी माल को गोदामों में भर कर काला बाजारी करते हैं, उन्हें भारी सजाएं दूंगा। बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए ऐसी संस्था बनाऊंगा जो घर-घर जाकर लोगों को समझाएगी कि अधिक बच्चे होने से क्या हानियां होती हैं।

जितेन्द्र कुमार 15 वर्ष, सूरतगढ़

यदि मुझे एक अवसर मिल जाए देश की बागडोर हाथ मेरे आ जाए तो सच कहती हूं, ऐसे-ऐसे काम करूंगी
सबसे ऊंचा अपने देश का नाम करूंगी
आतंकवाद को कर दूंगी, मैं तब नष्ट
गरीब जनता नहीं सहेगी तब और कष्ट
शोषित वर्गों को उठाकर ऊपर
शुरू दलित त्राण अभियान करूंगी
बनेंगे नए-नए अनाथालय,
निरक्षरों के लिए विद्यालय।
दूर मैं करूंगी दुराचार
दूर मैं करूंगी दुराचार
नहीं और पलेगा भ्रष्टाचार।
खुद जीयो औरों को भी
जीने दो का नारा
यही मशहूर ग्राम-ग्राम करूंगी
एकता का पाठ पढ़ाकर
मैं सबको एक समान करूंगी
सबसे ऊंचा अपने देश का नाम करूंगी।

अनुपमा माहेश्वरी, 13 वर्ष, ग्वालियर

यदि मुझे मौका मिले तो मैं सबसे पहले देश की बढ़ती जनसंख्या को घटाऊंगी, गरीबी और भुखमरी को हटाऊंगी क्योंकि यही सारी समस्याओं की मुख्य जड़ है। इन्हीं से आतंकवाद और बेरोजगारी पैदा हुए हैं। इन्हीं की वजह से लोग चोरी, डकैती करने पर मजबूर हुए।

मैं सरकारी कर्मचारियों को मेहनत और ईमानदारी से काम करने के लिए प्रेरित करूंगी क्योंकि वे मेहनत और लगन से काम करेंगे तभी हमारा देश प्रगतिशील बनेगा और उसे दूसरे देशों के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। मैं औरतों के शोषण के विरुद्ध लड़ूंगी। पिछड़ी जातियों को समान अधिकार दिलवाऊंगी। मैं देश की आर्थिक समस्याओं को सुधारने के लिए पैसे को व्यर्थ कार्यों में नहीं लगाऊंगी। इन सब कार्यों के पीछे मेरी यही कामना है कि मेरा देश समृद्धशाली बने।

ऋचा सिंह चन्देल, 13 वर्ष, बांदा

यदि मुझे मौका मिले तो मैं सबसे पहले भ्रष्टाचार मिटाने की कोशिश करूंगी। इस बीमारी के रहते कोई योजना सही रूप से पूरी नहीं हो सकती। योग्य व्यक्ति, सही पद प्राप्त नहीं कर पाते, देश का शासन अयोग्य व्यक्तियों के हाथों में चला जाता है।

दूसरा काम देश के व्यक्तियों को

उनका अपने देश के प्रति जो कर्तव्य है, उसका बोध कराना है। नागरिकों को जब अपने कर्तव्य का बोध होगा, आतंकवाद स्वयं समाप्त हो जाएगा। एकता दृढ़ होगी। देश मजबूत होगा तो कोई आंख उठाकर नहीं देख सकेगा।

यह सब कार्य करने में अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करूंगी।

सोनल अरोड़ा, हनुमानगढ़ जंक्शन

मैं सबसे पहले आतंकवाद और भ्रष्टाचार के विरुद्ध सफाई अभियान चालू करता। इन दो राक्षसों ने ही देश में दरार डाल रखी है। इन्हें खदेड़ कर देश में शान्ति और अमन लाता। बच्चों को निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करवाकर पूरे

देश को शिक्षित बनाता।

अंत में बढ़ती जनसंख्या को रोकने का प्रयास करता, कृषि को बढ़ावा देता। बस! इतना ही तो करना है। सुख-चैन अपने आप ही देश के दरवाजे पर दस्तक देगा।

गौरव तिवारी इलाहाबाद [उ.प्र.]

यद मुझे मौका मिले तो मैं अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए एक विमान चालिका बनूंगी। मैं कुमारी जीन बैटन की तरह बनना चाहती हूं। उसने 22 वर्ष की आयु में अद्भुत व आश्चर्यजनक कारनामा कर दिखाया था। आज भी विमान चालकों के लिए वह एक प्रेरणा है।

आज बहुत तेज चलने वाले विमान है। परन्तु मैं जीन बैटन से प्रेरणा लेकर रेगिस्तान पर जहाज उड़ाऊंगी व यात्रियों को सुरक्षित रेगिस्तान पार कराऊंगी। चाहे रेगिस्तान में भयानक अंधड़ क्यों न आते हों, मैं अपने निश्चय पर अडिग रहूंगी। यात्रियों की सुरक्षा ही मेरे लिए भगवान होगा और विमान चलाना मेरी पूजा होगी।

यदि मुझे मौका मिले तो मैं अपनी उभरती कला को नहीं दबाऊंगी बल्कि उसे और उभारूंगी। मैं चाहती हूं कि देश का हर नागरिक भारत की सेवा करे व भारत एक बार फिर गर्व से विश्व के

आगे सिर उठा सके।

नम्रता नैय्यर उदयपुर

यदि मुझे मौका मिला तो मैं देश से गरीबी मिटाने के लिए कार्य करूंगा। देश में फैले अन्धविश्वास को दूर करूंगा तथा अशिक्षित लोगों को शिक्षित करूंगा।

बढ़ती हुई बेरोजगारी को रोकने के लिए उद्योग धन्धे, कुटीर उद्योग, हाथकरघा आदि को बढ़ावा दूंगा।

गांव के लोगों को शिक्षा देकर कृषि उत्पादन के लिए आधुनिक औजार खाद, बीज आदि की व्यवस्था कराऊंगा। पानी बिजली की व्यवस्था तथा आवागमन के साधन उपलब्ध कराऊंगा। गांव में चिकित्सालय पाठशालाएं खुलवाऊंगा।

विज्ञान के क्षेत्र में देश को आगे बढ़ाऊंगा तथा बढ़ते हुए आतंकवाद को रोकने का प्रयास करूंगा। बढ़ती हुई आबादी पर रोक लगाने के लिए कार्य करूंगा।

यदि मुझे मौका मिले तो भारत की खोई प्रतिष्ठा को वापिस प्राप्त कर संसार में देश का नाम ऊंचा करूंगा।

कमल असवाल 13 वर्ष, जयपुर

मैं सोचती हूं कि यदि मुझे एक बार मौका मिल जाए तो रिश्वतखोरों की

काल बन जाऊं। सभी गलत व्यक्ति मेरे नाम से डरने लगें।

वे लोग जिनके कारण आज देश रो रहा है, और जिनके कारण आज देश की आर्थिक स्थिति पूरी तरह क्षीण हो चुकी है, जनता के सामने उन्हें बेनकाब करूंगी।

देश का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो, इस दिशा में कार्य करूंगी। बस! मेरा प्यारा भारतवर्ष जो काले धनवानों की जंजीरों में जकड़ा है, उसे मुक्त करवा दूंगी तभी गरीब और दबा व्यक्ति चैन की सांस लेगा। फिर देश प्रगति की सीढ़ियों पर चढ़ता जाएगा।

सौम्या उपाध्याय 12 वर्ष, बलिया

शेष पृष्ठ 81 पर

शिल्पी, साधना, सिम्मी

मेरी केवल तीन ही सहेलियां हैं- प्यारी, नटखट और शैतान भी।

शिल्पी पढ़ने में अच्छी, स्वभाव में मीठी मगर कोई बात हो जाए तो गुस्सा- बाप रे! संभालना मुश्किल। उसके गुस्से के कारण ही आज भी जब कोई बात मुझे उससे करनी होती है तो पहले ही सोच लेती हूं कि मुझे उसे क्या कहना चाहिए। कैसे कहना चाहिए ताकि वह नाराज न हो।

साधना अच्छी मगर गरूर वाली है। वो बहुत सुन्दर है। वो पढ़ाई में ज्यादा ध्यान नहीं देती। हमेशा अपने में ही खोई सी रहती है। सामने वाले को क्या कहना चाहिए ये जरा भी नहीं सोचती। उसकी और शिल्पी की हमेशा तनातनी हो ही जाती है। परीक्षा के लिए इधर-उधर से मारने की जो आदत है वो लाख हमारे कोशिश के नहीं छूटी है। मेहनत करना वो नहीं जानती। उसे तो सब पका-पकाया ही चाहिए।

और मेरी सबसे प्यारी सहेली है- सिम्मी। एकदम शान्तिप्रिय, न किसी से झगड़ा न ही ज्यादा दिखावा, पढ़ने में सबसे ज्यादा होशियार है। दूसरों की मदद करना उसकी सबसे बड़ी खूबी है। कक्षा में हमेशा प्रथम आती है। व्यवहार में मधुरता के कारण ही सब उसे बहुत पसन्द करते हैं। सिम्मी बहुत अच्छा गाती है। उसे कई प्रतियोगिताओं में इनाम मिले हैं। □

■ **अन्जू शर्मा,**
जयपुर

मेरी तीन सहेलियां हैं- क-ख-ग। 'क' पढ़ाई में बहुत अच्छी है। वह सभी को अपना मित्र मानती है। बाजार की चाट-पकौड़ी को तो छूती तक नहीं है। जब भी मैं स्कूल नहीं जा पाती हूं, वह मेरा सारा काम बहुत जल्दी करवा देती है।

'ख' बहुत दूर रहती है। उसे सबके साथ खेलने के बजाय अकेले बैठकर किसी से बातें करना अच्छा लगता है। वह गाती बहुत अच्छा है और नाचती भी अच्छा है।

'ग' बहुत सुन्दर है। मगर बात-बात पर चिढ़ जाती है। मगर दिल की बहुत अच्छी है। सब की बहुत मदद करती है। □

■ **अपर्णा शर्मा,**
भीलवाड़ा

ओह, मेरी सहेली 'क' की बात ही निराली है। सच्ची कहूं तो बचपन से ही हम साथ-साथ खेले हैं। लोग हमारी दोस्ती की मिसाल देते हैं। मगर वह देवीजी कितनी खतरनाक है, यह मुझसे बेहतर कौन जान सकता वैसे मेरी 'क' रानी बुरी नहीं है। मगर उसकी हाथ चलाने की आदत इतनी बुरी है कि न जाने कितनी बार मैं उसकी चिकोटियां और थप्पड़ों की शिकार बन चुकी हूं।

एक विशेषता है उसमें कि बड़ों के सामने भोला, सीधा-सादा चेहरा बना लेती है। उसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह हंसमुख बहुत है, अतः उसके साथ रहते हुए मैं कभी उदास नहीं रह पाती।

मेरी सहेली 'ख' बेहद गंभीर और अच्छे स्वभाव की है। वह पढ़ाई में तो बहुत अच्छी है ही, साथ ही आर्ट में तो उसका जवाब ही नहीं। खेल में भी सदा उसका नाम रहता है। उसका दिमाग तो इतना तेज है कि वह हर बात बहुत ही जल्दी समझ लेती है। वह न जाने किस मिट्टी की बनी है कि कभी बुरा नहीं मानती।

वह हमेशा अपनी हर चीज बांटकर खाती है और हमेशा हर बात को बहुत बारीकी से ध्यान देकर समझती है।

'ग' सहेली बहुत अच्छी है। उसमें प्यार तो हम सबके लिए बहुत है पर इसके अलावा वह एक तो हमसे हमेशा अपनी पढ़ाई के विषय में छिपाती रहती है, कुछ नहीं बताती। दूसरी बात वो चटोरी बहुत है। चाट खाने की जिद पकड़ लेती है तो जबर्दस्ती सबको खिलाकर ही मानेगी वरना नाराज हो जाती है। तीसरी बात वो हमारी हर नई बात की नकल खुद कर लेगी पर हमें अपनी चीज कभी नहीं बताती। □

■ **छवि शर्मा**
13 वर्ष, फर्रुखाबाद [उ.प्र.]

प्रतियोगिता परिणाम

तीन सहेलियां/ मित्र

मेरी तीन सहेलियां हैं- क-ख-ग। हमारी मित्रता को अभी सिर्फ एक साल हुआ है। हम साथ ही स्कूल जाती हैं। स्कूल में भी साथ-साथ ही खाने की छुट्टी में खाती हैं। हमारी मित्रता की सभी खूब प्रशंसा करते हैं। हमारे बीच आज तक कभी कोई मन मुटाव या लड़ाई नहीं हुई।

मेरी सहेली **'क'** बहुत सीधी सी, प्यारी सी भोली लड़की है। उसका स्वभाव बहुत सरल व मीठा है। उसे कभी किसी भी बात पर गुस्सा नहीं आता। हम उसे बहुत तंग करते हैं पर वो कभी गुस्सा नहीं होती। वो पढ़ने में भी होशियार है। सभी की सहायता भी करती है। पर वह जरूरत से ज्यादा भोली है।

मेरी सहेली **'ख'** बहुत ही गुस्से वाली लड़की है। उसे बात-बात पर गुस्सा आता है। वह बहुत चिल्लाती है। उसके नाखून बहुत बढ़े हुए हैं। वह सबके नाखून चुभोती है। पर इतना सब होते हुए भी वह हमें अच्छी लगती है। क्योंकि ऊपर चाहे वो कैसी भी हो, दिल की बहुत अच्छी है। हमेशा सबकी सहायता करने को तैयार रहती है। उससे किसी का दुःख नहीं देखा जाता। वह पढ़ने में भी होशियार है। गुस्सा करना ही उसकी सबसे बुरी आदत है।

मेरी सहेली **'ग'** अच्छे स्वभाव वाली मजाकिया लड़की है। हंसना और हंसाना यही उसकी मुख्य विशेषता है। वो भी सबकी सहायता करती है। सबके साथ मिलकर रहती है। पढ़ने में भी होशियार है। उसमें यह बहुत अच्छी आदत है कि वो जल्दी ही अपरिचित माहौल में भी घुल मिल जाती है। वह किसी की भी पीछे से बुराई नहीं करती। मजाक ही मजाक में दूसरे को उसकी गलती या बुराइयों को अहसास करा देती है। मुझे उससे कुछ शिकायत नहीं है। उसकी हर आदत मुझे पसंद है।

हम चारों अलग-अलग जाति से हैं। पर यह बात कभी हमारी मित्रता में बाधा नहीं डालती। □

■ **रजनी ब्रिजेश**
15 वर्ष, जयपुर

पिंकी, मीनाक्षी, अंशु

पिंकी कक्षा चार में पढ़ती है। वह पढ़ने में अच्छी है। उसे गाने का शौक है। वह बहुत तेज बोलती है। उसे किसी प्रतियोगिता में भाग लेने का शौक नहीं है। उसका स्वभाव अच्छा है। उसको मिलाकर उसकी पांच बहनें हैं।

मीनाक्षी कक्षा पांच में पढ़ती है। उसके पापा डाक्टर हैं। वह लड़ती बहुत है। उसे हर प्रतियोगिता में भाग लेने का शौक है। उसको मिलाकर उसके तीन भाई हैं। उसका स्वभाव अच्छा है। उसके घर में कुल पांच सदस्य हैं। वह नौ साल की है। वह पढ़ने में अच्छी है। बाहर के लोगों के प्रति उसका स्वभाव अच्छा है।

अंशु कक्षा पांच में पढ़ती है। वह पढ़ने में अच्छी है। उसका स्वभाव अच्छा है। वह लड़ती बहुत है। वह बोलती बहुत है। वह कक्षा में अनुशासन में नहीं रहती। उसको मिलाकर उसकी दो बहनें व एक भाई है। वह स्कूल जल्दी आ जाती है। उसे किसी प्रतियोगिता में भाग लेने का शौक नहीं है। □

■ **प्रियंका,**
9 वर्ष, लखनऊ

शेष पृष्ठ 77 पर

नन्हें मुन्नों के लिए

टमक टूं

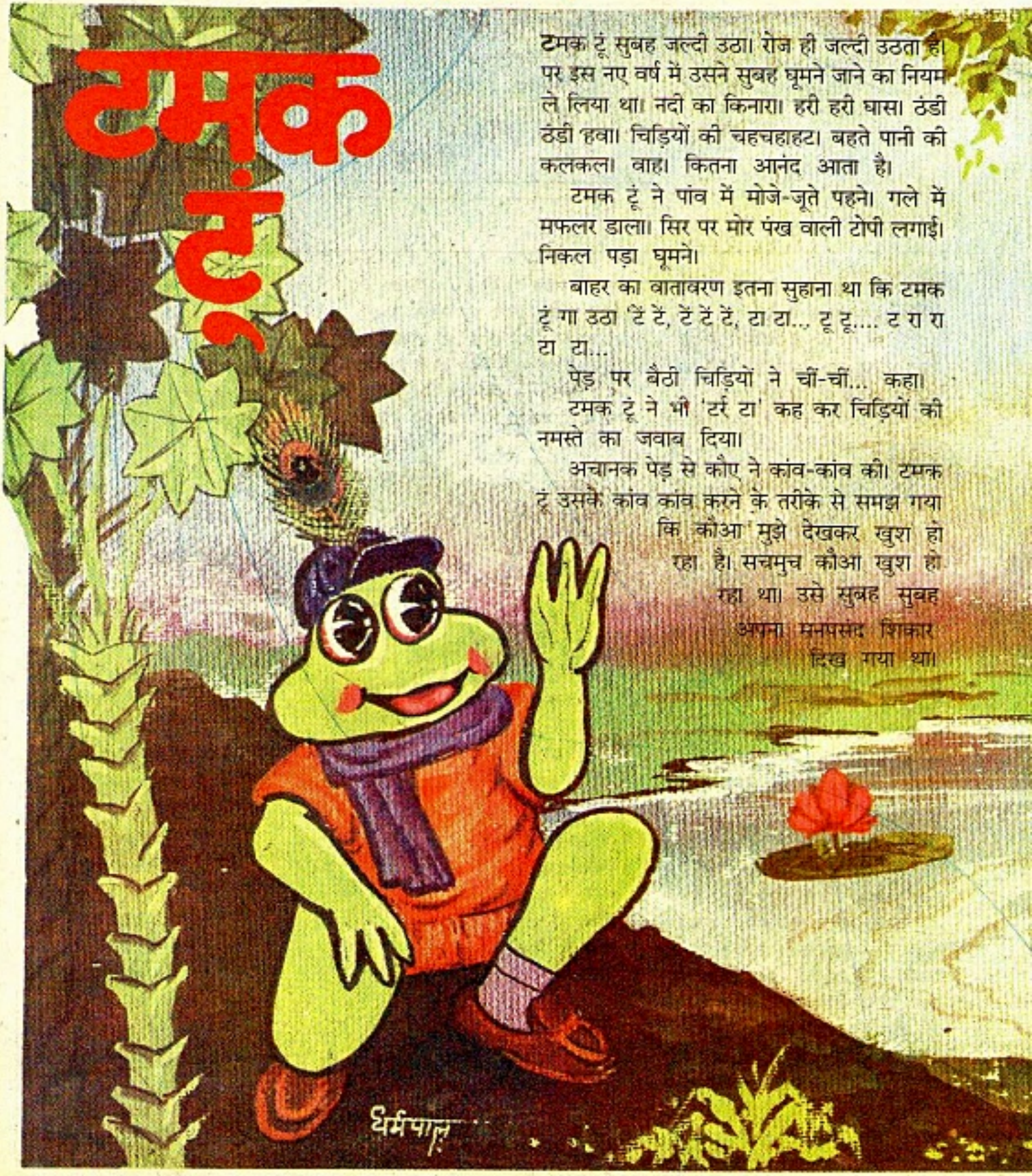

टमक टूं सुबह जल्दी उठा। रोज ही जल्दी उठता है। पर इस नए वर्ष में उसने सुबह घूमने जाने का नियम ले लिया था। नदी का किनारा। हरी हरी घास। ठंडी ठंडी हवा। चिड़ियों की चहचहाहट। बहते पानी की कलकल। वाह। कितना आनंद आता है।

टमक टूं ने पांव में मोजे-जूते पहने। गले में मफलर डाला। सिर पर मोर पंख वाली टोपी लगाई। निकल पड़ा घूमने।

बाहर का वातावरण इतना सुहाना था कि टमक टूं गा उठा 'टें टें, टें टें टें, टा टा.., टू टू.... ट रा रा टा टा...

पेड़ पर बैठी चिड़ियों ने चीं-चीं... कहा।

टमक टूं ने भी 'टर्र टा' कह कर चिड़ियों की नमस्ते का जवाब दिया।

अचानक पेड़ से कौए ने कांव-कांव की। टमक टूं उसके कांव कांव करने के तरीके से समझ गया कि कौआ मुझे देखकर खुश हो रहा है। सचमुच कौआ खुश हो रहा था। उसे सुबह सुबह अपना मनपसंद शिकार दिख गया था।

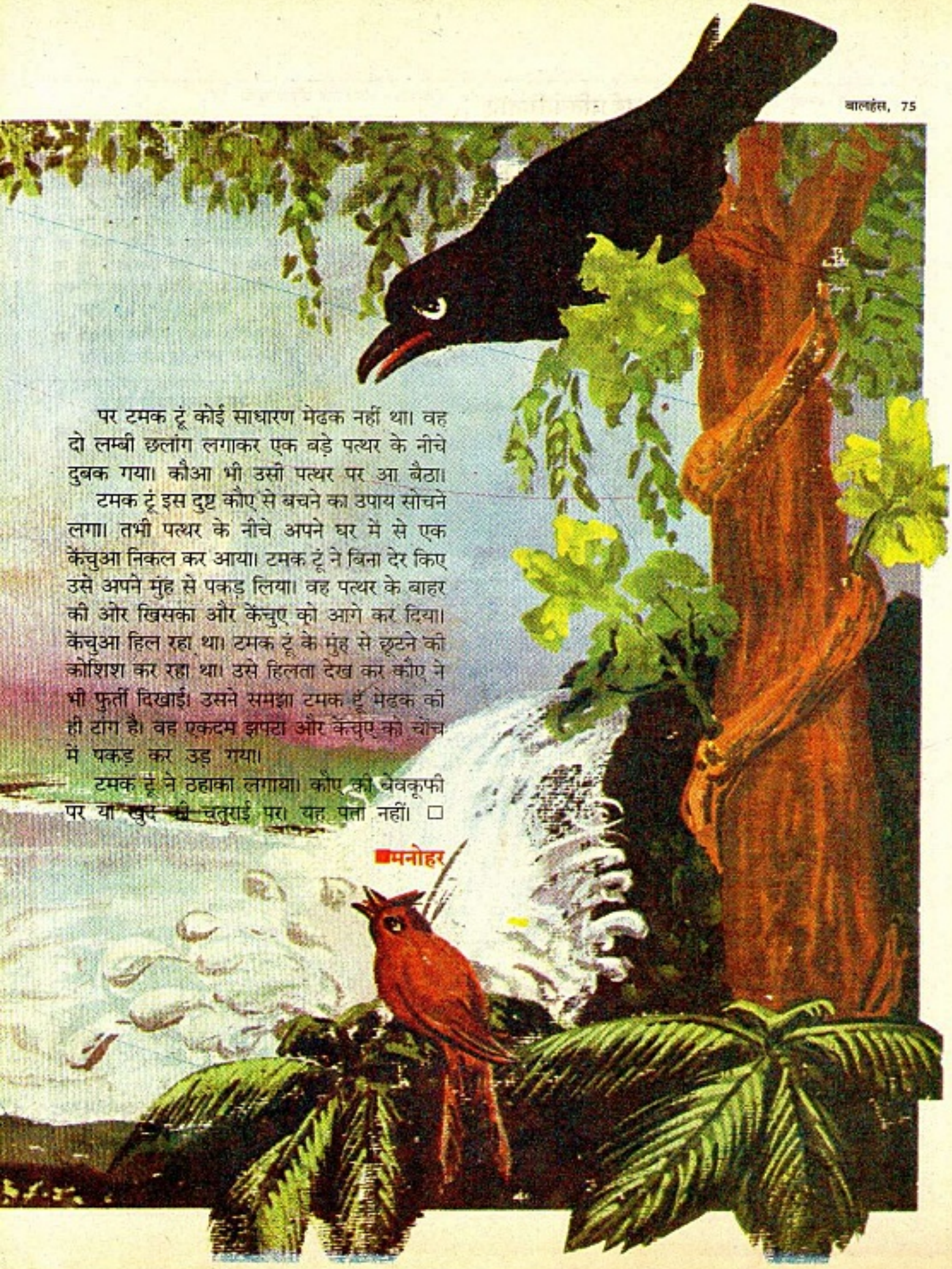

पर टमक टूं कोई साधारण मेढक नहीं था। वह दो लम्बी छलांग लगाकर एक बड़े पत्थर के नीचे दुबक गया। कौआ भी उसी पत्थर पर आ बैठा।

टमक टूं इस दुष्ट कौए से बचने का उपाय सोचने लगा। तभी पत्थर के नीचे अपने घर में से एक केंचुआ निकल कर आया। टमक टूं ने बिना देर किए उसे अपने मुंह से पकड़ लिया। वह पत्थर के बाहर की ओर खिसका और केंचुए को आगे कर दिया। केंचुआ हिल रहा था। टमक टूं के मुंह से छूटने की कोशिश कर रहा था। उसे हिलता देख कर कौए ने भी फुर्ती दिखाई। उसने समझा टमक टूं मेढक की ही टांग है। वह एकदम झपटा और केंचुए को चोंच में पकड़ कर उड़ गया।

टमक टूं ने ठहाका लगाया। कौए की बेवकूफी पर या खुद की चतुराई पर। यह पता नहीं। □

■मनोहर

नई प्रतियोगिताएं

[केवल 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए]

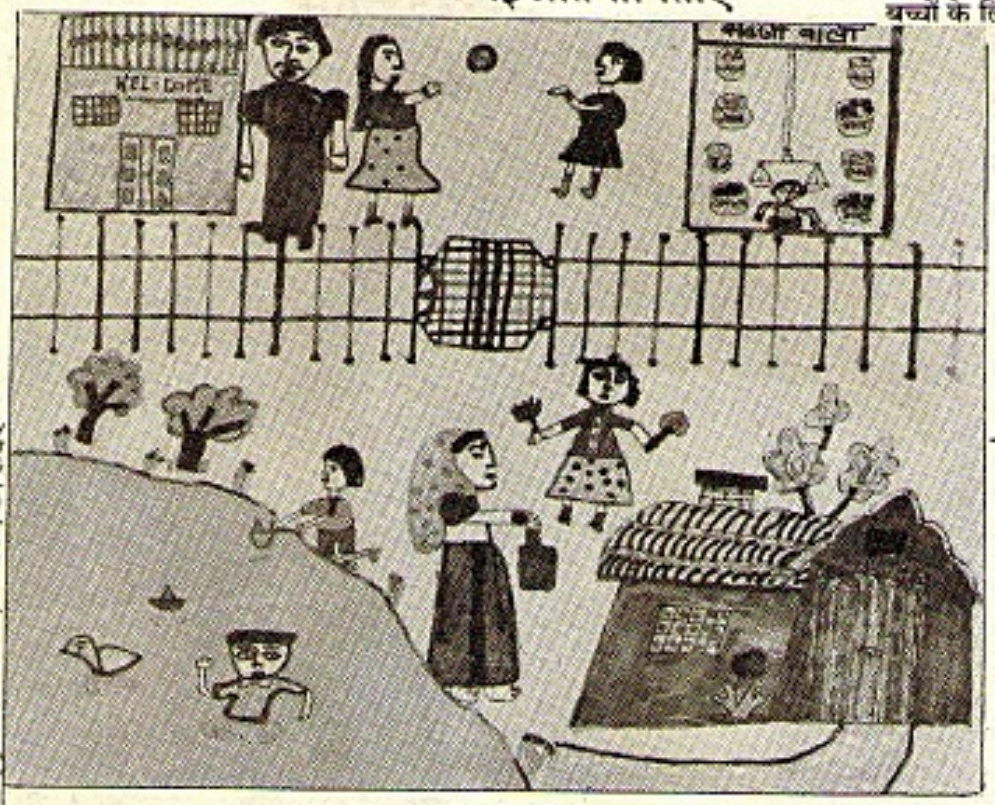

सुनीता मीना, II वर्ष, अलवर

देखा लिखा

इस चित्र को गौर से देखते हुए सोचो। कितनी ही बातें तुम कह सकते हो। तुम जितनी अच्छी तरह से या मजेदार ढंग से लिख सकते हो, लिख डालो। एक फुलस्केप पृष्ठ या तुम्हारी कापी के दो पृष्ठ इतना लिख कर- 30-1-92 तक भेज दो। पांच चयनित लेखों पर 30-30 रुपए पुरस्कार मिलेंगे।

कविता पूरी करो

हम दो पंक्तियां दे रहे हैं। इन्हें सम्मिलित करते हुए अपनी कविता अधिक से अधिक 16 पंक्तियों में लिख डालो। हर पुरस्कृत कविता पर 30 रुपए का पुरस्कार मिलेगा।

उठो, चलो फिर अपने
देश ने पुकारा है।'

30-1-92 तक भेज दो।

किसने क्या कहा-?

चित्र के खाली स्थान पर स्याही से साफ-साफ लिखकर या अलग-अलग कागज पर क्रमानुसार लिखकर इस पूरे पृष्ठ को काटकर हमारे पास दिनांक 30-1-92 तक भेज दो। श्रेष्ठ पांच हलों पर 40-40 रु. के पुरस्कार दिए जाएंगे।

नाम ..... आयु .....

पूरा पता .....

.....

.....

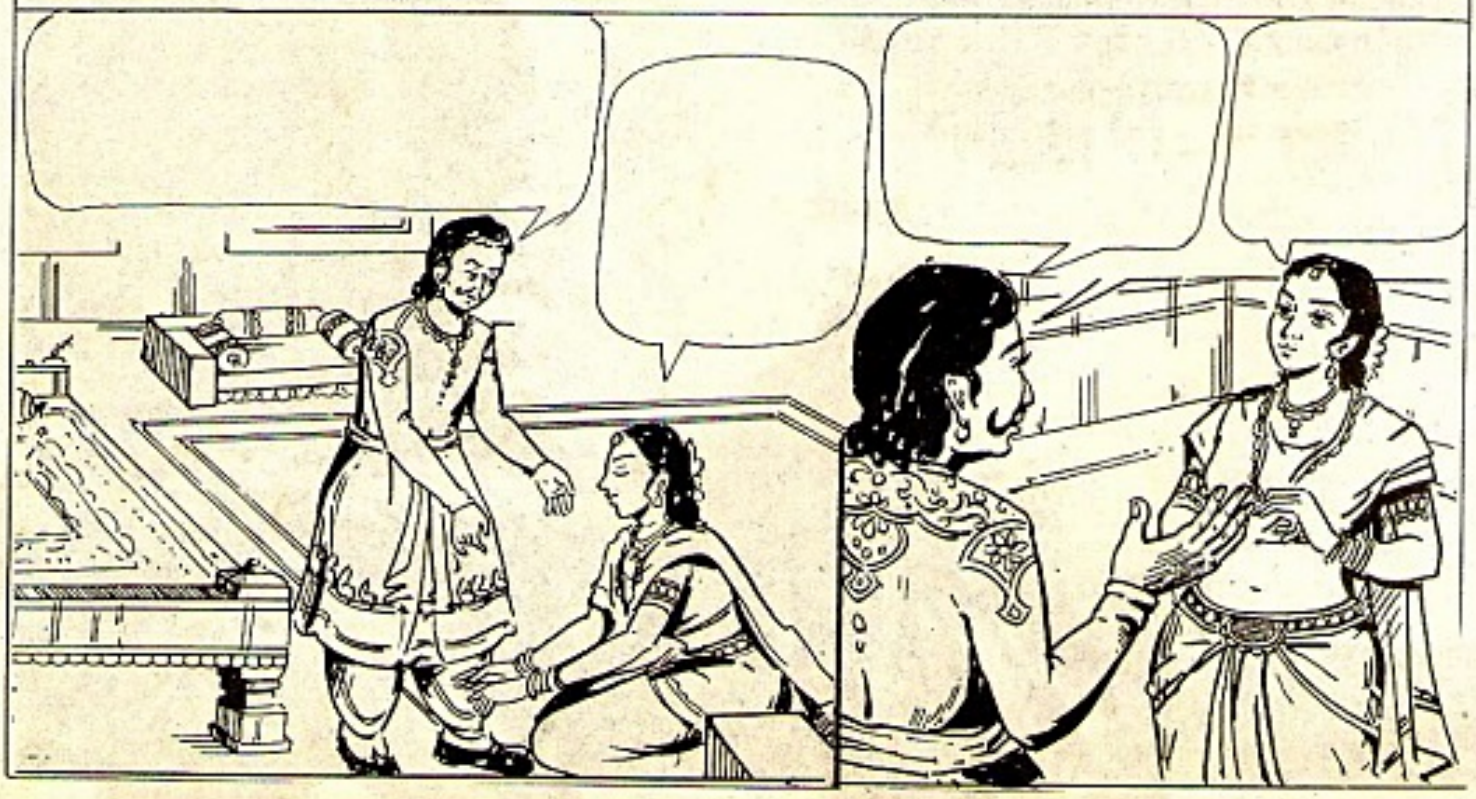

पृष्ठ 39 का शेष

बढ़ा सकते हैं।''

रश्मि इस प्रयोग की कल्पना करते हुए ही पुलकित हो रही थी मानो बोतल में रंग-बिरंगे पानी की एक के ऊपर एक पर्तें उसकी आंखों के सामने साकार हो रही हों।

मम्मी से उसने कहा कि घर में जो भी खाने के रंग हों, उन्हें प्रयोग के लिए जरूर ही दे दें।

अब भी उसे तसल्ली नहीं हो रही थी। पल्लव से उसने कहा, ''भैया, तुम्हें ऐसे मजेदार खेल और भी आते हैं क्या?''

''हां, घर में ही हम एक और इसी से मिलता- जुलता प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन उसके लिए स्पिरिट जरूरी है।''

उससे क्या होगा भैया? और वह या सिर्फ स्पिरिट से ही हो जाएगा?'' रश्मि ने पूछा।

''नहीं, उसके लिए हमें स्पिरिट के अलावा कुछ तेल भी चाहिए। खाने का तेल, जो मम्मी दे देंगी। रंग भी मम्मी दे देंगी। छोटी बोतल भी मिल जाएगी।''

रश्मि तो हमेशा ही हड़बड़ी मचा देती है। पल्लव को स्कूल जाने की तैयारी करनी थी। स्कूल तो रश्मि को भी जाना था। सामने टंगी घड़ी पर नजर डालते हुए पल्लव ने जल्दी- जल्दी बताया, ''आधी बोतल पानी में हम रंग की कुछ बूंद डालकर मिला देंगे। एक चम्मच तेल, हां मम्मी, सिर्फ एक चम्मच तेल का सवाल है, तेरे बच्चे खुश रहेंगे, महंगा तो है तेल मम्मी पर यह बिल्ली नुकसान करवाए बिना मानेगी थोड़े ही।''

मतलब था सो रश्मि ने चुपचाप बिल्ली बनना स्वीकार कर लिया। बस इतना ही बोली, फिर?''

''हम रंगीन पानी पर तेल डालेंगे। तेल पानी से हल्का होता है सो ऊपर ही तैरता रहेगा। उसके बाद हम ड्रापर से धीरे-धीरे स्पिरिट डालना शुरू करेंगे। स्पिरिट पानी से भी हल्का होता है लेकिन पानी में घुल जाता है। यह घोल तेल को हर तरफ से धकेलना शुरू कर देगा। तेल इस घोल से घिरकर ऐसा दिखाई देगा जैसे कोई चमकदार मनका या दाना वहां तैर रहा है।''

पल्लव ने वहां से हटते हटते आगे कहा ''और फिर, और फिर अगर आज तुमने अपनी बस मिस की या मैं समय पर नहीं पहुंच पाता हूं, स्कूल तो फिर बिल्ली है और मैं हूं।'' □

पृष्ठ 73 का शेष

स्नेह, शुभ्रा, श्रीलेखा

मेरी सहेलियां हैं- स्नेह, शुभ्रा और श्रीलेखा। हम चारों बहुत पक्की सहेलियां हैं। हम सब के घर दूर-दूर हैं लेकिन हम एक-दूसरे के घर भी आती-जाती हैं- छुट्टी के दिन।

हम चारों सहेलियों में स्नेह पढ़ने में सबसे तेज है। जब कभी हमें कुछ समझ में नहीं आता, हम उसी से पूछती हैं। स्नेह भी हमें बड़े स्नेह व प्रेम के साथ समझाती है।

दूसरी सहेली है- शुभ्रा। बहुत चुलबुली है। हम सबको हमेशा हंसाती रहती है। कभी चुटकुले सुनाकर तो कभी फिल्मी गीतों की पंक्तियों में हेर-फेर करके। पढ़ाई में सामान्य ही है। मुझे मालूम है कि शुभ्रा यह पढ़कर गुस्सा नहीं होगी क्योंकि वह बहुत साफ दिल की है।

मेरी तीसरी सहेली है- श्रीलेखा। घर बहुत दूर होने के कारण साइकिल से आती है। श्रीलेखा भी पढ़ाई में ठीक है। जब कभी उसे चिढ़ाने का हमारा मूड होता है तो हम उसे 'श्रीदेवी' कहने लगते हैं। बहुत चिढ़ती है वह। कहती है मेरा नाम श्रीलेखा है, मुझे श्रीलेखा ही कहा करो। उसे फिल्में देखना पसंद नहीं है।

मैं अपनी तीनों सहेलियों को बहुत पसंद करती हूं। □

■ सुनैना कालरा
10 वर्ष, कानपुर

हिमांशु, गौरव, अनुराग

मेरे तीन मित्रों में से हिमांशु सबसे अच्छा व पक्का मित्र है। मैंने इसी साल नए स्कूल में दाखिला लिया है और इसी से सब मेरे लिए नए थे। मेरी चित्रकारी के कारण ही गौरव व अनुराग मेरे करीब आ गए।

हिमांशु भी अच्छा चित्रकार है। उसने मुझे पढ़ाई में अच्छे नम्बर लाने व टीचर को खुश रखने के गुर सिखाए।

अनुराग तो पूरा कंजूस है। दिल की बात तो बताता है पर किसी को अपनी चीज दिखाने में झिझकता है। वह मेरे साथ बैठता है पर मेरे साथ सहयोग कम करता है। दिल का नेक व सच्चा है।

गौरव अपने में मस्त रहने वाला बेफिक्र है। कभी भी कुछ मांग लो, मना नहीं करता। दिल की बात दिल में रखता है और अनुराग से मेरा मेल उसे कम पसंद है। वह और मैं आपसी सहयोग से किताबें पढ़ते हैं।

इन तीनों के अलावा तो बस 'नमस्ते' वाले मित्र हैं। □

■ हेमन्त अजमेरा,
15 वर्ष, दिल्ली

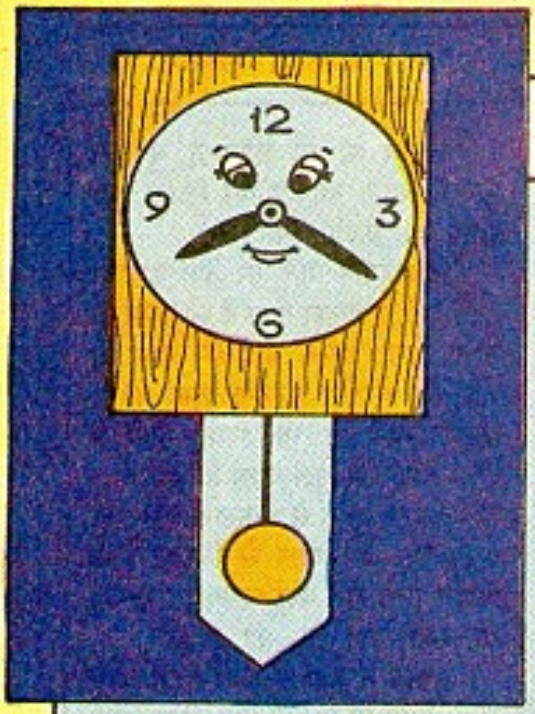

दवाई खाती

बिल्लो नहीं दवाई खाती
कैसे होगी ठीक
सारे दिन आती रहती है
जोर-जोर से छींक

बंदरिया उसको समझाती
डांटा करती है
पर बंदरिया से भी बिल्लो
जरा न डरती है। □

जेल में

कविता लिखी कन्हाई जी ने
लिखा, चलें हम रेल में
आगे लिखा उन्होंने ऐसे
चलें सभी हम खेल में

तब फिर आगे लिखी बात यह
गुण ही गुण है मेल में
और लिखा फिर, ऊंट रोक लो
बांधों उसे नकेल में

खूब सोचकर लिखा, खो गए
काका ठेलमठेल में
पर इसके आगे लिख बैठे
हम जाएंगे जेल में। □

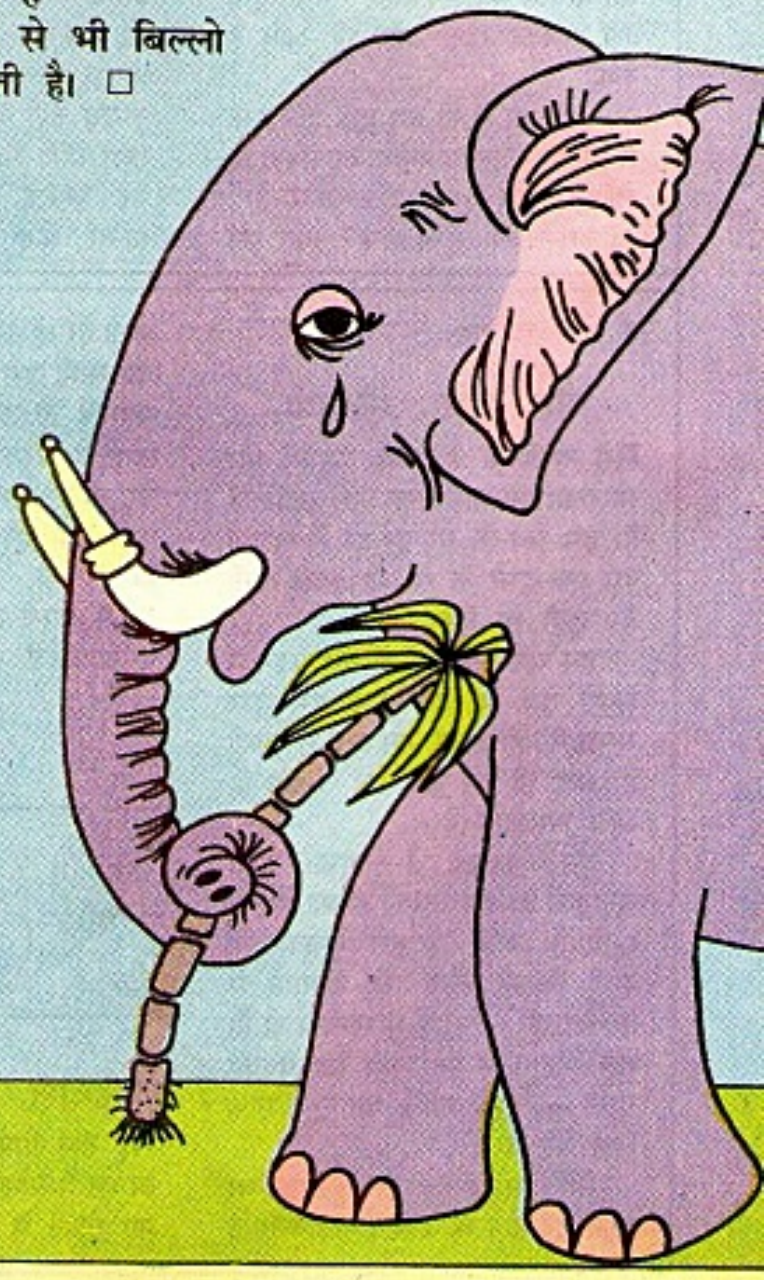

शिशु गीत

तभी उगेगी

बंदर लेकर चला बैल को
उसकी अपनी खेती है
कहीं बड़ी अच्छी मिट्टी है
मगर कहीं पर रेती है

आज करेगा दिनभर मेहनत
दिनभर आज चलेगा हल
अच्छी खेती तभी बनेगी
तभी उगेगी खूब फसल। □

टिकटिक

बिना पांव के यह चलती है
पर रहती है सदा खड़ी
टिकटिक टिकटिक टिकटिक
समय बताती घड़ी घड़ी। □

चमक उठा

चमका एक, अनेक चमकते
चमक उठा आकाश
खूब बड़े से चंदा मामा
चमके सबके पास। □

■ डा. श्रीप्रसाद

हाथी दादा

हाथी दादा चोरी करके
एक खेत से भागे
तीन लोग जो पहरे पर थे
धमधम सुनकर जागे

मार पड़ी हाथी दादा पर
कभी नहीं फिर आए
कभी नहीं फिर मीठे गन्ने
किसी खेत के खाए। □

राजदीप

आती पाती
नवम्बर [द्वितीय]' 91

इस अंक ने तो सचमुच मन मोह लिया। 'जन्म दिवस' के बारे में बहुत सी जानकारियां मिलीं।

सम्पादकीय मुझे बहुत अच्छा लगता है। कहानी 'घाट का पत्थर' अच्छी लगी। सुनार जैसा लोभी कभी नहीं बनना चाहिए वरना कभी लेने के देने पड़ सकते हैं।

— सत्य प्रकाश कुशवाहा, जबलपुर [म.प्र.]

सम्पादकीय हर बार की तरह प्रेरणादायी रहा। कहानियों में 'घाट का पत्थर', 'हाथी से बचा कुंभहार', 'झूठा अभिमान' व 'प्रायश्चित' बहुत पसंद आईं। चित्रकथा 'दूसरा चन्द्रमा' रोमांचक लगी।

— लालचन्द पारीक, फेफाना [राज.]

कहानी 'रीना और मेघा' बहुत अच्छी लगी। 'बिज्जू' और 'कूंकूं' हमेशा की तरह मजेदार थे। कहानी 'घाट का पत्थर', 'हाथी से बचा कुंभहार' बहुत पसंद आईं। 'जन्मदिन' पर सामग्री अच्छी लगी।

— राजीव मनचन्दा, मेरठ, अनिल कुमार, ढीढस- बाड़मेर

सम्पादकीय ने हमें 'जन्मदिन' के बारे में जो बातें बताईं, वे सदा याद रहेंगी। सचमुच जन्मदिन एक महत्त्वपूर्ण दिन होता है और जन्मदिन किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का हो तो उसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। इस अंक की सभी कहानियां पसंद आईं। कहानी 'घाट का पत्थर' बहुत ही अच्छी लगी। कहानियां 'सुनहरी घड़ी', 'रीना और मेघा', 'मुनमुन की सोच', 'जब राजकुमारी उड़ने लगी' व 'जन्मदिन की मिठास' बेहद पसंद आईं। 'ठोलाराम' को न पाकर दुःख हुआ।

— विनीत गाबा, नई दिल्ली

पुरस्कृत

मैं शारीरिक रूप से दाएं पांव से विकलांग हूं। बेंत के सहारे के बिना चल नहीं सकता। छः माह की आयु में पोलियो का शिकार हो गया था जिससे मेरे दोनों पांव बेकार हो गए थे। परन्तु लम्बे समय के इलाज के बाद मेरा बायां पांव ही ठीक हो पाया।

मैं अपनी इस अपंगता के कारण कतई दुःखी नहीं हूं। मुझमें आत्म-विश्वास है। मैंने कभी इस बात की चिन्ता नहीं कि लोग मुझे देखकर क्या सोचते होंगे।

मुझे मेरी पढ़ाई, मेरी मेहनत पर पूरा भरोसा है कि एक दिन मैं अवश्य ही एक कुशल इंजीनियर बनकर देश की सेवा करूंगा।

मैंने प्रत्येक कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है। मिडिल कक्षा तक की पढ़ाई गांव में ही की। आगे की शिक्षा पास के कस्बे से गणित ऐच्छिक विषय में की है। फिर मैंने पॉलिटेक्नीक महाविद्यालय की इलेक्ट्रोनिक्स शाखा में प्रवेश लिया।

मेरे महाविद्यालय में सभी लोग मेरी सहायता करते हैं। मुझे स्नेह देते हैं।

— जगदीश कुमार, नारलाई- पाली

जन्मदिन मनाने की महत्त्वपूर्ण जानकारी इस अंक में प्राप्त हुई। सम्पादकीय हर बार की तरह इस बार भी प्रेरणादायी लगा। कहानियों में 'घाट का पत्थर', 'रीना और मेघा', 'प्रायश्चित', 'दोस्ती पर नाज' विशेष अच्छी लगीं। चित्रकथा 'मिनी' और 'कूंकूं' अच्छी थीं।

— मनहर गोपाल, नवादा [बिहार]

जन्मदिन पर सम्पादकीय पसंद आया। कविताएं बेहद अच्छी लगीं। कहानियों में 'घाट का पत्थर', 'झूठा अभिमान', 'प्रायश्चित' व 'मुनमुन की सोच' विशेष पसंद आईं। 'डाक टिकटों पर तुम्हारी चित्रकला' लेख अच्छा लगा। सभी चित्रकथाएं पसंद आईं।

— विजय कुमार विश्वकर्मा, शहडोल [म.प्र.]

लेख 'स्वयं करें जन्मदिन की तैयारी', 'जन्मदिन, बच्चे और माता-पिता' विशेष पसन्द आए। 'उपहार- गीत' बहुत अच्छे लगे। कहानियां सभी पसंद आईं। 'जलाएं हम अन्तर के दीप' रचना प्रशंसनीय रही।

— प्रभुदयाल, रमेश आर्य, जसाना [राज.]

'जन्मदिन' मनाने का देशी- विदेशी तरीका, 'स्वयं करें जन्मदिन की तैयारी', 'जन्मदिन पार्टी के शिष्टाचार' आदि लेख विशेष पसंद आए। अन्य सभी रचनाएं भी अच्छी लगीं।

— रंजना कमल, नैनी- इलाहाबाद [उ.प्र.]

पृष्ठ 35 का शेष

मूसलाधार वर्षा हुई। तब मेरा घर इस गांव से थोड़ा दूर था। वहीं पास में मेरा खरबूजों का बाग भी था। उस दिन नदी में बाढ़ आई तब मैं अपने घर में ही था।

अचानक बाहर शोरगुल सुनकर मैं चौंक पड़ा। बाहर आकर देखा तो पूरे गांव के लोग भागते हुए चले आ रहे थे। एक आदमी से पूछने पर वह बोला, कि गांव में बाढ़ आ गई है, सबके घर डूब गए हैं। उसने मुझे भी भागने को कहा। मैंने कहा, 'तुम घबराओ मत, यह छगन चाचा का मकान है। मैंने उसे सब गांव वालों को बुला लाने को कहा। फिर मैं तुरन्त अपने बाग में गया और वहां से दो बड़े खरबूजे ले आया और उन्हें अपने घर की छत पर रख दिया।

'फिर क्या हुआ चाचा?' एक बच्चे ने पूछा।

छगन चाचा ने पीकदान में थूका और फिर बोले, 'अरे, होना क्या था। हमने सब गांव वालों को बुलाया। एक खरबूजे में सारे पुरुषों को बैठने को कहा तथा दूसरे में सभी औरतों व बच्चों को बैठने को कहा।

तभी एक बच्चे ने, तनिक शैतानी के लहजे में पूछा, 'और आप कहां रहे?' छगन चाचा बोले, 'हम तो वहीं अपना लट्ठ लेकर लगे पहरेदारी करने। एक हफ्ते बाद कहीं जाकर बाढ़ का पानी उतरा तो हमने सब गांव वालों को निकलने को कहा। वे भीतर बैठे-बैठे खरबूजे का सारा गूदा खा गए थे।

गांव वालों ने मुझे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और मुझे अपने साथ ले गए। गांव के बीचोंबीच गांव वालों ने मेरे लिए मकान बनवा दिया। □

■ दीपाली फान्से

पृष्ठ 37 का शेष हारू मामा...

मामा चौंक उठे। उन्होंने कहा- "कौन कहता है? तुम जैसा पैक करके देते हो, वैसा ही ले जाकर मिण्टू को दे देता हूं। अगर तुम लोग कम भेजते हो तो मैं क्या करूं?"

नन्हें ने कहा- "ठीक है, अब हम गिनकर भेजा करेंगे।"

इस घटना के बाद हम कुल 12 पेड़े तो कभी 11 पेड़े गिनकर पैकेट में पुर्जी रखने लगे। कुछ दिनों तक मिण्टू भाई की कोई शिकायत नहीं आई। अचानक एक दिन पत्र आया कि आजकल पहले जैसे पेड़े नहीं आ रहे हैं। काफी पतले आ रहे हैं। क्या जलपान वाले पतले पेड़े बनाने लगे हैं?"

दूसरे दिन पेड़ा खरीदकर हम लाए और देखा कि पेड़े पहले की तरह है, फिर क्या सूख जाते हैं? ठीक इन्हीं दिनों भाई साहब छुट्टी पर आए। साथ में एक पेड़ा लेकर आए थे। हमने उस पेड़े के साथ अपने पेड़ों को मिलाया तो देखा काफी पतला है। समझते देर नहीं लगी कि मामाजी पहले की तरह कुछ पेड़े खाकर प्रति पेड़े को दो पेड़ा बनाते हैं।

उसी दिन स्टेशन पर मामाजी से पूछा- "क्यों मामा, जब हम गिनकर पेड़ा भेजने लगे तब एक पेड़े को दो पेड़ा बनाकर बाकी चट करने लगे।"

मामा ने कहा- "नहीं बेटे, जब तुम लोग गिनकर पेड़े भेजने लगे और साथ में गिनती के पुर्जे रखने लगे तब मैंने कलबल करना शुरू किया। प्रत्येक पेड़े को चाकू से छील देता था। गिनती में पेड़े पूरे रहते थे और जो चूर बचते थे, उसे हम लोग खा लेते थे। एक से दो बनाने में छोटा-बड़ा हो जाता।"

इतना कहकर वे हंसने लगे। हारू के इस तिकड़म को सुनकर हम दंग रह गए। इतना श्रम तो हम कर ही नहीं सकते थे। ऐसे थे- हमारे हारू मामा। आगे से हारू मामा ने कोई हरकत नहीं की। □

पृष्ठ 71 का शेष मौका मिलेतो...

आज हमारे देश में प्रदूषण की बड़ी समस्या है। प्रदूषण की वजह से बड़े शहरों में तो लोगों का सांस लेना भी मुश्किल हो गया है।

मुझ जैसे छोटे बच्चों को जिनमें रोगों से लड़ने की शक्ति कम है, वे तो यहां जी भी नहीं सकते। इस कारण मुझे अपने स्वास्थ्य और पढ़ाई के लिए डॉक्टर की सलाह से मम्मी के साथ तीन साल से राजस्थान में अकेले रहना पड़ रहा है।

इसलिए पढ़-लिखकर बड़ा होने पर यदि मुझे मौका मिला तो मैं सर्वप्रथम देश में फैला प्रदूषण हटाने की पूरी कोशिश करूंगा।

गौरव बिनानी,
8 वर्ष, बीकानेर

तोते बेचने वाला- तोते ले लो, अपनी पसंद के तोते ले लो।

एक खरीददार- हमें कैसे पता चलेगा कि कौन सा तोता बूढ़ा व कौन सा जवान है?

तोते बेचने वाला- जो तोता बूढ़ा है, वह तो बोलता है- सीताराम... सीताराम। तथा जो तोता जवान है, वह बोलता है जीनत अमान... जीनत अमान...।

—महेश सोनी, आबू रोड

मोटू हाथी और कछुआ

■ पिन्टू भंडारी

मोटू हाथी जहां भी जाता किसी न किसी से लड़ाई मोल लेता। वह यह भी नहीं देखता कि सामने वाला उससे उम्र में बड़ा है या छोटा। बस, अपनी हेकड़ी में रहता। सभी उसकी इस आदत से तंग आ गए थे। अब तो यह होता कि मोटू हाथी ताव खाए सामने वाले पर चढ़े जा रहे हैं और सामने वाला वहां से चुपचाप खिसक लेता। कौन बेबात की लड़ाई में अपना समय खराब करे। सामने वाले को चुपचाप खिसकता देख मोटू हाथी खुशी से फूले न समाते।

लेकिन एक बार उन्हें हार खानी पड़ी और वो भी लट्टू कछुए से। हुआ यूं कि मोटू हाथी अपनी मस्त चाल में चले जा रहे थे। थोड़ी ही देर पहले उन्होंने ढेर सारे गन्ने चबाए थे सो मीठी-मीठी धुन भी गुनगुना रहे थे। अचानक सामने से अपनी धीमी चाल में सरकता हुआ लट्टू कछुआ आता दिखाई दिया। साथ में थी उसकी बीमार पत्नी। डाक्टर के पास जा रहे थे दोनों।

मोटू हाथी मस्ती में थे सो अपने अगले दाएं पैर से जोर से धूल उछाली। अब मोटू हाथी में अक्ल होती तो यह हरकत वो कभी न करता। बेचारी बीमार कछुआनी लगी खांसने। लट्टू कछुए को आया गुस्सा। उसने अपने खोल में से गर्दन निकाल कर पूरी ताकत से चिल्ला कर कहा- 'ऐ मोटू हाथी, देखता नहीं, मैं अपनी बीमार बीवी को डाक्टर के पास ले जा रहा हूं। ऊपर से तूने धूल उड़ा कर उसे खांसी करा दी। शर्म नहीं आती तुम्हें।'

'अरे जा... जा। अपना रास्ता नाप। ज्यादा चिल्ल-पौं करेगा तो अभी हवा में उछालता हूं तुझे। फिर दिखा देना

→

Sagar Rana & Shiv's Scan

www.sscomicsheaven.blogspot.in

दोनों एक साथ डाक्टर को।' – कहते हुए मोटू हाथी अपने लम्बे-लम्बे दांतों से लट्टू को डराने लगा। अब तो लट्टू कछुए को और भी गुस्सा आ गया। उसने उछल कर मोटू हाथी का एक दांत पकड़ लिया। लगा झूलने। मोटू हाथी उसे गिराने के लिए जोर से घूमा, पर लट्टू ने तो दांत को जोर से पकड़े रखा। मोटू हाथी का गुस्सा सातवें आसमान को छूने लगा। एक अदना-सा जानवर उसके खूबसूरत लम्बे-लम्बे दांतों में झूले। मजाल है जो एक भी मच्छर या मक्खी उसके इन दांतों पर भूल से भी बैठे। छी... छी... अब उसके साथी एक गंदे कछुए को उसके खूबसूरत दांत में झूला झूलते देखेंगे तो कितनी भद्द उड़ेगी। क्या करूं... कैसे इससे पीछा छुड़ाऊं। क्या इससे माफी मांगू। नहीं... नहीं, माफी तो हरगिज नहीं। तभी उसके दिमाग में एक तरकीब आई और उसी के जोश में आकर मोटू हाथी ने जोर से अपना सिर जमीन पर मारा। जब लट्टू को चोट लगेगी तो मारे दर्द के अपने आप ही मेरा दांत छोड़ देगा। पर हुआ यह कि पहले जमीन पर सूंड लगी, फिर लम्बे-लम्बे दांतों ने जमीन को छुआ। साथ ही आवाज हुई तड़ाक...। जमीन पर दांत जोर से टकराए और आधे टूट कर जमीन पर जा गिरे। लट्टू कछुए ने

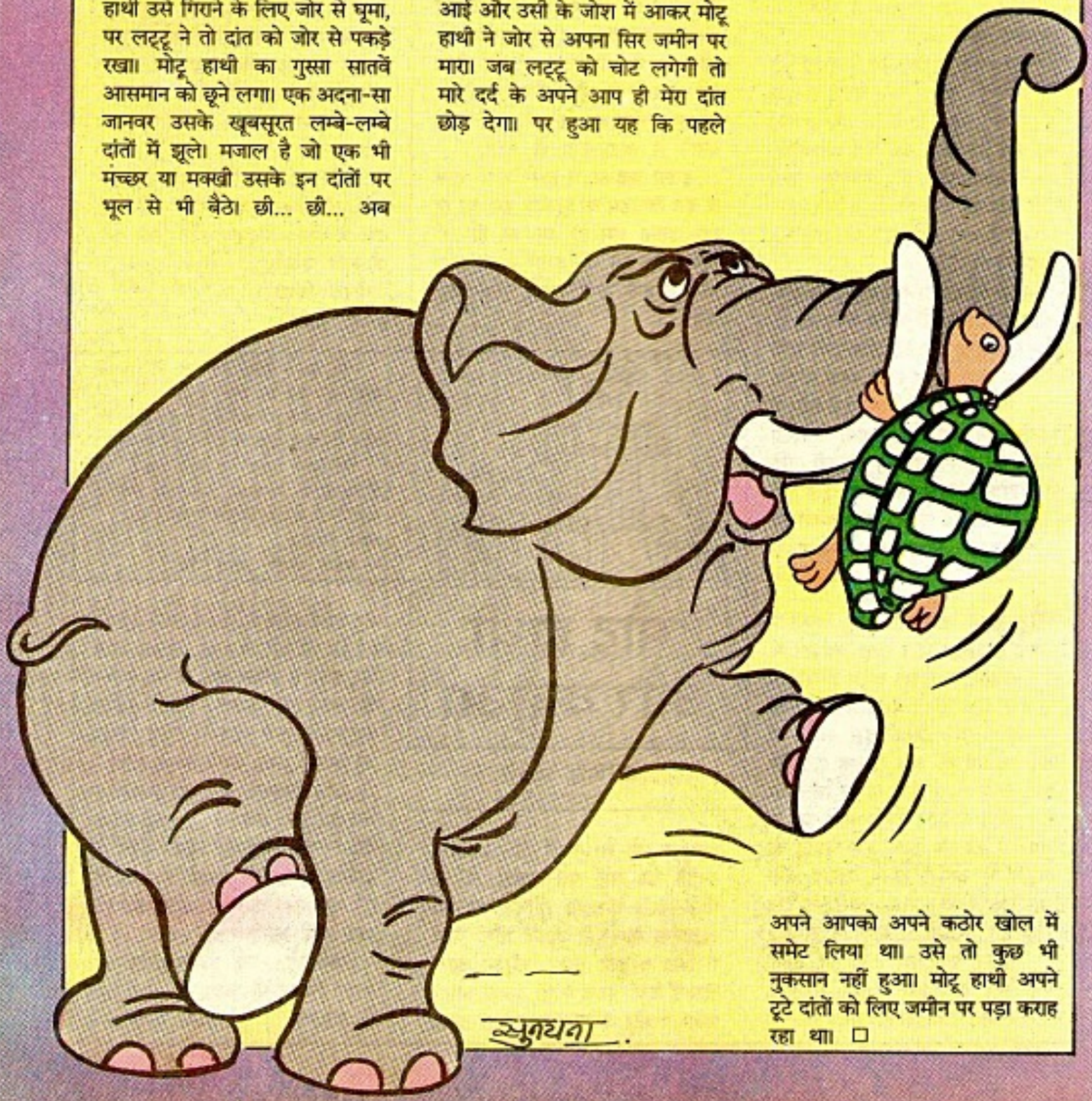

अपने आपको अपने कठोर खोल में समेट लिया था। उसे तो कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। मोटू हाथी अपने टूटे दांतों को लिए जमीन पर पड़ा कराह रहा था। □

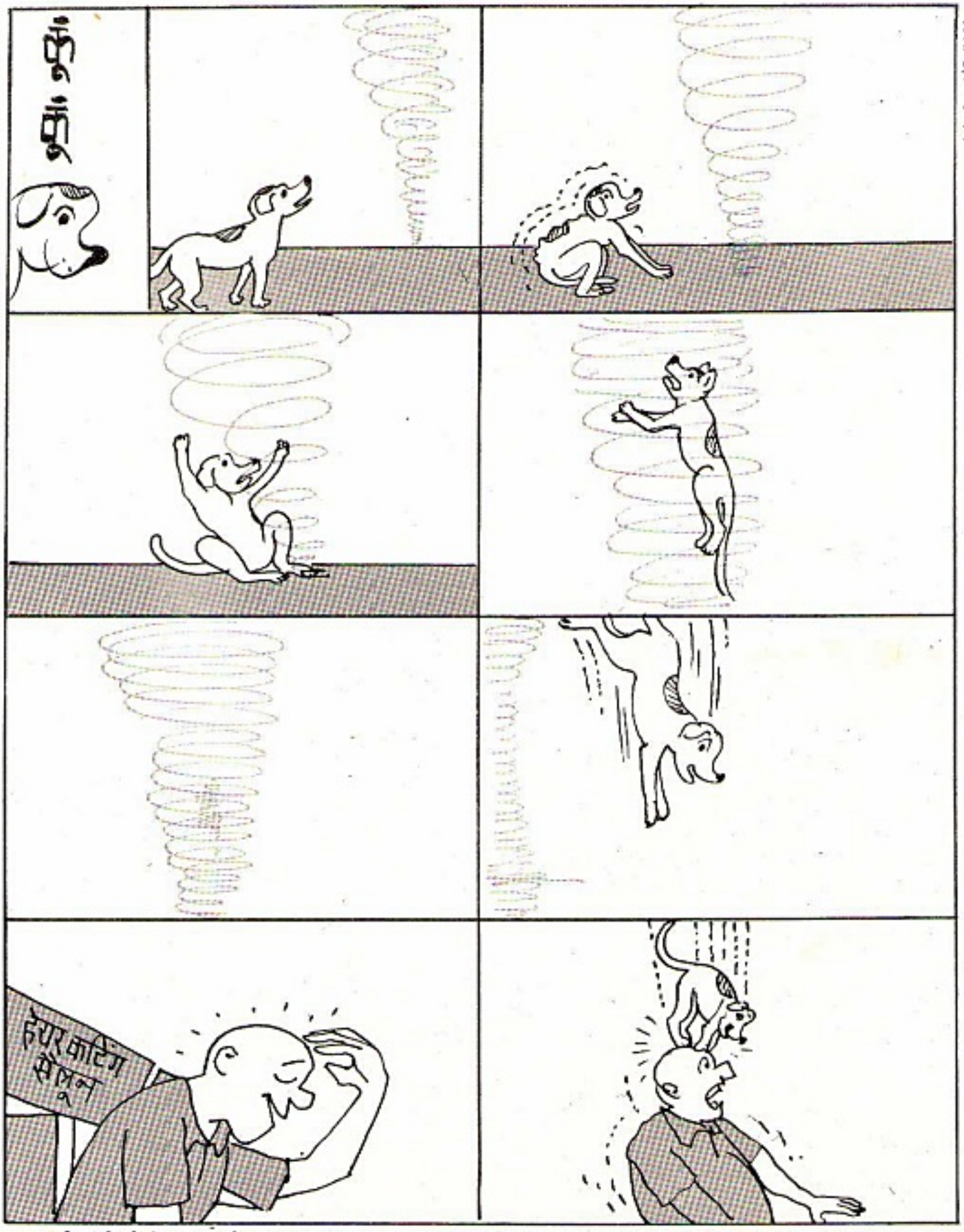

राजस्थान पत्रिका, लि. के लिए मिलाप कोठारी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित- राजस्थान पत्रिका प्रेस, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, गुलाब बाग, वि.इ. रोड, जयपुर [राज.]

BALHANS January (I) 92 Regd. No. R.J. 2688/86

▲ विक्रम सिंह भण्डारी, देहरादून